



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—Sub-section (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 306]

नई दिल्ली, बुधवार, मई 27, 2009/ज्येष्ठ 6, 1931

No. 306]

NEW DELHI, WEDNESDAY, MAY 27, 2009/JYAISTHA 6, 1931

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

(रक्षोपाय, सीमाशुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 मई, 2009

सा.का.नि. 361(अ).—सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 एवं उसके तहत बनाए गए सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं आकलन) नियम, 1997 को ध्यान में रखते हुए;

क. प्रक्रिया

1. आंध्र प्रदेश पेट्रो रसायन लि. द्वारा सीमाशुल्क टैरिफ [रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं आकलन] नियमावली, 1997 [जिसे एतदपश्चात् "रक्षोपाय नियम" कहा गया है] के नियम 5 के अंतर्गत एक आवेदन प्रस्तुत किया गया है जिसमें यह आरोप लगाते हुए कि ऑक्सो अल्कोहल्स (एसाइक्लिक अल्कोहल्स) के बढ़े हुए आयातों से भारत में ऑक्सो अल्कोहल (एसाइक्लिक अल्कोहल्स) के घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति हो रही है/होने का खतरा है, भारत में ऑक्सो अल्कोहल (एसाइक्लिक अल्कोहल्स) के आयातों पर रक्षोपाय शुल्क लगाने की मांग की गई है। इस बात से संतुष्ट होने पर कि नियम 5 के अंतर्गत अपेक्षाओं को पूरा कर लिया गया है, दिनांक 16 जनवरी, 2009 की जाँच शुरुआत संबंधी अधिसूचना जो उसी दिन भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई थी, के जरिए ऑक्सो अल्कोहल (एसाइक्लिक अल्कोहल्स) के आयातों के संबंध में रक्षोपाय जाँच शुरू की गई थी।

2. सूचना की प्रति प्रमुख निर्यातक देशों की सरकारों को नई दिल्ली स्थित उनके दूतावासों के माध्यम से भिजवाई गई थी। जाँच शुरुआत संबंधी सूचना की एक प्रति नीचे सूचीबद्ध सभी ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को भी भेजी गई थी :—

घरेलू उत्पादक

द आंध्र पेट्रोकेमिकल्स लि.

202-ए, माई होम सरोवर प्लाजा,

सचिवालय रोड, सैफाबाद,

हैदराबाद-500063

आयातक

मै० के एल जे प्लास्टिसाइजर्स/सिल्वसा प्लास्ट के एल जे हाउस, 63, राम मार्ग नजफगढ़ रोड नई दिल्ली- 110 015	मै० पी सी एल ऑयल एंड सॉल्वेंट्स लि० एम-105, कनॉट प्लेस नई दिल्ली - 110 001
मै० पायल पॉलीमर्स 24/ई, नेताजी सुभाषी मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली- 110 002	मै० ए पी आई इंडस्ट्रियल कॉरपोरेशन टॉल्स्टॉय लेन, पहली मंजिल कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110 001
मै० रचना प्लास्टिसाइजर्स प्लॉट सं० 143, शांति निकेतन तीसरी मंजिल, एस वी रोड खार पुलिस स्टेशन के सामने खार (पश्चिम), मुम्बई - 400 052	मै० ललिता केम इंडस्ट्रीज प्रा० लि० जी-42, डी विंग, दीवान अपार्ट सं० II को ओप. हाउसिंग सोसाइटी लि० वसई (पूर्व) जिला थाणे - 401 210
मै० कंसाई नेरोलैक पेंट्स लि० नेरोलैक हाउस गनपैट्टाओ कदम मार्ग लोअर परेल, मुम्बई - 400 013	मै० अरबिंदो फार्मा लि० प्लॉट सं० 2, मैत्री विहार, अमीरपेट हैदराबाद
मै. लुब्रिजोल इंडिया प्रा० लि० 9/3, थाणे, बेलपुर रोड तुर्मे, नवी मुम्बई- 400 705	मै० अल्काइल एमीन्स केमिकल्स लि० 401-407, निर्माण व्यापार केन्द्र प्लॉट सं० 10, सेक्टर 17, वाशी नवी मुम्बई - 400 703
सी जे शाह एंड कंपनी (आयातक एवं वितरक) 809, हेमकूट, कैपिटल कॉमर्शियल सेंटर के सामने, आश्रम रोड, अहमदाबाद - 380 009	रमनीकलाल एस गोसालिया एंड कंपनी नेशनल हाउस 608, बी जे मार्ग, जैकब सर्कल मुम्बई - 400 011

प्रयोगकर्ता

मै० के एल जे प्लास्टिसाइजर्स/सिल्वसा प्लास्ट के एल जे हाउस, 63, राम मार्ग नजफगढ़ रोड नई दिल्ली- 110 015	मै० पी सी एल ऑयल एंड सॉल्वेंट्स लि०/रिटजी पॉलीमर्स एम-105, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली - 110 001
--	--

मै० प्रायल पॉलीमर्स 24/ई नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली- 110 002	मै० एन के पॉलीमर्स टॉल्स्टॉय लेन, पहली मंजिल कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110 001
मै० रचना प्लास्टिसाइजर्स प्लाट सं० 143, शांति निकेतन तीसरी मंजिल, एस वी रोड खार पुलिस स्टेशन के सामने खार (पश्चिम), मुम्बई - 400 052	मै० ललिता केम इंडस्ट्रीज प्रा० लि० जी-42, डी विंग, दीवान अपार्ट सं० II को. ओप. हाउसिंग सोसाइटी लि० वसई (पूर्व,) जिला थाणे - 401 210
मै० नागार्जुन एग्रीकेम लि० प्लाट सं० 61, नागार्जुन हिल्स, पंजागट्टा हैदराबाद - 500 082	मै० श्रीपति फार्मास्युटिकल्स प्लाट सं० 22 बी, एच नं० 8-2- 293/82/ए/22/बी रोड सं० 2, जुबली हिल्स हैदराबाद - 500 033
मै० श्री कृष्णा ड्रग्स सी-4, इंडस्ट्रियल एरिया, उप्पल हैदराबाद	मै० श्रीनिवास फार्मा (पी) लि० प्लाट सं० 66/बी-2, फेज I आई डी ए, जीडीमेटला हैदराबाद - 500 055
डा० रेड्डी लेबोरेटरीज लि० 8-2-76/1/बी, दूसरी मंजिल, अशोक हाइटेक रोड सं० 2, बंजारा हिल्स, हैदराबाद - 500 034	मै. धुपर केमिकल्स प्रा० लि० गांव - सैन्डिला, मंढाना बिठूर रोड, कानपुर (उत्तर प्रदेश)
मै० बर्जर बेकर कोटिंग प्रा० लि० आर पी एल हाउस, 19, डी डी ए कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, कैलाश कोलोनी एक्सटेंशन, नई दिल्ली - 110 048	मै० मैट्रिक्स लेबोरेटरीज लि० सं० 1-1-151/1, चतुर्थ मंजिल, साईराम टावर्स एलेक्जेंडर रोड सिकन्दराबाद रोड, सिकन्दराबाद- 500 003
मै० मर्क लि० शिव सागर एस्टेट 'ए' डा. ए बी रोड, वर्ली मुम्बई - 400 018	मै० नीलम एक्वा एंड स्पेशलिटी केम प्रा० एच-337 (डी) स्ट्रीट # 17, वी के आई एरिया, जयपुर - 302013 (राजस्थान)
मै० दिवीज लेबोरेटरीज लि० दिवी टावर्स, 7-1-77/ई/1/303 धरम करम रोड, अमीरपेट हैदराबाद - 500 016	मै० हैदराबाद केमिकल्स लि० ए-24/25, ए पी आई ई, बालानगर हैदराबाद - 500 037
मै० अरबिंदो फार्मा लि० प्लाट सं० 2, मैत्री विहार, अमीरपेट हैदराबाद- 500 038	मै० महिन्द्रा केमिकल्स जी-4, साई पीताम्बरम रेजीडेंसी पूर्वी मैरेडपल्ली, सिकन्दराबाद - 500 026
मै. विविमेद लैब्स लिमिटेड दूसरी मंजिल, विरांग टावर्स	गवर्नमेंट ऑफ ओपियम एंड एल्कलॉयड वर्क्स वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग

हब्सीगुडा, हैदराबाद - 500 007	महाप्रबंधक गवर्नमेंट ऑफ ओपियम एंड एल्कलॉयड वर्क्स का कार्यालय, नीमच - 458 441 (मध्य प्रदेश)
हेवी वाटर प्लांट परमाणु उर्जा विभाग पी ओ विक्रमपुर, जिला अंगुल उड़ीसा- 759 106	मै० कंसाई नेरोलैक पेंट्स लि० नेरोलैक हाउस गनपैट्राओ कदम मार्ग लोअर परेल, मुम्बई - 400 013
मै० अल्काइल एमीन्स केमिकल्स लि० 401-407, निर्माण व्यापार केन्द्र प्लाट सं० 10, सेक्टर 17, वाशी नवी मुम्बई - 400 703	एलैंटास बेक इंडिया लि० बेक हाउस, डैम्पल पाथ लॉ कॉलेज रोड के सामने पुणे- 411004
डाइची करकरिया लि० लिबर्टी बिल्डिंग, सर विठ्ठलदास ठाकरसे मार्ग थाकरसे मार्ग मुम्बई- 400020	गैलेक्सी सरफैक्टेंट्स लि० सी-49/2, टी टी सी इंडस्ट्रियल एरिया पावने, नवी मुंबई-400703
फाइन ऑर्गेनिक इंड. (मुंबई) प्रा० लि० फाइन आर्गेनिक इंडस्ट्रीज फाइन हाउस, आनंदजी स्ट्रीट एम जी रोड के सामने, घाटकोपर (पूर्व) मुंबई- 400077, भारत	मै० अतुल लिमिटेड अतुल, 396020, गुजरात, भारत

निर्वातक

एल जी केमिकल्स लि० स्पेशियलिटी सेल्स टी एफ टी, टीचर्स पेंशन, बिल्डिंग, 17, एफ, योईडोडांग, योंगडुन्गपु-गु सिओल - 150 742. कोरिया	मै० अर्क पेट्रोकेमिकल कंपनी सं० 767, एंगहैलेब एव, तेहरान, ईरान
मै० अल-जुबैल फर्टिलाइजर्स कंपनी जुबैल इंडस्ट्रियल सिटी पी ओ बॉक्स 10046, अल जुबैल - 31961 सऊदी अरब	मै० ईरान पेट्रोकेमिकल्स कमर्शियल कंपनी पता: सं०.1339 वनक स्क्वेयर वाली ए एस आर एव तेहरान-ईरान, पी ओ बॉक्स: 19395/4619, जिपकोड : 19697
मै० सऊदी बेसिक इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन(एस ए बी आई सी) पी ओ बॉक्स 69090, रियाध सऊदी अरब	मै० डो यूरोप जी एम बी एच पी ओ बॉक्स 16043 दुबई, यू ए ई

मै0 हल्स अक्तीएनगेसेलचैफ्ट वाइसफ्राइडएन स्ट्रास 9, डी-60311 फ्रैंकफर्ट एम मेन, जर्मनी	मै0 बी ए एस एफ पेट्रोनास केमिकल्स सी-802, सेन्ट्रा टावर विस्मा कॉन्सप्लांट जालन एस एस 16/4 सुबैंग, जया 47500 सिलैंगोर, मलेशिया
मै0 सैसोल मिडिल ईस्ट पी ओ बॉक्स 61089 (डिविजन ऑफ सैसोल केमिकल इंडस्ट्रीज लि0) जेबेल अली फ्री जोन, दुबई यूनाइटेड अरब अमीरात (यू ए ई)	मै0 हेम ए जी नॉर्डकेनलस्ट्रास 28 डी-20097 हैम्बर्ग, जर्मनी
मै0 ईस्टमैन केमिकल कंपनी पी ओ बॉक्स # 431 किंग्सपोर्ट टी एन 37662 यू एस ए	मै0 आई सी सी केमिकल कॉरपोरेशन 460, पार्क एवेन्यू न्यूयार्क, एन वाई 10022 यू एस ए
एक्सोन मोबिल केमिकल इंटरनेशनल सर्विसेज लि0 13501, कैटी फ्रीवे ह्यूस्टन, टी एक्स 77029-1398 यू एस ए	

3. इसी दिन सभी ज्ञात घरेलू उत्पादकों एवं आयातकों को प्रश्नावलियाँ भी भिजवाई गई थीं और उनसे 30 दिन के भीतर अपना उत्तर प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था।

4. कई पक्षकारों से हितबद्ध पक्षकार माने जाने संबंधी अनुरोध प्राप्त हुए थे और उन सभी अनुरोधों को स्वीकार किया गया था। कई हितबद्ध पक्षकारों से अपने उत्तर प्रस्तुत करने के लिए समय में विस्तार हेतु अनुरोध भी प्राप्त हुए थे और निर्धारित अवधि के भीतर जाँच पूरी करने के लिए समय-सीमा को ध्यान में रखकर सभी मामलों में समय विस्तार की अनुमति दी गई थी तथा संबंधित पक्षकारों को तदनुसार सूचित किया गया था।

5. दिनांक 25 मार्च, 2009 को एक सार्वजनिक सुनवाई की गई थी जिसके लिए दिनांक 23 फरवरी 2009 को सूचना भेजी गई थी। सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क की पहचान एवं आकलन) नियम 1997 के नियम 6 के उप नियम (6) के अनुसार सार्वजनिक सुनवाई में उपस्थित सभी हितबद्ध पक्षकारों से मौखिक रूप से प्रस्तुत विचारों को लिखित में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। एक हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रस्तुत लिखित अभ्यावेदन को सभी हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया गया था। हितबद्ध पक्षकारों को अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत लिखित अभ्यावेदनों पर प्रत्युत्तर, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने का भी अवसर दिया गया था। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा लिखित अभ्यावेदन या प्रत्युत्तर में प्रस्तुत विचारों की जाँच की गई थी और उपयुक्त निर्धारण हेतु उन पर विचार किया गया था।

6. अपने उत्पादन, बिक्री, लागत एवं कीमत, लाभ तथा क्षति संबंधी अन्य मापदण्डों के बारे में घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत सूचना का आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उत्पादकों के संयंत्रों के मौके पर दौरे के दौरान सत्यापन किया गया था। इसके अतिरिक्त, स्वतंत्र लागत लेखाकार द्वारा लागत संबंधी आंकड़ों का सत्यापन एवं प्रमाणन किया गया था। सत्यापन रिपोर्ट का अगोपनीय स्मान्तर सार्वजनिक फाइल में रखा गया था।

7. भारत में घरेलू उत्पादकों के विचार

घरेलू उत्पादकों द्वारा निम्नानुसार तर्क दिए गए हैं:

(क) वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद वैश्विक रूप से उत्पादित एवं बिक्री किया जाने वाला एसाइक्लिक अल्कोहल है। वर्तमान जाँच के दायरे के भीतर एसाइक्लिक अल्कोहल के सभी प्रकारों का संगत अवधि के दौरान भारत में आयात किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा एन बी ए, आई बी ए तथा 2 - ई एच ए का उत्पादन किया जाता है।

(ख) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एवं विक्रित एन बी ए, आई बी ए तथा 2 - ई एच ए भारत में आयातित एसाइक्लिक अल्कोहल के विभिन्न प्रकारों के समान या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु हैं। अपने आरोपों के समर्थन में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं:-

i. शोधार्थ नियमों के अंतर्गत "समान या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु" का दायरा पाटनरोधी निर्णयों के अंतर्गत "समान वस्तु" के दायरे से कहीं अधिक व्यापक है। पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत समान वस्तु के दायरे में केवल समान या काफी हद तक समतुल्य वस्तु को शामिल किया जाता है, जबकि प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पादों के दायरे में वे सभी वस्तुएँ शामिल होती हैं जो वर्तमान या भविष्य में समान या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी हों।

ii. प्रत्येक संभावित रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु को प्रतिस्पर्धी वस्तु माना जाता है। अपने आरोपों के समर्थन में घरेलू उद्योग ने कोरिया अल्कोहलिक पेय [डब्ल्यू टी/डी एस 75/ए बी/डब्ल्यू टी/डी एस 84/ए बी/आर] तथा यू एस कौटन यार्न [डब्ल्यू टी/डी एस 192/ए बी/आर] के मामलों में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु के दायरे के संबंध में डब्ल्यू टी ओ के निर्णयों तथा विभिन्न एसाइक्लिक अल्कोहल से संबंधित विभिन्न पाटनरोधी जाँचों में निर्दिष्ट प्राधिकारी, पाटनरोध के निर्णयों का संदर्भ दिया है।

iii. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एन बी ए, आई बी ए, ई एच ए को इस आधार पर एन बी ए, आई बी ए, ई एच ए के समान या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी माना जाना चाहिए कि दोनों सीधे प्रतिस्पर्धी हैं।

iv. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित ई एच ए को भारत में आयात किए जा रहे आइसो नोनानॉल का प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी माना जाना चाहिए। इसे निर्दिष्ट प्राधिकारी के अंतिम जाँच परिणामों

में स्थापित किया गया है जिसमें 2 ई एच ए तथा आइसो नोनानॉल को समान उत्पाद माना गया है।

v. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एन बी ए/आई बी ए को भारत में आयात किए जा रहे साबुटॉल का प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पाद माना जाना चाहिए। इसे निर्दिष्ट प्राधिकारी के अंतिम जाँच परिणामों में स्थापित किया गया है जिसमें साबुटॉल तथा एन बी ए/आई बी को समान उत्पाद माना गया है।

vi. जहाँ तक अन्य उत्पादों का संबंध है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तुओं के दायरे में वास्तविक एवं संभावित प्रतिस्पर्धी वस्तु शामिल होती है, प्राधिकारी को एसाइक्लिक अल्कोहल के सभी प्रकारों को प्रस्तावित उपायों के दायरे में लाना चाहिए।

(ग) एसाइक्लिक अल्कोहलों के आयात में सापेक्ष रूप से और भारत में उत्पादन एवं खपत के संबंध में अचानक एवं अत्यधिक वृद्धि हुई है।

(घ) अप्रत्याशित परिस्थितियों में निम्नलिखित कारक शामिल हैं:-

- i. वर्तमान वैश्विक मांग में गिरावट
- ii. प्रोपीलीन तथा एसाइक्लिक अल्कोहलों की कीमत में असमान परिवर्तनों के कारण विभिन्न एसाइक्लिक अल्कोहलों की कीमत में अत्यधिक गिरावट;
- iii. प्रोपीलीन तथा 2 ई एच ए कीमतों में अंतर से यथास्थापित प्रोपीलीन एवं विभिन्न एसाइक्लिक अल्कोहलों की कीमत के अंतर में अत्यधिक गिरावट।

(ङ) संबद्ध वस्तु के आयात में विशिष्ट स्थितियों में वृद्धि हुई है। ऐसी स्थितियाँ (i) निर्यातक देशों में विद्यमान स्थिति और (ii) भारतीय बाजार में विद्यमान स्थिति पर विचार करते हुए स्पष्ट हैं।

(च) एक्रिलिक अल्कोहलों के संवर्धित आयातों से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है। इसके अलावा, आयातों से गंभीर क्षति का खतरा पैदा हो रहा है। क्षति का दावा वीं 2007-08 तक उत्पादन, मिक्री, क्षमता उपयोग में सुधार पर आधारित है परंतु उसके बाद उसमें गिरावट आई। इन मापदंडों में गिरावट अक्टूबर-मार्च, 09 में काफी अधिक और व्यापक रही थी। घरेलू उद्योग को लम्बी अवधि तक उत्पादन रोकना पड़ा था।

(छ) घरेलू उद्योग के लाभ में सितम्बर, 08 तक सुधार हुआ परंतु उसके बाद अक्टूबर, 08-मार्च, 09 में इतनी अधिक गिरावट आई कि घरेलू उद्योग को इस अवधि में घाटा उठाना पड़ा।

(ज) अक्टूबर, 2008 तक लगाई गई पूंजी पर आय में सुधार हो रहा था और तत्पश्चात् इसमें गिरावट आई। यद्यपि यह गिरावट अप्रैल-सितंबर, 08 में मामूली रही थी तथापि यह अक्टूबर, 08-मार्च, 09 में काफी अधिक हो गई।

(झ) उत्पादकता उत्पादन के अनुसार रही है।

- (ट) रोजगार एवं मजदूरी से देश में विद्यमान श्रम कानून के मदेनजर क्षति प्रदर्शित नहीं हो सकती है।
- (ठ) संवर्धित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो रही है।
- (ड) आयातों से घरेलू उद्योग को आगे और क्षति होने का खतरा बना हुआ है। इसकी पुष्टि प्रोपिलिन तथा एक्रिलिक अल्कोहल के बीच डेल्टा की गिरावट, वैश्विक माँग में पर्याप्त गिरावट और परिणामतः विदेशी उत्पादकों के साथ अप्रयुक्त क्षमता, आयातित एवं घरेलू उत्पाद के बीच अत्यधिक कीमत अंतर एवं विभिन्न एक्रिलिक अल्कोहलों की कीमत में पर्याप्त गिरावट से होती है।
- (ढ) कारणात्मक संबंध की पुष्टि आयातों में वृद्धि से होती है जिससे आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई और परिणामतः उत्पादन, बिक्री, बाजार हिस्से एवं क्षमता उपयोग में गिरावट आई। इसके अलावा, आयात कीमत में भी भारी गिरावट आई जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी कमी आई। इस प्रकार, संवर्धित आयात एवं गंभीर क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की स्पष्ट पुष्टि होती है।
- (ण) चूँकि मामले के तथ्यों से इस बात की स्पष्ट पुष्टि होती है कि एक्रिलिक अल्कोहल के संवर्धित आयातों से गंभीर क्षति हुई है और आगे और गंभीर क्षति होने का खतरा बना हुआ है इसलिए कृपया रक्षोपाय शुल्क लागू किया जाए।
- (त) अधिकांश हितबद्ध पार्टियों ने प्रश्नावली का कोई उत्तर दायर नहीं किया है और इसलिए इन पार्टियों को असहयोगी माना जाना चाहिए।
- (थ) हितबद्ध पार्टियाँ अपने तर्क देने और अपने हितों की रक्षा करने के अवसर का समय पर लाभ उठाने में विफल रही हैं।
- (द) याचिकाकर्ता ने इस तथ्य के मदेनजर अलग-अलग स्रोतों से आयात आंकड़े अपनाए हैं कि एक स्रोत से विस्तृत सूचना उपलब्ध नहीं है। तथापि, किसी आयात की दोहरी गणना नहीं हुई है और इसलिए अलग-अलग स्रोतों का उपयोग उचित नहीं है।
- (ध) यद्यपि कई पार्टियों ने मौखिक अनुरोध किए हैं तथापि केवल यूरोपीय आयोग और सासोल सॉल्वेंट्स ने सुनवाई के पश्चात् लिखित अनुरोध दायर किए हैं। सुनवाई के समय अनेक पार्टियों द्वारा दिए गए मौखिक तर्कों को ध्यान में न रखा जाए क्योंकि इन्हें बाद में लिखित में प्रस्तुत नहीं किया गया है।
- (न) घरेलू उद्योग ने इसी तथा सासोल सॉल्वेंट्स द्वारा प्रस्तुत विभिन्न तर्कों की सत्यता से इनकार किया है और उसने विस्तृत उत्तर प्रस्तुत किया है जिन पर भी विचार किया गया है।

अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए अनुरोध

8. निम्नलिखित पार्टियों/व्यक्तियों ने मौखिक सुनवाई में भाग लिया है और सुनवाई के समय मौखिक अनुरोध प्रस्तुत किए हैं।

उन सभी पार्टियों ने लिखित अनुरोध प्रस्तुत नहीं किए हैं जिन्होंने मौखिक सुनवाई में भाग लिया है। महानिदेशक के समक्ष दिए गए केवल लिखित अनुरोधों पर ही इस जांच परिणाम में विचार किया गया है। तथापि, जिन हितबद्ध पार्टियों ने उत्तर प्रस्तुत किए हैं और जिन्होंने लिखित अनुरोध नहीं किए हैं उन पर ध्यान नहीं दिया गया है। विभिन्न हितबद्ध पार्टियों के लिखित अनुरोध निम्नानुसार हैं :

(I) यूरोपीय आयोग

ईसी ने निम्नलिखित अभिमत दिए हैं

(क) रक्षोपाय साधन व्यापार रक्षा साधनों में सर्वाधिक प्रतिबंधात्मक साधन है क्योंकि यह सभी स्रोतों के आयातों पर समान रूप से लागू होता है भले ही ये आयात उचित या अनुचित परिस्थितियों में किए गए हों। अतः इस साधन का प्रयोग केवल अपवादात्मक परिस्थितियों में किया जाना चाहिए और क्षति तथा हानि के विरुद्ध ऐसे उपाय लागू करने के लिए अपेक्षित डब्ल्यूटीओ के कठोर मानदंड अपनाए जाने चाहिए।

(ख) उपलब्ध सूचना के विश्लेषण के बाद आयोग का मानना है कि इस मामले में डब्ल्यूटीओ की शर्तों को पूरा नहीं किया गया है और इसलिए कोई उपाय लागू नहीं किया जाना चाहिए।

(ग) शिकायत में उल्लिखित क्षति की स्थिति से यह प्रदर्शित नहीं होता है कि उद्योग को आयातों के कारण क्षति हो रही है। इसके विपरीत विश्लेषित समयावधि में उत्पादन की मात्रा तथा क्षमता सामान्यतः स्थिर रही है और विगत वर्षों में उद्योग अपनी पूरी क्षमता से कार्य कर रहा है।

(घ) बाजार हिस्से में हानि केवल घरेलू खपत में उल्लेखनीय वृद्धि के कारण हुई जिसका आवेदक लाभ नहीं उठा सका क्योंकि वह पहले ही 100% क्षमता उपयोग कर रहा था। इसके अतिरिक्त समस्त अवधि में और अक्टूबर, 2008 तक आवेदक लाभ भी अर्जित कर रहा था।

(ङ) इसका एकमात्र नकारात्मक प्रभाव नवम्बर, 2008 में संयंत्र बंद होने के रूप में हुआ प्रतीत होता है। किन्तु वह भी डब्ल्यूटीओ मानकों के अनुसार क्षति दर्शाने के लिए पर्याप्त नहीं है। एक डब्ल्यूटीओ पैनल ने ऐसे खैरे (मेक्सिको बीफ तथा चावल) जो केवल अल्पावधि पर ही विचार करता है की पहले ही भर्त्सना की है क्योंकि यह सभी संगत तथ्यों की विषयपरक जाँच की अनुमति नहीं देता है।

(च) फ़ैक्टरी बंद किए जाने के केवल दो माह बाद जनवरी, 2009 में फ़ैक्टरी का प्रचालन बहाल हो जाने से यह स्पष्ट है कि गंभीर क्षति नहीं हुई है और आयातों के कारण कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई।

(छ) बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए आयातों में वृद्धि आवश्यक है। आयात से संबंधित आँकड़े क्रमिक वृद्धि दर्शाते हैं न कि आकस्मिक वृद्धि जैसाकि डब्ल्यूटीओ के अनुच्छेद 2.1 द्वारा अपेक्षित है।

(ज) नवम्बर में फ़ैक्टरी अन्य कारकों के कारण बंद हुई थी न कि आयातों के कारण। आवेदक ने कोई तथ्य प्रस्तुत नहीं किए जैसाकि रक्षोपाय समझौते के अनुच्छेद 4.2 के अंतर्गत अपेक्षित है।

(झ) उत्पादन लागत में वृद्धि का कारण कच्चे माल का गलत अधिप्रापण और बड़ी मात्रा में निवेश है।

() शुल्क के अधिरोपण की स्थिति में प्लास्टिक उद्योग को नुकसान होगा क्योंकि भारतीय उद्योग सभी प्रकार के ऑक्सो एल्कोहल के उत्पादन में सक्षम नहीं है।

(II) इवॉनिक ऑक्सेनो जीएमबीएच - इवॉनिक ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं

(क) भारतीय घरेलू उद्योग किसी समान उत्पाद अथवा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पाद का उत्पादन नहीं करता है। भौतिक गुणधर्म, प्रमुख उपयोग, उपभोक्ता रुचि तथा वितरण माध्यम जैसे उत्पाद संबंधी मानदंडों पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि घरेलू उद्योग आयातित आइसो नोनानोल की तुलना में किसी समान उत्पाद अथवा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पाद का उत्पादन नहीं करता है।

(ख) इवॉनिक ने जापान-एल्कोहल युक्त पेय और कोरिया एल्कोहल युक्त पेय के मामले में डब्ल्यूटीओ के निर्णय का संदर्भ ग्रहण किया है।

(ग) भारत में पाटनरोधी जाँचों के तहत आई एनए को समान उत्पाद के रूप में शामिल करने संबंधी पूर्व प्रयास सफल नहीं हुए हैं। पाटनरोधी संबंधी पिछले निर्णयों से यह स्पष्ट है कि ऑक्सो एल्कोहल के अन्य रूप उन रूपों से भिन्न हैं जिनका उत्पादन नोनानोल का उपयोग कर किया गया है। इवॉनिक ने ऑक्सो एल्कोहल से संबंधित दो पाटनरोधी जाँचों के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी के निर्णय का संदर्भ लिया है।

(घ) मौजूदा जाँचों के संबंध में आवेदक ने माननीय रक्षोपाय महानिदेशक के समक्ष कोई दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं किया है क्योंकि वे आइसो नोनानोल का उत्पादन नहीं करते हैं।

(ड.) दायरे की गई याचिका में गंभीर विसंगतियाँ हैं जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं :-

- (i) शामिल तीन उत्पादों के लिए कोई संगत सूचना नहीं है।
- (ii) किसी अप्रत्याशित घटना का अभाव
- (iii) अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए किसी व्यवहार्य समायोजन योजना का अभाव

(III) लुब्रिजॉल इंडिया प्रा.लि. - लुब्रिजॉल इंडिया प्रा.लि. द्वारा निम्नलिखित तर्क दिए गए हैं :-

(क) भारतीय घरेलू उद्योग आइसो ऑक्टेनॉल तथा आइसो डेकानॉल का उत्पादन नहीं करता है - चूँकि घरेलू उद्योग इन उत्पादों का विनिर्माण नहीं करता है अतः उन्हें विचाराधीन उत्पादों के दायरे में शामिल नहीं किया जा सकता।

(ख) विचाराधीन उत्पाद के दायरे के संबंध में लुब्रिजॉल द्वारा इवॉनिक द्वारा प्रस्तुत तर्कों की पुनरावृत्ति भी की गई है।

(ग) आवेदक का इस संबंध में कोई मत नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग आइसो ऑक्टेनॉल तथा आइसो डेकानॉल का उत्पादन नहीं करता है।

(घ) याचिका में गंभीर विसंगतियाँ - लुब्रिजॉल भी इवॉनिक द्वारा दिए गए आधारों के सदृश आधारों पर याचिका में गंभीर विसंगतियाँ होने का दावा करता है।

(iv) भारतीय प्लास्टिसाइजर्स विनिर्माता एसोसिएशन

भारतीय प्लास्टिसाइजर्स विनिर्माता एसोसिएशन (आईपीएमए) द्वारा विस्तृत निवेदन किए गए हैं जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :

- (i) घरेलू उद्योग का वर्तमान आवेदन जिसमें उन्होंने ऑक्सो-अल्कोहलों के आयात पर रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के लिए अनुरोध किया है, वह वर्ष 2008-09 में ऑक्सो-अल्कोहलों की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में आई गिरावट, प्रॉपिलीन/अपरिष्कृत की कम कीमतों के कारण है।
- (ii) विदेशों में ऑक्सो अल्कोहलों के प्रमुख विनिर्माता प्थैलेट प्लास्टिसाइजर्स का भी उत्पादन कर रहे हैं और प्लास्टिसाइजर्स का निर्यात करने के इच्छुक हैं, क्योंकि इनसे उच्च मूल्यवर्धन एवं वसूली की प्राप्ति होती है। एसाइक्लिक अल्कोहलों पर रक्षोपाय शुल्क लागू किए जाने से ऑक्सो उद्योग को सहायता प्राप्त नहीं होगी और उससे प्थैलेट प्लास्टिसाइजर्स के आयातों के लिए रास्ते खुले जाएंगे। ऑक्सो अल्कोहलों के निर्यातक, प्लास्टिसाइजर्स के उत्पादक हैं। यदि ऑक्सो अल्कोहलों पर रक्षोपाय शुल्क लगाया जाता है तो ऑक्सो अल्कोहलों की निविष्टि लागत उस सीमा तक पहुँच जाएगी। प्लास्टिसाइजर्स कम कीमतों पर उपलब्ध होंगे। रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने की स्थिति में भारत में प्लास्टिसाइजर्स के वृहद आयात होंगे और प्लास्टिसाइजर विनिर्माताओं को इकाइयाँ बंद करनी पड़ेंगी। यदि प्लास्टिसाइजर्स के सस्ते आयातों के कारण प्रयोक्ता उद्योग बंद हो जाता है तो ऑक्सो अल्कोहलों के विनिर्माता अपने उत्पाद की बिक्री नहीं कर पाएंगे।
- (iii) ऑक्सो अल्कोहलों के आयातक, जो घरेलू उद्योग से ऑक्सो अल्कोहलों की खरीद करते हैं; वास्तव में एक लघु उद्योग है जो प्लास्टिसाइजर्स का विनिर्माण करती है। प्लास्टिसाइजर्स के विनिर्माण अब तक आधुनिक नहीं बन पाए हैं और वैश्विक उत्पादों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए उन्हें अपनी क्षमता में वृद्धि करनी होगी।
- (iv) रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के बाद भी ऑक्सो अल्कोहल विनिर्माणों की बिक्री नहीं हो सकेगी। अतः यह अनुरोध आधारहीन और सार्वजनिक हित के विरुद्ध है।
- (v) सूचना की गोपनीयता- याचिकाकर्ता ने बहुत-सी सूचनाओं को गोपनीय रखा है। कंपनी का संपूर्ण तुलन पत्र उपलब्ध नहीं कराया गया है। आवेदन में दी गई सूचना अस्पष्ट है और स्थानीय उद्योग को हुई क्षति की मात्रा का तर्कसंगत एवं अर्थपूर्ण निरूपण प्रस्तुत नहीं करती है। किसी प्रकार का उत्पाद विशिष्ट आयात आंकड़ा उपलब्ध नहीं कराया गया है। आवेदन में प्रयुक्त शब्द उत्पाद है और आंकड़े किसी विशिष्ट उत्पाद का संदर्भित करते हैं। ऑक्सो अल्कोहल नामक कोई उत्पाद नहीं है

। यह उत्पाद समूह के लिए एक प्रजातिगत नाम है । बाजार में किया जाने वाला कारोबार, ऑक्सो अल्कोहल के अंतर्गत आने वाले प्रत्येक उत्पाद के विशिष्ट नामों द्वारा किया जाता है । अनुबंध 4 के पठन से यह प्रदर्शित होता है कि कोई भी उत्पाद विशिष्ट आयात आंकड़े नहीं दिए गए हैं ।

- (vi) याचिकाकर्ता द्वारा गैट 1994 के अनुबंध XIX के अनुसार कोई अनपेक्षित परिवर्तन सूचित नहीं किया गया है । न तो दिनांक 17 नवम्बर, 2008 का रक्षोपाय आवेदन न ही दिनांक 15.01.2009 की जाँच शुरुआत संबंधी नोटिस में डब्ल्यूटीओ से पूर्व भारत द्वारा की गई वचनबद्धताओं के परिणामस्वरूप कोई अनपेक्षित परिवर्तन सूचित किया गया है । अर्जेंटीना फुटवियर के मामले में, डब्ल्यूटीओ अपीलिय निकाय का यह मत था कि इस बात को दर्शाया जाना चाहिए कि वे परिवर्तन अनपेक्षित हैं, जिनके कारण एक उत्पाद का आयात इतनी वृहद् मात्रा में तथा ऐसी परिस्थितियों में किया जाने लगा जिससे घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति अथवा गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हो गया ।
- (vii) वर्तमान याचिका में अतिरिक्त उत्पादों को जोड़ा गया है । ऐसे उत्पादों के आयात से, जिनका विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है, घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हो सकती है । अतः जांच को नॉर्मल ब्यूटेनॉल, आइसो ब्यूटेनॉल तथा 2 इथाइल हैक्सानोल तक सीमित रखा जाना चाहिए क्योंकि केवल उन्हीं उत्पादों का विनिर्माण घरेलू उत्पादक के अलावा और किसी के द्वारा नहीं किया जाता और क्षति इन्हीं उत्पादों के कारण हो सकती है । समान एवं प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धी होने के लिए उत्पादों को न केवल तकनीकी रूप से अपितु वाणिज्यिक रूप से भी हर प्रकार से प्रतिस्थापनीय होना चाहिए । घरेलू उद्योग द्वारा केवल एनबीए, आईबीए तथा 2-ईएचए का उत्पादन किया जा रहा है । अल्कोहल के इन विभिन्न प्रकारों के बीच कोई प्रतिस्थापनीयता नहीं है । इन अल्कोहलों का उपयोग विशिष्ट प्रकार के ईस्टर के लिए किया जाता है । सुबुटोल को आईबीए या एनबीए के बराबर नहीं माना जा सकता । आईबीए तथा एनबीए ऑक्सो प्रक्रिया द्वारा उत्पादित किए जाते हैं । सुबुटोल कोल कार्बोनाइजेशन प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है और यह एक सह-उत्पाद है । ऐसा प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता ने यह अनुमान लगाते हुए समस्त प्लास्टिसाइजर्स को सजातीय उत्पाद माना है कि किसी प्रकार के अल्कोहल का उपयोग प्रत्येक प्लास्टिसाइजर के उत्पादन में किया जा सकता है । प्रत्येक प्लास्टिसाइजर का अंतिम उपयोग दूसरे प्लास्टिसाइजर से भिन्न होता है । सुबुटोल से निर्मित प्लास्टिसाइजर में डीओपी, डीबीपी तथा डीआईबीपी जैसे प्लास्टिसाइजर्स के लिए पारंपरिक प्लास्टिसाइजिंग क्षमता नहीं होती है । इनका विनिर्माण 99% शुद्ध 2-ईएचए, 99% शुद्ध एनबीए तथा 99% शुद्ध आईबीए से किया जाता है । इस प्रकार इनका अनुप्रयोग पूर्णतः अलग है । किसी विकल्प के रूप में तैयार उत्पाद का तात्पर्य कच्ची सामग्री की प्रतिस्थापनीयता से नहीं होता है । समान उत्पाद का विश्लेषण द्विस्तरी विश्लेषण होता है जैसा कि बिरला पैरिक्लास बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में अवधारित किया गया है । अलग-अलग रासायनिक संरचना के उत्पादों को एक साथ जोड़ने के लिए भौतिक विशेषताओं तथा अंतिम उपयोग समान वस्तु के दायरे में लाए जाने से समानता के सिद्धांत का उल्लंघन होगा । ऑध्रा पेट्रोकेमिकल्स बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी जिसमें ऑक्सो अल्कोहल पर पाटनरोधी

शुल्क के अधिरोपण को निरस्त किया गया था, के पाटनरोधी मामले में न्यायाधिकरण ने समान उत्पाद के मुद्दे पर टिप्पणी की थी। 2001 (130) में सूचित ऑक्सो अल्कोहल इंडस्ट्रीज एसो. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के एक अन्य पाटनरोधी मामले में अलग-अलग ऑक्सो अल्कोहलों को पाटनरोधी जाँच में भी समान वस्तु नहीं पाया गया था जहाँ समान वस्तु की परिभाषा काफी व्यापक है। न्यायाधिकरण ने “अत्यधिक समानता” को इस तथ्य के बराबर माना था कि क्या उत्पाद एक-दूसरे के प्रत्यक्ष प्रतिस्थापनीय या प्रति-प्रयोजनीय हैं और यह निर्णय दिया था कि दोनों उत्पाद समान होने के लिए उनकी प्रति-प्रयोज्यता या प्रतिस्थापनीयता के अलावा उनकी विशेषताएँ एक-दूसरे से अत्यधिक मिलती-जुलती होनी चाहिए। यदि आइसोडेकानोल का उपयोग प्लास्टिसाइजर्स के विभिन्न प्रकारों के विनिर्माण में किया जाता है तो वे समान उत्पाद नहीं हो सकते और केवल प्रतिस्थापनीयता दोनों उत्पादों को समान मानने के लिए पर्याप्त नहीं है। रिकॉर्ड में ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है जिससे यह पता चल सके कि सुबुटोल का उपयोग आईबीए या एनबीए जैसे अच्छी गुणवत्ता के उत्पादों के लिए किया जा सकता है। सुबुटोल रासायनिक गुणधर्मों में अंतर को ध्यान में रखते हुए समान उत्पाद नहीं है। विश्लेषण हेतु इन सभी उत्पादों को अलग-अलग लिया जाना चाहिए।

ये तीनों उत्पाद अपने आप में अलग-अलग उत्पाद हैं और उनके शीर्ष भी अलग-अलग हैं

- viii. उनकी वार्षिक क्षमता, 1,25,000 टन प्रति वर्ष की मांग की तुलना में 30,000-35,000 टन है।
- ix. याचिकाकर्ता ने बार-बार पाटनरोधी शुल्क का मार्ग प्रयुक्त किया है। बिना किसी आधार के अत्यधिक कीमत प्रभारित करने के लिए विलम्ब से डिलीवरी देकर अपने ग्राहकों का शोषण करना और याचिकाकर्ता को कोई क्षति न होने की स्थिति में भी आयात हेतु टैरिफ अवरोध उत्पन्न करने के लिए आवेदन प्रस्तुत करके अपने ग्राहकों को अन्य प्रतिस्पर्धी स्रोतों से खरीद करने से रोकना सदैव याचिकाकर्ता की रणनीति रही है। विश्व के विभिन्न देशों से ऑक्सो के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क अब समाप्त/व्यपगत कर दिया गया है।
- x. सार्वजनिक फाइल में भी कोई विश्वसनीय सूचना उपलब्ध नहीं है। आंकड़ों की कोई सत्यापन रिपोर्ट नहीं है।
- xi. आवेदक को ऑक्सो अल्कोहल के आयात पर 7.5% की तुलना में कच्चे माल अर्थात् प्रोपाइलीन के आयात पर 5% की दर से टैरिफ संरक्षण पहले ही प्रदान किया गया है।
- xii. याचिका गंभीर क्षति अथवा गंभीर क्षति के खतरे का समर्थन नहीं करती। जाँच शुरूआत के कारण कोई क्षति नहीं हुई है।
- xiii. यदि एकमात्र घरेलू उत्पादक का संयंत्र बन्द हो जाए तो सभी प्रयोक्ता आयात करने पर विवश हो जाएंगे। अतः क्षति का विश्लेषण करते समय एकमात्र घरेलू उत्पादक का संयंत्र बंद होने के बाद प्राप्त किसी भी आयात संबंधी आंकड़ों पर विचार किया जाना जरूरी नहीं है।
- xiv. क्षमता उपयोग में वृद्धि के साथ उत्पादन में भी बढ़ोतरी हुई है।

- xv. याचिकाकर्ता के पास क्षमता सीमित है और निरपेक्ष रूप से कोई गिरावट नहीं आई है । याचिकाकर्ता की क्षमता की तुलना में घरेलू बाजार बहुत बड़ा और वृद्धिशील है अतः आयात अवश्यभावी है ।
- xvi. अन्य स्वदेशी उत्पादकों ने वित्तीय बाधाओं के कारण संयंत्र बन्द कर दिए हैं ।
- xvii. ऑक्सो अल्कोहल की कीमतों में भारी गिरावट जिसके परिणामस्वरूप संयंत्र नवम्बर, 2008 में बन्द हो गया था, के संबंध में आवेदक ने कोई आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए हैं । कीमत कटौती से संबंधित सामान्य विवरणों को छोड़कर कोई संबंधित आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए गए हैं ।
- xviii. वित्तीय घाटा होने के बारे में विवरण प्रस्तुत नहीं किया गया है, जिसके कारण संयंत्र नवम्बर, 2008 में बन्द हो गया था । याचिकाकर्ता की दिनांक 30 जून, 2008 को समाप्त तिमाही से संबंधित रिपोर्ट में, पूर्ववर्ती वर्ष की तदनुसूची अवधि के दौरान 11.72 करोड़ रुपये की तुलना में लगभग 6.9 करोड़ रुपये का लाभ दर्शाया गया था । दिनांक 31.03.2008 को समाप्त वर्ष के लिए याचिकाकर्ता का निवल लाभ लगभग 36.22 करोड़ रुपये रहा है ।
- xix. आंध्र पेट्रोकेमिकल्स लि० के पास कोई जेट्टी नहीं है और वह कच्चे माल का आयात करने की स्थिति में नहीं है । वह यूनिट की एकमात्र सप्लायर हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन पर निर्भर है । याचिकाकर्ता का संयंत्र विशाखापत्तनम में अर्थात् पूर्वी तट पर स्थित है जबकि अधिकांश क्रेता पश्चिमी तट पर स्थित है ।
- xx. याचिकाकर्ता महानिदेशक को एक बीमा कम्पनी मान रहा है, जो उनकी व्यावसायिक जोखिमों का बीमा कर सकते हैं ।
- xxi. आवेदन में कोई पुनःरचना योजना प्रस्तुत नहीं की गई है । आवेदक को आयात प्रतिस्पर्धा के प्रति सकारात्मक समायोजन करने के लिए किए जा रहे अथवा किए जाने वाले प्रयासों अथवा दोनों का विवरण प्रस्तुत करना चाहिए । ऐसी कोई योजना आवेदन के साथ प्रस्तुत नहीं की गई है । यदि यह उत्पाद सभी प्रकार से आयातित उत्पाद के प्रति प्रतिस्पर्धी नहीं है तो क्षमता विस्तार का कोई उपयोग नहीं है । अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना करने में घरेलू उद्योग को समर्थ बनाने के लिए रक्षोपाय उपाय अस्थायी व्यवस्था है । आवेदक ने यह कहीं स्पष्ट नहीं किया है कि घरेलू उद्योग उत्पादकता में बढौतरी किस प्रकार करेगा, लागत में कमी कैसे करेगा और सबसे मत्वपूर्ण, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए अपनी बिक्री कीमतों में कमी कैसे करेगा । आंध्र पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड की क्षमता उत्पादन के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की तुलना में बहुत कम है ।
- xxii. कारखाने की तालाबंदी नाटकीय ढंग से की गई है । आवेदक ने अपना संयंत्र 8 नवम्बर से 7 दिसम्बर तक ऑर्डरों के अभाव में बन्द नहीं किया बल्कि वार्षिक रख-रखाव और रक्षोपाय उपाय को न्यायोचित ठहराने के दोहरे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किया ।
- xxiii. संशोधित आवेदन 15 जनवरी, 2009 को प्रस्तुत किया गया । इसमें दिनांक 8.12.2008 को उत्पादन पुनः शुरू करने का कोई उल्लेख नहीं किया गया है और पुनः शुरुआत के पश्चात इसकी व्यवहार्यता के बारे में कुछ नहीं कहा गया है ।
- xxiv. भारत में थैलेट प्लास्टिसाइजर्स के विनिर्माताओं की इस समय 25 यूनिटें हैं, जिनमें से अत्यधिक क्षमता तथा गैर किफायती आय के कारण दस यूनिटें प्रचालन में नहीं

है। प्रचालनरत यूनिटों का क्षमता उपयोग डीओपी के भारी आयातों और ऑक्सो अल्कोहल्स की अनुपब्धता के कारण बहुत कम अर्थात् 40% से भी कम हैं और अनेक लघु उद्योग यूनिटें बन्द हो गई हैं।

(v) अल्काइल अमीन्स केमिकल्स लिमिटेड

XXV यह कम्पनी एलीफैटिक अमीन्स तथा अमीन व्युत्पन्नों की आग्रणी विनिर्माता है। इसके अमीन्स की किस्मों में ब्यूटाइल अमीन्स शामिल है जिसके लिए कच्चे माल के रूप में सामान्य ब्यूटेनॉल और 2 ईएचए की जरूरत है।

XXVI आंध्र पेट्रो सामान्य ब्यूटेनॉल और 2 ईएचए के एकमात्र विनिर्माता हैं और उपर्युक्त उत्पादों के संदर्भ में भारत में उनका एकाधिकार है।

XXVII आंध्र प्रदेश को आयातों के कारण क्षति का दावा न्यायोचित नहीं है।

XXVIII आंध्र पेट्रो भारतीय ग्राहकों से अग्रिम भुगतान की मांग करते हैं। विदेशी आपूर्तिकर्ता ब्याज की सामान्य दर पर 360 दिनों की क्रेडिट पेशकश करते हैं।

सासोल सौल्वेन्ट्स

XXIX घरेलू उद्योग द्वारा बनाए गए उत्पाद ना तो विदेशी उत्पादक के समरूप हैं ना ही प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा में हैं।

XXX उन्होंने आवेदन एवं जॉच प्रारम्भ की सूचना में अनेक असंगतियों की ओर विशिष्ट रूप से दर्शाया है। उन्होंने यह प्रस्तुत किया है कि आवेदन पूर्ण रूप से गोपनीय नहीं है अथवा गोपनीयता का उल्लंघन करता है। साथ ही उनके द्वारा यह भी प्रस्तुत किया कि आवेदन में क्षति का विश्लेषण करने हेतु कोई सुस्पष्ट अवधि उल्लेखित नहीं है।

XXXI यह भी सूचना दी गई कि किसी भी प्रकार के आकस्मिक परिस्थितियों और आकस्मिक आयात नहीं है। बिक्री में एक दम गिरावट या मार्केट शेयर में गिरावट अथवा क्षमता प्रयोग में गिरावट भी दृष्टिगोचन नहीं है। किसी प्रकार की कोई भी गंभीर क्षति या उसकी आशंका अथवा कोई अन्य गंभीर परिस्थिति भी दृष्टव्य नहीं है। यह सूचित किया गया है अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों में जो गिरावट आई है वह कच्चे माल के मूल्यों में कमी के कारण है। इसके अतिरिक्त यह भी सूचित किया कि दावाकृत क्षति और वर्धित आयात के मध्य कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। साथ ही यह भी कहा गया कि आवेदक द्वारा कोई व्यवहार्य समायोजन योजना नहीं दी गई है।

XXXII शुल्क का लागू किया जाना सार्वजनिक हित में नहीं होगा।

9. आयातकों/प्रयोक्ता उद्योगों के विचार

जाँच एवं जाँच परिणाम

10. मैंने मामले के रिकॉर्डों तथा घरेलू उत्पादकों, प्रयोक्ताओं/आयातकों तथा निर्यातकों एवं निर्यातक सरकार द्वारा प्रस्तुत उत्तरों की सावधानीपूर्वक जाँच की है। विभिन्न पक्षकारों द्वारा दिए गए अभ्यावेदनों और उनसे उत्पन्न होने वाले मुद्दों पर नीचे दिए गए जाँच परिणामों में उपयुक्त स्थानों पर कार्यवाही की गई है।

11. **विचाराधीन उत्पाद:** वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद ऑक्सो अल्कोहल (एसाइक्लिक अल्कोहल्स) है। ऑक्सो अल्कोहल्स को एसाइक्लिक अल्कोहल, उनके मिश्रण तथा उनके हैलोजेनेटेड, सल्फोनेटेड, नाइट्रेटेड या नाइट्रोसेटेड व्युत्पन्नों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। संबद्ध अल्कोहल के कई प्रकार होते हैं जिनमें से कुछ निम्नानुसार हैं:-

i. सामान्य ब्यूटानॉल (एन बी ए के रूप में भी ज्ञात) या एन-ब्यूटाइल अल्कोहल्स, ब्यूटेन - 1- ऑल, (29051300)	(v) हेक्सानॉल, (29051390)
ii. आईसो-ब्यूटानॉल (आई बी ए के नाम से भी ज्ञात) या ब्यूटेन - 2 - ऑल (29051490)	(vi) हेप्टानॉल, (29125000)
iii. 2 - इथाइल हेक्सानॉल (2-ई एच ए के नाम से भी ज्ञात) (29051620)	(vii) ऑक्टानॉल तथा आइसो ऑक्टानॉल, (29051690)
iv. साब्युटॉल, (29051210)	(viii) नोनानॉल तथा आइसो नोनानॉल, (29051990)
	(ix) डेकानॉल तथा आइसो डेकानॉल, (29051700)

उत्पाद को निम्नानुसार वर्गीकृत किया गया है:

मद का नाम

सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम,
1975 के अंतर्गत वर्गीकृत

सामान्य ब्यूटानॉल (एन बी ए के रूप में भी ज्ञात) या एन-ब्यूटाइल अल्कोहल्स, ब्यूटेन - 1-01	29051300
आईसो-ब्यूटानॉल (आई बी ए के नाम से भी ज्ञात) या ब्यूटेन - 2 - ऑल	29051490
पेंटीलॉल	29051400
2- इथाइल हेक्सानॉल (2-ई एच ए के नाम से भी ज्ञात)	29051620
साब्युटॉल	29051210
हेक्सानॉल	29051390
हेप्टानॉल	29125000
ऑक्टोनॉल तथा आइसो ऑक्टानॉल	29051690

नोनानॉल तथा आइसो नोनानॉल
डेकानॉल तथा आइसो डेकानॉल
और उसके मिश्रण

29051990

29051700

12. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि ये सभी उत्पाद अपनी प्रतिस्थापनीयता के आधार पर भारत में विनिर्मित उत्पादों के "समान या सीधे प्रतिस्पर्धी" उत्पाद हैं और आयातकों द्वारा भी एक-दूसरे के स्थान पर इनका आयात किया जा रहा है।

13. यह तर्क दिया गया है कि जाँचाधीन वस्तु में केवल उन्हीं वस्तुओं को शामिल किया जाएगा जिनका जाँच अवधि के दौरान भारत में आयात किया जा रहा है और "घरेलू उद्योग" द्वारा उसका विनिर्माण किया जा रहा है। याचिकाकर्ता द्वारा आइसो नोनानॉल तथा साब्युटॉल की पेशकश नहीं की जाती है। इसी के साथ यदि वर्तमान जाँच के दायरे के भीतर एसाइक्लिक अल्कोहलों के सभी प्रकारों पर विचार किया जाए तो याचिकाकर्ता समग्र भारतीय माँग को पूरा करने में असमर्थ हैं। यदि एसाइक्लिक अल्कोहल के सभी प्रकारों को शामिल किया जाए तो परियोजना में विस्तार के बाद भी याचिकाकर्ता समग्र भारतीय माँग को पूरा नहीं कर पाएँगे। इसी के साथ एसाइक्लिक अल्कोहल के प्रत्येक प्रकार का अपना विशिष्ट अंतिम अनुप्रयोजन होता है। अपने तर्कों के समर्थन में हितबद्ध पक्षकारों ने इस संबंध में लिए गए विभिन्न निर्णयों का संदर्भ दिया है।

14. मुद्दे का विश्लेषण किया गया है। सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8 ख की उप धारा 6 के खण्ड (ख) में "घरेलू उद्योग" को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

(ख) "घरेलू उद्योग" का तात्पर्य है -

(i) समग्र रूप से समान वस्तु या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु के उत्पादक; या

(ii) वे उत्पादक जिनका भारत में समान वस्तु या प्रतिस्पर्धी वस्तु का संचयी उत्पादन भारत में उक्त वस्तु के कुल उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है।

15. यूनाइटेड स्टेट्स - पाकिस्तान से कॉम्ब्ड कॉटन यार्न संबंधी परिवर्ती रक्षोपाय [डब्ल्यू टी/डी एस 192/ए बी/आर] तथा कोरिया-अल्कोहलिक पेयों पर कर [डब्ल्यू टी/डी एस 75/ए बी/आर] के मामले में अपीलीय निकाय की रिपोर्ट से व्यापक रूप से "समान या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" वस्तु के व्यवहार से संबंधी मुद्दे का समाधान हो गया है।

16. संदर्भित रिपोर्टों एवं जाँच परिणामों की संगतता का विश्लेषण करने के लिए संगत भागों को निम्नानुसार प्रस्तुत किया जाता है:-

यूनाइटेड स्टेट्स - पाकिस्तान से कॉम्ब्ड कॉटन यार्न संबंधी परिवर्ती रक्षोपाय [डब्ल्यू टी/डी एस 192/ए बी/आर]

84. यूनाइटेड स्टेट्स द्वारा पैनल के जाँच परिणामों के विरुद्ध अपील की जाती है। यूनाइटेड स्टेट्स निवेदन करता है कि अनुच्छेद 6.2 में ऐसे उत्पाद जो समान वस्तु ही नहीं हैं बल्कि आयातित उत्पाद के साथ प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी भी हैं, के आधार पर घरेलू उद्योग की परिभाषा की अनुमति दी जाती है। यूनाइटेड स्टेट्स के अनुसार व्यावसायिक बाजार में बेचे जाने वाले यार्न और अपनी आंतरिक खपत हेतु वर्टिकली इंटीग्रेटेड फैब्रिक उत्पादकों द्वारा उत्पादित यार्न समान वस्तु हैं परन्तु वे एक-दूसरे के साथ प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी नहीं हैं। यूनाइटेड स्टेट्स का तर्क है कि घरेलू उद्योग की परिभाषा को अस्वीकार करके पैनल अनुच्छेद 6.2 में शब्द "और/या" का सही अर्थ एवं प्रभाव प्रस्तुत करने में असफल रहा है और उसने शब्द "और" को अप्रयोज्य बना दिया है। यूनाइटेड स्टेट्स ने यह भी तर्क दिया है कि पैनल को घरेलू उद्योग की परिभाषा वाले डब्ल्यू टी ओ के अन्य करारों के वृहतर संदर्भ का सहारा लिए बिना ए टी सी के भीतर घरेलू उद्योग की परिभाषा का तात्पर्य निकालना चाहिए था।

85. हम इस मुद्दे का विश्लेषण ए टी सी के अनुच्छेद 6.2 के संगत भाग में यथाउल्लिखित घरेलू उद्योग की परिभाषा के साथ शुरू करते हैं जिसमें प्रावधान है कि:

इस अनुच्छेद के अंतर्गत रक्षोपाय कार्यवाही की जाएगी जब किसी सदस्य द्वारा किसी निर्धारण के आधार पर यह प्रदर्शित होता हो कि किसी विशिष्ट उत्पाद के उसके क्षेत्र में ऐसी बढ़ी हुई मात्रा में आयात किया जा रहे हैं जिससे समान और/या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पादों का उत्पादन करने वाले घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हो रही है या वास्तविक क्षति का खतरा है। (फुटनोट छोड़ा गया, महत्व जोड़ा गया)

86. "समान और/या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पादों का उत्पादन करने वाले घरेलू उद्योग" शब्दों के सामान्य अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है कि घरेलू उत्पाद जिसके साथ आयातित उत्पाद की तुलना की जानी है, के साथ "समान" और "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" विशिष्टताओं को जोड़ा गया है। अतः हमारा यह मत है कि घरेलू उद्योग की परिभाषा उत्पादोन्मुखी होनी चाहिए न कि उत्पादकोन्मुखी और यह कि परिभाषा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पादों जिनकी तुलना उनके समान या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी होने के रूप में आयातित उत्पाद से की जानी है, पर आधारित होनी चाहिए।

87. हम इस बात पर भी विचार करते हैं कि अनुच्छेद 6.2 के अंतर्गत "उत्पादन" शब्द का तात्पर्य है वाणिज्यिक प्रयोजनों हेतु उत्पादन और कि स्वयं में इसकी व्याख्या व्यावसायिक या बाजार के किसी अन्य खण्ड में बिक्री तक सीमित या उसके लिए पात्र उत्पादन के रूप में नहीं की जा सकती है। अनुच्छेद 6.2 के अनुसार घरेलू उद्योग की परिभाषा का निर्धारण उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद अर्थात् समान और/या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पादों से होता है। हमारे विचार

1 यूनाइटेड स्टेट्स-लेम्ब रक्षोपाय में हमने यह भी पाया कि रक्षोपाय संबंधी करार के अंतर्गत उत्पाद घरेलू उद्योग की परिभाषा को परिभाषित करता है। उस मामले में इस मुद्दे में शामिल "समान उत्पाद" भेड़ का भॉस था। (अपीलीय निकाय की रिपोर्ट, सुप्रा, फुटनोट 30)। बुकमार्क विनिर्दिष्ट नहीं है। पैरा 84, 86-88 तथा 95)

2 इस चरण में हमने "समान" और "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" शब्दों का विश्लेषण अलग से किया है। अनुच्छेद 6.2 में संयोजक "और/या" की व्याख्या हेतु देखें इफ्रा, पैराग्राफ 104

से घरेलू उद्योग उत्पादों का क्या करता है, इस आधार पर "उत्पादन" शब्द को स्वतः कोई अलग या पात्र अर्थ नहीं दिया जा सकता है।

88. अब हम ए टी सी के अनुच्छेद 6.2 के अंतर्गत घरेलू उद्योग की परिभाषा के अगले दो घटकों की तरफ बढ़ते हैं अर्थात् समान उत्पाद और प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पाद।

89. हमने नोट किया है कि प्रतिभागियों³ में पाकिस्तान से आयातित यार्न तथा यूनाइटेड स्टेट्स के उत्पादकों द्वारा उत्पादित यार्न के समान उत्पाद होने के संबंध में कोई मतभेद नहीं है फिर चाहे उसका उत्पादन वर्टिकली इंटीग्रेटेड फैब्रिक उत्पादकों द्वारा किया गया हो या स्वतंत्र यार्न उत्पादकों द्वारा। यूनाइटेड स्टेट्स द्वारा अपने तर्कों⁴ में यह स्पष्ट किया गया है कि उसके द्वारा घरेलू उद्योग की परिभाषा से वर्टिकली इंटीग्रेटेड फैब्रिक उत्पादकों द्वारा उत्पादित यार्न को बाहर रखा जाना इस कारण से नहीं था कि उनके द्वारा समान उत्पाद का उत्पादन नहीं किया जा रहा था बल्कि इसलिए था कि वे प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पादों का उत्पादन नहीं कर रहे थे। अतः हमारे लिए इस अपील के प्रयोजनार्थ "समान उत्पाद" के अर्थ का समाधान करना आवश्यक नहीं है।

90. हमारे द्वारा अनुच्छेद 6.2 तथा इस मामले के तथ्यों के विशिष्ट संदर्भ में "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" शब्द की जाँच किए जाने से पूर्व हम पिछले मौकों पर इस शब्द की व्याख्या का पुनर्स्मरण उपयोगी समझते हैं।

91. हमने कोरिया - अल्कोहलिक पेय⁵ तथा जापान-अल्कोहलिक पेयों पर कर⁶ में "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" शब्द की व्याख्या की है। हमें इस तथ्य का ज्ञान है कि इन दोनों रिपोर्टों में इस तथ्य की व्याख्या गैट 1994 की व्याख्यात्मक टिप्पणी विस्तार अनुच्छेद III:2 के संदर्भ में की गई है। हम इस पहलू का संदर्भ बाद में लेंगे। कोरिया-अल्कोहलिक पेय पर हमारी रिपोर्ट में "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" शब्द की व्याख्या के मुख्य घटक निम्नानुसार हैं :-

(क) "प्रतिस्पर्धी" शब्द से "प्रतिस्पर्धा द्वारा चिन्हित" अभिप्रेत है। प्रतिस्पर्धात्मक संबंध का संदर्भ अनिवार्य रूप से बाजार होता है क्योंकि वही एक मंच है जहाँ उपभोक्ता एक विशिष्ट आवश्यकता या सूचि को पूरा करने के लिए वैकल्पिक उपायों की पेशकश करने वाले विभिन्न उत्पादों का चुनाव करते हैं। चूँकि बाजार में प्रतिस्पर्धा एक परिवर्तनशील तथा विकासशील प्रक्रिया है अतः उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक संबंध का विश्लेषण केवल मौजूदा उपभोक्ता अधिमानताओं के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए; प्रतिस्पर्धात्मक संबंध में संभावित प्रतिस्पर्धा भी शामिल है।

3 पैनल रिपोर्ट, पैरा 7.41

4 यूनाइटेड स्टेट्स के अपीलकर्ता का अभ्यावेदन, पैरा 33 अंतिम जाँच परिणाम

5 अपीलीय निकाय की रिपोर्ट, सुप्रा, फुटनोट त्रुटि। बुकमार्क विनिर्दिष्ट नहीं है। पैरा 108-124

6 अपीलीय निकाय की रिपोर्ट, डब्ल्यू टी/डी एस 8/ए बी/आर, डब्ल्यू टी/डी एस 10/ए बी/आर, डब्ल्यू टी/डी एस 11/ए बी/आर, दिनांक 1 नवम्बर, 1996 को अंगीकृत, डी एस आर 1996 : 1, 97 पैरा 117-118 में।

7 उपर्युक्त, पादटिप्पणी त्रुटि ! बुकमार्क परिभाषित नहीं पैरा 114-115

8 वही, पैरा 115 तथा 117

(ख) "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" शब्द के सामान्य अर्थ के अनुसार उत्पाद उस स्थिति में प्रतिस्पर्धी अथवा प्रतिस्थापनीय होते हैं जब वे परस्पर विनिमेय हों अथवा वे एक विशिष्ट आवश्यकता या रुचि को पूरा करने के वैकल्पिक उपाय प्रस्तुत करते हों ।⁹

(ग) अनुच्छेद III:2 के दूसरे वाक्य के संदर्भ में अनुच्छेद में, "प्रत्यक्ष रूप से" घरेलू तथा आयातित उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक संबंध में निकटता का संकेतक है । हालांकि "प्रत्यक्ष रूप से" शब्द पैनल को प्रच्छन्न तथा वर्तमान मांग दोनों पर विचार करने से नहीं रोकता ।¹⁰

(घ) "समान" उत्पाद प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी अथवा प्रतिस्थापनीय उत्पादों का एक हिस्सा हैं; सभी सामान्य उत्पाद परिभाषानुसार प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी या प्रतिस्थापनीय उत्पाद हैं; जबकि सभी "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी या प्रतिस्थापनीय उत्पाद" "समान" नहीं हैं ।¹¹

92. यूनाइटेड स्टेट्स का तर्क है कि कोरिया - अल्कोहल युक्त पेय के संबंध में हमारी रिपोर्ट पर पैनल की निर्भरता दो कारणों से सही नहीं है । पहला यह कि विवाद में एक पृथक तथ्यपूर्ण स्थिति में प्रावधान तथा समझौते (गैट 1994 का अनुच्छेद III:2) के एक अलग शब्द बंध ("प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी या प्रतिस्थापनीय") की व्याख्या शामिल है । ए टी सी के अनुच्छेद 6.2 में "प्रतिस्थापनीय" शब्द का प्रयोग प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी के साथ जोड़कर नहीं किया गया है, दूसरा कारण यह है कि उस मामले में अपीलीय निकाय ने उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धी संबंध का निर्णय लेने में बाजार के महत्व पर बल दिया क्योंकि वही एक मंच है जहां उपभोक्ता विभिन्न उत्पादों के बीच चुनाव करते हैं । यूनाइटेड स्टेट्स के अनुसार अपीलीय निकाय द्वारा दिए गए तर्कों के समुचित पठन से पता चलता है कि यदि कोई घरेलू उत्पाद बाजार में प्रवेश नहीं करता है तो उसे आयातित उत्पाद के साथ "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" नहीं माना जा सकता है भले ही वे दोनों उत्पाद "समान उत्पाद" माने जाएं ।

93. हम कोरिया-अल्कोहल युक्त पेय के संबंध में रिपोर्ट की संगतता और व्याख्या के संबंध में यूनाइटेड स्टेट्स के इन तर्कों से सहमत नहीं हैं ।

94. यूनाइटेड स्टेट्स के पहले तर्क के संबंध में उस मामले में हमारी रिपोर्ट के पठन से लक्षित होता है कि हमने "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" और "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्थापनीय" शब्दों का प्रयोग उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक संबंध के निर्धारण में उनके बीच कोई अंतर दिखाए बिना किया है ।¹² हम यह नहीं मानते हैं कि ए टी सी के अनुच्छेद 6.2 में "प्रतिस्थापनीय" शब्द के न होने से गैट 1994 के अनुच्छेद III:2 के तहत "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" शब्द की हमारी व्याख्या ए टी सी के अनुच्छेद 6.2 के अंतर्गत उस शब्द की व्याख्या हेतु अपने संदर्भगत अर्थ के रूप में असंगत हो जाती है ।

9 उपर्युक्त, पादटिप्पणी नुटि ! बुकमार्क परिभाषित नहीं पैरा 115

10 वही, पैरा 116

11 वही पैरा 118

12 वही, पैरा 114-116

95. अब हम ए टी सी के अनुच्छेद 6.2 के विशिष्ट संदर्भ में और हमारे समक्ष प्रस्तुत विवाद के संदर्भ में "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" शब्द की जाँच करेंगे। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि अनुच्छेद 6.2 में आयातों में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग को गम्भीर क्षति (अथवा उसके वास्तविक जोखिम) से बचाने के लिए रक्षोपाय की अनुमति दी गई है बशर्तें घरेलू उद्योग को आयातित उत्पाद की तुलना में समान और/अथवा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पाद का उत्पादन करने वाले उद्योग के रूप में अभिज्ञात किया जाए। "समान" और "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" मानदंड घरेलू उत्पाद से जोड़ी गई विशिष्टताएँ हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आयातित उत्पाद की तुलना में घरेलू उद्योग ही समुचित उद्योग है। अतः उनके प्रतिस्पर्धात्मक संबंध में आयातित और घरेलू उत्पाद के बीच निकटता का स्तर किसी आयातित उत्पाद के विरुद्ध रक्षोपाय की तर्कसंगतता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

96. "प्रतिस्पर्धी" शब्द के सामान्य अर्थ के अनुसार दो उत्पाद उस स्थिति में प्रतिस्पर्धात्मक संबंध में होते हैं जब वे वाणिज्यिक रूप से परस्पर विनिमेय हों अथवा वे बाजार में एक समान उपभोक्ता मांग को पूरा करने के वैकल्पिक उपाय प्रदान करते हों। "प्रतिस्पर्धी" किसी उत्पाद से जुड़ी एक विशिष्टता है और किसी उत्पाद की मौजूदा या भावी परिस्थिति में प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता को दर्शाती है। "प्रतिस्पर्धात्मक" शब्द और "प्रतिस्पर्धा करने वाले" अथवा "वास्तविक प्रतिस्पर्धा में" शब्दों के बीच का अंतर स्पष्ट होना चाहिए। इसका अर्थ "वास्तविक रूप से प्रतिस्पर्धा करने वाले से अधिक व्यापक है और इसमें प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता भी शामिल है। किन्हीं दो उत्पादों को परस्पर प्रतिस्पर्धात्मक मानने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे किसी एक समय में बाजार में एक-दूसरे के साथ वास्तविक प्रतिस्पर्धा में हों। वस्तुतः यह आवश्यक नहीं है कि जो उत्पाद प्रतिस्पर्धात्मक हों वे वस्तुतः किसी एक समय में बाजार में वास्तव में एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हों। इसके नियामक प्रतिबंध अथवा उत्पादकों के निर्णय जैसे अनेक कारण हो सकते हैं। अतः एक स्थायी दृष्टिकोण रखना सही नहीं है क्योंकि इसके कारण उत्पादों के बाजार में होने या न होने के आधार पर एक ही उत्पाद को किसी एक समय प्रतिस्पर्धात्मक माना जाएगा और किसी दूसरे समय प्रतिस्पर्धात्मक नहीं माना जाएगा।

97. यह जरूरी है कि "प्रतिस्पर्धात्मक" शब्द "प्रत्यक्ष रूप से" शब्द से जुड़ा हो, जो उस निकटता की मात्रा पर बल देता है, जो परस्पर तुलनीय उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक संबंध में अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। जैसाकि पहले नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग को किसी आयातित उत्पाद से प्रतिस्पर्धा से संरक्षित करने के लिए ए टी सी के अंतर्गत रक्षोपाय संबंधी कार्रवाई की अनुमति दी गई है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि ऐसी सुरक्षा तर्कसंगत हो, स्पष्ट रूप से यह प्रावधान किया गया है कि घरेलू उद्योग "समान" और/अथवा "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पादों" का उत्पादन कर रहा है। समान उत्पाद अनिवार्य रूप से बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक संबंध के उच्चतम स्तर पर होते हैं।¹³ अतः किसी रक्षोपाय की अनुमति देते समय सर्वप्रथम यह विचार किया जाता है कि क्या घरेलू उद्योग संबंधित आयातित उत्पाद की तुलना में

13 अपीलीय निकाय रिपोर्ट, कोरिया - अल्कोहल युक्त पेय, उपर्युक्त, पादटिप्पणी! बुकमार्क परिभाषित नहीं। पैरा 1118 अपीलीय निकाय रिपोर्ट कनाडा - पत्रिकाओं से संबंधित कुछ उपाय, डब्ल्यू टी/डी एस 31/ए बी/आर, 30 जुलाई, 1997 को पारित डी एस आर 1997:1 449, 473 पर। इन मामलों में हमने सूचित किया कि "समान" उत्पाद पूर्णतः प्रतिस्थापनीय है "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" उत्पाद प्रतिस्थापनीयता के उच्च लेकिन अपूर्ण स्तर द्वारा विशिष्टीकृत हैं।

समान उत्पाद का उत्पादन कर रहा है। यदि ऐसा है तो आयातित उत्पाद के विरुद्ध रक्षोपाय की तर्कसंगतता के संबंध में कोई संदेह नहीं हो सकता है।

98. तथापि, जब घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद आयातित उत्पाद की तुलना में "समान उत्पाद" न हो तब यह प्रश्न उठता है कि आयातित उत्पाद और "असमान" घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धात्मक संबंध कितना घनिष्ठ होना चाहिए। यह सर्वज्ञात है कि बाजार में असमान अथवा असदृश उत्पाद प्रत्यक्ष अथवा निकट प्रतिस्पर्धा से लेकर दूरस्थ अथवा अप्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा तक अनेक स्तरों पर प्रतिस्पर्धा करते हैं या कर सकते हैं। कोई दो उत्पाद जितने अधिक असमान या असदृश होंगे, बाजार में उनके बीच का प्रतिस्पर्धात्मक संबंध उतना ही दूरस्थ या अप्रत्यक्ष होगा। इसलिए संबंधित उत्पादों के असमान होने की स्थिति में उनके बीच प्रतिस्पर्धात्मक संबंध में आवश्यक निकटता के स्तर को द्योतित करने के लिए "प्रतिस्पर्धी" शब्द जानबूझ कर "प्रत्यक्ष रूप से" शब्द के साथ जोड़ा गया है जो उसे सीमित भी करता है। "प्रत्यक्ष रूप से" की इस परिभाषा के अंतर्गत किसी ऐसे घरेलू उद्योग की रक्षा के लिए रक्षोपाय नहीं किया जाएगा जो उन असमान उत्पादों का उत्पादन करता है जिनके आयातित उत्पादों के साथ केवल परोक्ष या गौण प्रतिस्पर्धात्मक संबंध हों।

17. कोरिया - अल्कोहल युक्त पेयों पर कर (डब्ल्यू टी/डी एस 75/ए बी/आर, डब्ल्यू टी/डी एस 84/ए बी/आर 18 जनवरी 1999)

114. "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी अथवा प्रतिस्थापनीय" पदबंध आयातित तथा घरेलू उत्पाद के बीच एक विशिष्ट प्रकार के संबंध को दर्शाते हैं। पदबंध के शब्दों से यह स्पष्ट है कि उस संबंध का सार यह है कि वे उत्पाद परस्पर प्रतिस्पर्धा में हैं। यह "प्रतिस्पर्धी" शब्द जिसका अर्थ "प्रतिस्पर्धा द्वारा विशिष्टीकृत" है और "प्रतिस्थापनीय" शब्द जिसका अर्थ "प्रतिस्थापन के योग्य" है और "प्रतिस्थापनीय" शब्द जिसका अर्थ "प्रतिस्थापन के योग्य" है, दोनों से स्पष्ट हो जाता है। प्रतिस्पर्धात्मक संबंध का संदर्भ अनिवार्य रूप से बाजार होता है क्योंकि वही एक मंच है जहाँ उपभोक्ता विभिन्न उत्पादों का चुनाव करते हैं। बाजार में प्रतिस्पर्धा एक परिवर्तनशील तथा विकासशील प्रक्रिया है। तदनुसार "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी या प्रतिस्थापनीय" पदबंध यह द्योतित करता है कि उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धा संबंध का विश्लेषण केवल मौजूदा उपभोक्ता अधिमानतओं के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। हमारे विचार से "प्रतिस्थापनीय" शब्द से यह अभिप्रेत है कि ऐसे दो उत्पादों के बीच अपेक्षित संबंध हो सकता है जो किसी एक समय में उपभोक्ताओं द्वारा स्थापनापन्न नहीं माने जाते हैं लेकिन वे एक-दूसरे के स्थापनापन्न होने के योग्य होते हैं।

115. अतः इस पदबंध के सामान्य अर्थ के अनुसार उस स्थिति में उत्पाद प्रतिस्पर्धी या प्रतिस्थापनीय होते हैं जब वे परस्पर विनिमेय हों अथवा यदि वे एक विशिष्ट आवश्यकता या रुचि को पूरा करने के वैकल्पिक उपाय प्रस्तुत करते हों जैसा कि पैनेल द्वारा नोट किया गया है। विशिष्ट रूप से जहाँ बाजार में व्यापार एवं प्रतिस्पर्धा हेतु नियामक प्रतिबंध होते हैं वहाँ मांग प्रच्छन्न होती है।

116. अनुच्छेद में "प्रतिस्पर्धी अथवा प्रतिस्थापनीय" शब्दों के साथ "प्रत्यक्ष रूप से" शब्द जोड़े गए हैं। अनुच्छेद III:2 के दूसरे वाक्य के संदर्भ में "प्रत्यक्ष रूप से", घरेलू तथा आयातित

उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक संबंध में निकटता का संकेतक है। हालांकि "प्रत्यक्ष रूप से" शब्द पैनल को निहित तथा वर्तमान मांग दोनों पर विचार करने से नहीं रोकता।

117. "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी अथवा प्रतिस्थापनीय" शब्द के सामान्य अर्थ के संबंध में उसके संदर्भ के साथ-साथ उसके उद्देश्य एवं प्रयोजन को भी शामिल किया गया है। संदर्भ के भाग के रूप में हम नोट करते हैं कि अनुच्छेद में यह प्रावधान है कि अनुच्छेद III:2 का दूसरा वाक्य "केवल उन्हीं मामलों में लागू होगा जहाँ प्रतिस्पर्धा शामिल थी। कोरिया के अनुसार भूतकाल को द्योतित करने वाले "थी" शब्द का प्रयोग पैनल को "संभावित प्रतिस्पर्धी" पर विचार करने का अवसर नहीं देता है। हालांकि हमारे विचार से "थी" शब्द का प्रयोग, किए जाने वाले विश्लेषण के कालवाचक क्षेत्र को अनिवार्य रूप से प्रभावित नहीं करता है। अनुच्छेद में उन परिस्थितियों का उल्लेख है जिनमें परिकल्पित कर "दूसरे वाक्य के प्रावधानों के असंगत माने जाएंगे। इस धारा का पहला हिस्सा सशर्त ("होगा") है और भूतकाल को द्योतित करने वाले शब्द का प्रयोग केवल व्याकरण को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इससे "प्रतिस्पर्धी" शब्द के कालवाचक पहलू पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

118. अनुच्छेद III:2 का पहला वाक्य भी इस शब्द का संदर्भगत हिस्सा है। "समान" उत्पाद प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी अथवा प्रतिस्थापनीय उत्पादों का हिस्सा है: सभी सामान्य उत्पाद परिभाषानुसार प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी या प्रतिस्थापनीय उत्पाद हैं; जबकि सभी "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी या प्रतिस्थापनीय उत्पाद" "समान" नहीं हैं। "समान उत्पादों की अवधारणा संकुचित होती है लेकिन प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी अथवा प्रतिस्थापनीय उत्पादों की श्रेणी अधिक व्यापक है। जहाँ पूर्णतः प्रतिस्थापनीय उत्पाद अनुच्छेद III:2 के पहले वाक्य के अंतर्गत आते हैं वहीं आंशिक रूप से प्रतिस्थापनीय उत्पाद का मूल्यांकन अनुच्छेद III:2 के दूसरे वाक्य के अंतर्गत किया जाता है।

119. अनुच्छेद III:2 के दूसरे वाक्य के संदर्भ में गैट 1994 का अनुच्छेद III:1 भी शामिल है। जैसाकि हमने जापान-अल्कोहल युक्त पेय के संबंध में अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है अनुच्छेद III:1 इस सिद्धांत को प्रतिपादित करता है "कि घरेलू उद्योग उत्पादन के संरक्षण में सक्षम होने के लिए आयातित अथवा घरेलू उत्पादों पर आंतरिक कर लागू नहीं किए जाने चाहिए।" इस सिद्धांत के आलोक में अनुच्छेद III का संपूर्ण उद्देश्य तथा प्रयोजन स्पष्ट होता है। जैसाकि हमने जापान-अल्कोहल युक्त पेय में कहा था:

अनुच्छेद III का व्यापक तथा मूल प्रयोजन आंतरिक कर एवं विनियामक उपायों के अनुप्रयोग में संरक्षणवाद को रोकना है। इस उद्देश्य के लिए अनुच्छेद III के अनुसार डब्ल्यू टी ओ के सदस्यों द्वारा घरेलू उत्पादों की तुलना में आयातित उत्पादों के लिए समान प्रतिस्पर्धात्मक परिस्थितियाँ प्रदान करना अपेक्षित है। इसके अतिरिक्त यह असंगत है कि आयातित एवं घरेलू उत्पादों के बीच कर संबंधी विभेद के "व्यापार प्रभाव", जैसाकि आयातों की मात्रा में लक्षित होता है, गौण अथवा नगण्य हैं; अनुच्छेद III किसी विशिष्ट व्यापार परिमाण की अपेक्षाओं की रक्षा नहीं करता बल्कि आयातित तथा घरेलू उत्पादों के बीच समान प्रतिस्पर्धात्मक संबंध की रक्षा करता है।

120. संरक्षणवाद को रोकने, समान प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति की आवश्यकता तथा समान प्रतिस्पर्धात्मक संबंध की अपेक्षाओं की रक्षा जैसे उद्देश्यों के मद्देनजर हम "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी या प्रतिस्थापनीय" शब्द के संबंध में एक स्थायी दृष्टिकोण नहीं रखते हैं। अनुच्छेद III के उद्देश्य तथा प्रयोजन से इस आशय की पुष्टि होती है कि "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी या प्रतिस्थापनीय" शब्द का दायरा उन स्थितियों तक सीमित नहीं किया जा सकता है जहाँ उपभोक्ता पहले ही उत्पादों को वैकल्पिक मानते हैं। यदि केवल प्रतिस्थापन के मौजूदा मामलों पर विश्वास किया जाए तो संरक्षणात्मक कराधान, जिसे प्रावधान द्वारा रोका जाना उद्दिष्ट है, अनुच्छेद III: 2 के उद्देश्य व प्रयोजन को विफल कर देगा। वस्तुतः पूर्व पैनलों ने यह स्वीकार किया है कि उपभोक्ता व्यवहार विशी रूप से संरक्षणवादी आंतरिक कराधान से प्रभावित हो सकता है। जापान-आयातित वाइन तथा अल्कोहल युक्त पेय के संबंध में सीमाशुल्क कर तथा लेबलिंग पद्धतियों ("1987 जापान - अल्कोहल") से संबंधित पैनलों का उदाहरण देते हुए जापान - अल्कोहल युक्त पेय से संबंधित पैनल ने यह अभिमत दिया कि "ऐसी कर प्रणाली जो आयातों के प्रति भेदभाव करती है, के परिणामस्वरूप घरेलू उत्पादों के लिए अधिमानता का सृजन तथा निर्धारण होता है।" जापान-अल्कोहल युक्त पेय से संबंधित पैनल ने यह भी कहा कि "(संरक्षणात्मक) कर प्रणाली वाले देश में उपभोक्ता सर्वेक्षणों में प्रतिस्थापनीय उत्पादों के बीच संभावित प्रतिस्पर्धा के स्तर को कम आंका जाएगा। तदनुसार कुछ मामलों में प्रचलन मांग की जांच करना अत्यधिक संगत होगा।

18. ऊपर उल्लिखित रिपोर्टों से यह प्रत्यक्ष है कि घरेलू उत्पाद की परिभाषा उत्पादोन्मुखी होनी चाहिए न कि उत्पादकोन्मुखी और परिभाषा घरेलू उद्योग के द्वारा उत्पादित उन उत्पादों पर आधारित होनी चाहिए जिनकी तुलना "समान या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" उत्पादों के साथ की जानी है। इसके अतिरिक्त "समान उत्पाद" "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पादों" का एक हिस्सा हैं। मोटे तौर पर 'प्रतिस्पर्धी' शब्द का अर्थ प्रतिस्थापन योग्य होता है और इसमें वे उत्पाद भी शामिल होते हैं जिनमें प्रतिस्पर्धा की संभावना मौजूद हो न कि केवल उत्पाद जो वर्तमान में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। "प्रत्यक्ष रूप से" शब्द प्रश्नगत उत्पादों के असमान होने की स्थिति में प्रतिस्पर्धात्मक संबंधों में आवश्यक निकटता को दर्शाता है। "प्रत्यक्ष रूप से" की इस परिभाषा के अंतर्गत उस घरेलू उद्योग को सुरक्षा प्रदान करने के लिए रक्षोपाय संबंधी कार्यवाही नहीं की जाएगी जो ऐसे असमान उत्पादों का उत्पादन करता है जिनका आयातित उत्पादों के साथ प्रतिस्पर्धात्मक संबंध दूरस्थ या विरल है।

19. अपीलीय निकायों द्वारा निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर प्रत्येक आयातित वस्तु की तुलना घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तुओं से की गई थी। यह पाया गया था कि यद्यपि अंतिम उत्पाद परस्पर प्रतिस्थापनीय हैं, तथापि इस संबंध में कोई विवाद नहीं है कि एसाइक्लिक अल्कोहल के प्रत्येक प्रकार का विशिष्ट अंतिम अनुप्रयोजन होता है। इन उत्पादों की प्रतिस्थापनीयता कम है और इसलिए वे वस्तुएँ जिनका आयात किया जाता है परन्तु घरेलू उद्योग उनका विनिर्माण नहीं करता, उन्हें "प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" नहीं माना जा सकता है।

20. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने विरोध किया है कि चूँकि उत्पाद अभिज्ञान अनुपयुक्त है, अतः जाँच समाप्त कर दी जाए और इसे अनुपयुक्त जाँच शुरूआत माना जाए। इस संबंध में यह नोट किया गया है कि विच्छेदनीयता के सिद्धांत स्वीकार्य सिद्धांत हैं और जब त्रुटि की प्रकृति सही

किए जाने योग्य हो तो कुछ वस्तुएँ जो "समान या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी" वस्तुएँ नहीं पाई गई हैं, को शामिल किए जाने के आधार पर जाँच को समाप्त करना तर्कसंगत नहीं है। तदनुसार विधिक अपेक्षाओं और मामले के तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान जाँच के दायरे को केवल एसाइक्लिक अल्कोहल के निम्नलिखित प्रकारों जिनका घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्माण किया जाता है, तक सीमित रखना उपयुक्त समझा गया है।

- i. सामान्य ब्यूटानॉल (एन बी ए के नाम से भी ज्ञात) या एन-ब्यूटाइल अल्कोहल, ब्यूटेन-1-ऑल, (29051300)
- ii. आइसो ब्यूटानॉल (आई बी ए के नाम से भी ज्ञात) या ब्यूटेन - 2- ऑल (29051490)
- iii. 2 - इथाइल हेक्सानॉल (2 - ई एच ए के नाम से भी ज्ञात) (29051620)

21. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुएँ सभी अनिवार्य विशेषताओं के संबंध में विभिन्न देशों से आयातित वस्तुओं के साथ तुलनीय है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित तथा आयातित की जा रही वस्तु में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्मों, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के रूप में आयातित वस्तु के साथ तुलनीय है। दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ताओं द्वारा दोनों का उपयोग एक-दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु को विचाराधीन उत्पाद के समान या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी माना जा रहा है।

22. सामान्य खण्ड अधिनियम, 1897 की धारा 13 में जिसे नीचे उद्धृत किया गया है:

धारा 13 लिंग एवं संख्या - सभी केन्द्रीय अधिनियमों तथा विनियमों में, जब तक विषय अथवा संदर्भ के प्रतिकूल न हो -

- (1) पुल्लिंग का आयात शब्दों में स्त्रीलिंग भी शामिल होंगे; और
- (2) एकवचन शब्दों में बहुवचन, और विलोमतः शामिल होंगे।

यह व्याख्या की गई है कि सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 में एकवचन शब्द 'वस्तु' के प्रयोग में 'वस्तुएं' प्रतिबाधित नहीं है। इसके अलावा दिनांक 27/3/2002 के आयोग विनिमयन (ईसी) सं. 560/2002 के माध्यम से यूरोपीय संघ द्वारा कतिपय इस्पात उत्पादों के आयात के विरुद्ध अनन्तिम रक्षोपाय उपाय से संबंधित मामले सहित विभिन्न रक्षोपाय जांचों में अनेक वस्तुओं को एक साथ समूहित किया गया है।

23. चूँकि तीनों वस्तुएं - एनबीए, आईबीए और 2-ईएचए वाणिज्यिक रूप से एसाइक्लिक अल्कोहल के नाम से जानी जाती हैं और इनका विनिर्माण एक ही संयंत्र में किया जाता है, अतः आर्थिक मानदण्डों का विश्लेषण भी तीन के समूह में किया गया है।

घरेलू उद्योग

24. इस भाषणे में रिकॉर्ड के अनुसार भारत में ऑक्सो अल्कोहल का केवल एक घरेलू उत्पादक अर्थात् आंध्र पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड हैं। इसी उत्पादक ने वर्तमान आवेदन प्रस्तुत किया है। भारत में इस उत्पाद के उत्पादन में वर्ष 2005-06 से 2008-09 के दौरान इस उत्पाद का योगदान 100% है। इस प्रकार आवेदक उत्पादक के उत्पादन का भारत में ऑक्सो अल्कोहल के उत्पादन में प्रमुख हिस्सा बनता है। इसके अलावा आवेदक के घरेलू उद्योग होने के विरुद्ध हितबद्ध पार्टियों ने कोई दावा नहीं किया है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि घरेलू उत्पादक आवेदक रक्षोपाय शुल्क नियमावली, 1997 की धारा 8ख(6) (ख) के अर्थ के भीतर अपेक्षित तथा परिभाषित घरेलू है और उसका प्रतिनिधित्व करता है।

अप्रत्यक्षित घटनाक्रम

25. वर्तमान वैश्विक मंदी, जिसका प्रभाव विकसित देशों में अत्यधिक है, के कारण विचाराधीन उत्पाद की मांग में गिरावट आई है। परिणामतः उत्पादकों को अत्यधिक अप्रयुक्त क्षमताओं का सामना करना पड़ रहा है। उदाहरणार्थ कमजोर मांग और अत्यधिक स्टॉक के बावजूद आईबीए की कीमतें अगस्त, 08 के दौरान 2150 डॉलर/मी.टन के सर्वाधिक स्तर पर पहुँच गई थी और आर्थिक उथल-पुथल के कारण मांग घटने से दिसम्बर, 2008 में घटकर 730 डॉलर/मी.टन रह गई थी।

26. प्रोपाइलीन उक्त उत्पाद के उत्पादन में प्रयुक्त किया जाने वाला प्रमुख कच्चा माल है। इसके अलावा, विभिन्न प्लास्टिसाइजर्स के उत्पादन में विभिन्न प्रकार के ऑक्सी अल्कोहल प्रयुक्त किए जाते हैं। प्रोपाइलीन, आईबीए, एनबीए, ईएचए, डीओपी (डीओपी प्लास्टिसाइजर का एक प्रकार है) की कीमतों और जनवरी, 2008 से मार्च, 2009 के बीच प्रोपाइलीन एवं ईएचए के बीच अन्तर की जाँच आईसीआईएस, एलओआर में प्रकाशित सूचना के आधार पर की गई थी। (आईसीआईएस, एलओआर एक अग्रणी व्यापार पत्रिका है, जिसमें इन सभी उत्पादों की कीमतें साप्ताहिक आधार पर प्रकाशित की जाती हैं। याचिकाकर्ता ने दावा किया है और किसी भी पार्टी ने यह खण्डन नहीं किया है कि इस पत्रिका में प्रकाशित कीमतें अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इन उत्पादों की कीमतों की संकेतात्मक कीमतें हैं)।

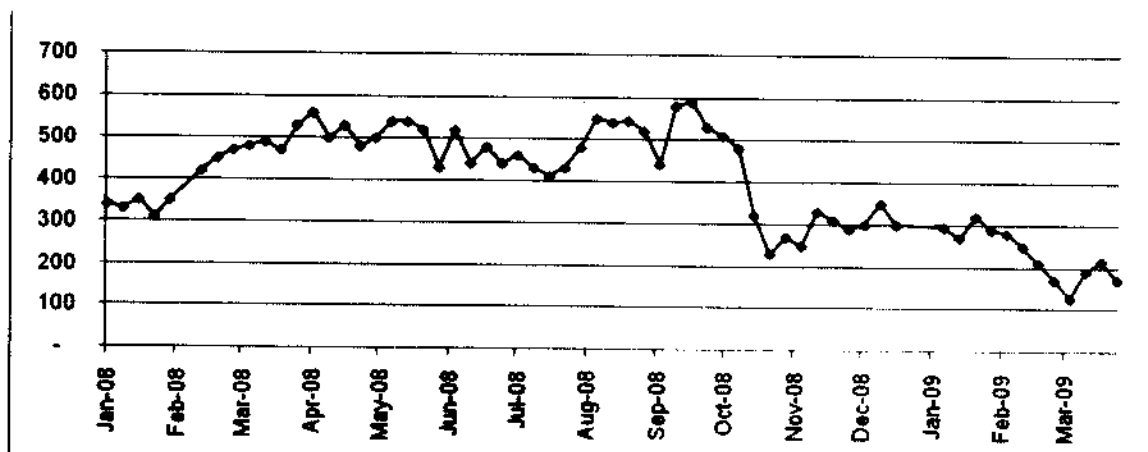
अम. डॉलर/मी. टन

दिनांक	BEEEOaEIEa					डेल्टा
	प्रोपाइलीन	आईबीए	एनबीए	2ईएचए	डीओपी	
4- जनवरी-08	1,280	1,290	1,450	1,620	1,580	340
11-जनवरी-08	1,300	1,290	1,450	1,630	1,590	330
18-जनवरी-08	1,300	1,290	1,450	1,650	1,590	350
25-जनवरी-08	1,350	1,290	1,450	1,660	1,600	310
1- फरवरी-08	1,320	1,260	1,450	1,670	1,600	350
15-फरवरी-08	1,260	1,250	1,450	1,680	1,600	420
22-फरवरी-08	1,240	1,250	1,450	1,690	1,640	450
29-फरवरी-08	1,230	1,250	1,450	1,700	1,640	470
7- मार्च-08	1,260	1,250	1,460	1,740	1,650	480
14-मार्च-08	1,260	1,230	1,460	1,750	1,650	490

21-मार्च-08	1,280	1,230	1,460	1,750	1,670	470
28-मार्च-08	1,260	1,230	1,460	1,790	1,700	530
4-अप्रैल-08	1,260	1,230	1,460	1,820	1,720	560
11-अप्रैल-08	1,320	1,230	1,460	1,820	1,750	500
18-अप्रैल-08	1,320	1,230	1,460	1,850	1,770	530
25-अप्रैल-08	1,400	1,290	1,460	1,880	1,800	480
2-मई-08	1,410	1,300	1,500	1,910	1,800	500
9-मई-08	1,410	1,300	1,500	1,950	1,810	540
16-मई-08	1,410	1,300	1,540	1,950	1,850	540
23-मई-08	1,480	1,320	1,540	2,000	1,900	520
30-मई-08	1,570	1,400	1,750	2,000	2,040	430
6-जून-08	1,600	1,500	1,900	2,120	2,050	520
13-जून-08	1,700	1,550	1,950	2,140	2,050	440
20-जून-08	1,700	1,550	1,950	2,180	2,050	480
27-जून-08	1,740	1,550	1,950	2,180	2,050	440
4-जुलाई-08	1,720	1,550	1,950	2,180	2,050	460
11-जुलाई-08	1,720	1,550	1,950	2,150	2,050	430
18-जुलाई-08	1,720	1,550	1,900	2,130	2,070	410
25-जुलाई-08	1,700	1,550	1,900	2,130	2,070	430
1-अगस्त-08	1,650	1,550	1,900	2,130	2,070	480
8-अगस्त-08	1,600	1,600	1,830	2,150	2,070	550
15-अगस्त-08	1,600	1,590	1,800	2,140	2,030	540
22-अगस्त-08	1,555	1,560	1,760	2,100	1,990	545
29-अगस्त-08	1,510	1,500	1,670	2,030	1,940	520
5-सितम्बर-08	1,510	1,430	1,650	1,950	1,920	440
12-सितम्बर-08	1,300	1,430	1,640	1,880	1,850	580
19-सितम्बर-08	1,200	1,380	1,640	1,790	1,710	590
26-सितम्बर-08	1,150	1,360	1,550	1,680	1,640	530
3-अक्तूबर-08	1,140	1,360	1,550	1,650	1,640	510
10-अक्तूबर-08	1,000	1,340	1,410	1,480	1,500	480
17-अक्तूबर-08	830	1,340	1,300	1,150	1,230	320
24-अक्तूबर-08	700	1,000	950	930	950	230
31-अक्तूबर-08	480	650	710	750	700	270
7-नवम्बर-08	480	650	620	730	740	250
14-नवम्बर-08	450	650	650	780	770	330
21-नवम्बर-08	470	650	650	780	770	310
28-नवम्बर-08	510	650	650	800	880	290
5-दिसम्बर-08	520	650	680	820	920	300
12-दिसम्बर-08	500	650	680	850	920	350
19-दिसम्बर-08	500	620	680	800	880	300
9-जनवरी-09	500	640	680	795	880	295
16-जनवरी-09	550	640	680	820	910	270
23-जनवरी-09	540	640	700	860	920	320
30-जनवरी-09	570	640	700	860	920	290
6-फरवरी-09	620	660	740	900	950	280

13-फरवरी-09	650	690	760	900	970	250
20-फरवरी-09	690	690	750	900	950	210
27-फरवरी-09	730	690	750	900	940	170
6-मार्च-09	725	690	750	850	970	125
13-मार्च-09	700	700	750	890	970	190
20-मार्च-09	700	720	760	915	1020	215
27-मार्च-09	750	735	800	920	1060	170

27. यह नोट किया जाता है कि उक्त अवधि के दौरान प्रोपाइलीन तथा ईएचए में कीमत अन्तर में तेजी से गिरावट आई हैं।



वैश्विक अर्थव्यवस्था में तेजी से आई गिरावट ने प्रमुख उद्योगों, विशेष रूप से विकसित अर्थव्यवस्थाओं के उद्योगों को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। आयातों में हुई वृद्धि का कारण प्रमुख देशों के पास सरप्लस क्षमता का होना है। भारतीय बाजार न केवल विशाल है अपितु अत्यंत स्थिर, निरंतर गतिशील है और वैश्विक आपूर्तिकर्ताओं को उल्लेखनीय बाजार अवसर प्रदान करता है। इस तथ्य से यह जाहिर है कि इस उत्पाद की मांग में निरंतर वृद्धि हो रही है। भारत में खपत दर्शाने वाली तालिका निम्नानुसार है :-

	आयातों की मात्रा, मी. टन में	मांग/खपत मी. टन
2005-06	41,061	83,497
2006-07	41,097	83,905
2007-08	58,981	101,907
2008-09	77602	113,210

जांच अवधि

26. डब्ल्यूटीओ के अजैटीना फुटवियर मामले अपीलीय निकाय के पैरा 130 में कहा गया है कि

'यद्यपि हम पैनल से सहमत हैं कि आयातों की 'संवर्धित मात्राएं' से आशय महज कोई भी वृद्धि नहीं हो सकता, तथापि हम पैनल की इस बात से सहमत नहीं हैं कि आयातों की प्रवृत्ति की जांच पांच वर्ष की ऐतिहासिक अवधि में की जानी उचित है। हमारे विचार में रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 2.1 तथा गैट 1994 के अनुच्छेद XIX: 1(क) दोनों में 'आयात किया जा रहा है' वाक्यांश को वर्तमान काल में प्रयुक्त करने का संकेत यह है कि सक्षम प्राधिकारियों द्वारा हाल ही के आयातों की जांच की जानी जरूरी है, न कि महज पिछले पांच वर्षों अथवा अनेक वर्षों की किसी अन्य अवधि के दौरान किए गए आयातों की प्रवृत्ति की। [1] हमारे विचार में वृद्धि अचानक हुई है और हाल ही में हुई है।'

[1] पैनल रिपोर्ट के पैरा 530 के फुटनोट में पैनल ने माना है कि वर्तमान काल प्रयुक्त किया जा रहा है, जिसमें कहा गया है कि 'इससे यह संकेत मिलता है कि जांच अवधि की शुरुआत चाहे जो हो, इसकी समाप्ति कुछ समय पूर्व होनी चाहिए (इस बात पर बल दिया गया है)। यहां हम पैनल से असहमत हैं। हमारा विचार है कि जांच अवधि की समाप्ति न केवल कुछ समय पूर्व होनी चाहिए अपितु समूची जांच अवधि ही कुछ समय पूर्व की होनी चाहिए।

27. चूंकि अपीलीय निकाय ने रक्षोपाय जांच की अपेक्षाओं का विस्तृत विवेचन किया है, अतः जांच परिणाम में उल्लिखित एवं परवर्ती मामलों में अपनाए गए सिद्धांतों का अनुपालन किया गया है। तदनुसार जांच अवधि में मार्च, 2009 तक की अवधि पर विचार किया गया है, जो कुछ समय पूर्व की अवधि है और जिसके संबंध में आंकड़े उपलब्ध हैं।

संवर्धित आयात

28. जांच शुरुआत सूचना में आईबीआईएस के आयात आंकड़ों पर विश्वास किया गया था। ऑक्सो अल्कोहल्स (एसआईक्लिक एल्कोहल्स) का भारत में आयात कोरिया गणराज्य, ईरान, सऊदी अरब, यूएई, जर्मनी, मलेशिया तथा यूएसए से किया जाता है। ऑक्सो अल्कोहल्स (एसआईक्लिक एल्कोहल्स) के आयातों में निरपेक्ष रूप से तथा घरेलू उत्पादन के सापेक्ष गिरावट का रुख देखा गया है। चूंकि उत्पाद का दायरा बदल गया है, अतः तीन उत्पादों से संबंधित आयात आंकड़ों पर विचार किया गया है। आयात के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ आंकड़ों का स्रोत नवम्बर, 2008 तक डीजीसीआईएस तथा परवर्ती महीनों के लिए डीओवी (मूल्यांकन निदेशालय) है।

29. **आयातों में निरपेक्ष वृद्धि:-** वार्षिक आंकड़ों के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ तथा वर्ष 2008-09 से संबंधित आयात आंकड़े निम्नानुसार हैं :-

वार्षिक आयात (मी. टन)

	आयातों की मात्रा मी. टन	प्रति माह किए गए आयात (मी. टन में)
2005-06	41,061	3,422
2006-07	41,097	3,425
2007-08	58,981	4,915
2008-09	72,397	6,033

वर्ष 2008-09 के दौरान आयात (मी. टन)

	आयातों की मात्रा मी. टन	प्रति माह किए गए आयात (मी. टन में)
अप्रैल-सितम्बर, 08	34019	5670
अक्टूबर 08 - मार्च 09	38378	6396
2008-09	72397	6033

30. यह देखा गया है कि इस उत्पाद के आयातों में हाल ही की अवधि में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। आयातों की औसत मात्रा जो वर्ष 2007-08 तक 4915 मी.टन/माह की सीमा में थी, बढ़कर 2008-09 के दौरान 6033 मी.टन/माह हो गई। प्रतिशत वृद्धि 23% है। अक्टूबर, 2008-मार्च, 2009 के दौरान आयातों में वृद्धि वर्ष 2007-08 की तुलना में अधिक हैं और मात्रात्मक रूप से 30.13% है। इन आंकड़ों से ज्ञात होता है कि आयातों में वृद्धि हुई है और आयातों की वृद्धि दर भी बढ़ी है।

31. भारत में कुल बिक्री की तुलना में संवर्धित आयात:

निम्नलिखित तालिका आयातों एवं आयातों के बाजार हिस्से की तथ्यात्मक सूचना प्रस्तुत करती है :-

वर्ष	आयातों की मात्रा (मी.टन)	भारतीय उद्योग द्वारा की गई बिक्री (मी.टन)	कुल बाजार (मी.टन)	कुल बाजार के प्रतिशत के रूप में आर्यत
क	ख	ग	घ = ख+ ग	ड. = ख/ घ*100 (%)
2005-06	41,061	42437	83498	49
2006-07	41,097	42808	83905	49
2007-08	58,981	42926	101907	58
अप्रैल-सितम्बर-08	34,019	19001	53020	64
अक्टू. 08 - मार्च 09	38,378	16607	54985	70
2008-09	72,397	35609	108006	67

यह देखा गया है कि ऑक्सो अल्कोहल्स के आयातों में भारत में इस उत्पाद की मांग के सापेक्ष उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आयातों का बाजार हिस्सा 2005-06 में 49% से बढ़कर अक्टूबर, 2008-मार्च, 2009 में 70% तथा वित्तीय वर्ष 2008-09 में 67% हो गया।

इस प्रकार यह देखा गया है कि

- (क) आयातों में निरपेक्ष रूप से वृद्धि हुई है।
- (ख) आयातों में सापेक्ष रूप से वृद्धि हुई है।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि नियमावली के अर्थ के भीतर, भारत में ऑक्सो अल्कोहल के आयातों में वृद्धि हुई।

गम्भीर क्षति तथा गम्भीर क्षति का खतरा

32. यह जांच की गई कि क्या उक्त वस्तुओं के संवर्धित आयातों से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हो रही है। यह भी जांच की गई कि क्या उक्त वस्तुओं के संवर्धित आयातों से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हुआ है। उक्त वस्तुओं के आयातों में अचानक तथा निरपेक्ष रूप से एवं भारत में उत्पादन व खपत के सापेक्ष अत्यधिक वृद्धि देखी गई है। यह नोट किया गया है कि आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई, जो तेजी से घटती आयात कीमतों पर हुई।

33. नियमावली के अन्तर्गत, घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति के बारे में निम्नलिखित उपबंधित है:

महानिदेशक अन्य बातों के साथ इस नियमावली के अनुबंध में निर्धारित सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग को हुई गंभीर क्षति अथवा गंभीर क्षति के खतरे का निर्धारण करेंगे।

34. नियमावली के अनुबंध में निम्नलिखित उपबंधित है :-

"यह निर्धारण करने के लिए कि क्या संवर्धित आयातों ने घरेलू उद्योग को कोई क्षति पहुंचाई है अथवा क्षति पहुंचने का खतरा है, इस जांच में महानिदेशक वस्तुनिष्ठ तथा संख्यात्मक स्वरूप के सभी संबंधित कारकों का मूल्यांकन करेंगे जो घरेलू उद्योग की स्थिति को प्रभावित करते हों और वह विशेष रूप से संबंधित वस्तु के आयातों में निरपेक्ष तथा सापेक्ष रूप से हुई वृद्धि की दर एवं मात्रा, संवर्धित आयातों द्वारा कब्जे में लिए गए घरेलू बाजार के हिस्से; बिक्री, उत्पादन, उत्पादकता, क्षमता उपयोग के स्तर में हुए परिवर्तनों, लाभ एवं हानि एवं रोजगार का मूल्यांकन करेंगे।"

35. इसके अलावा, अपीलीय निकाय ने अर्जेन्टीना फुटवेयर मामले में अभिमत व्यक्त किया था कि :-

अर्जेन्टीना फुटवेयर मामले का पैरा 139, डब्ल्यूटीओ का अपीलीय निकाय

"हमारे विचार में सभी संबंधित कारको, जो उस उद्योग की स्थिति को प्रभावित करते हैं, के संदर्भ में घरेलू उद्योग की समग्र स्थिति का मूल्यांकन करने पर ही यह निर्धारण किया जा सकता है कि क्या उस उद्योग की स्थिति में 'उल्लेखनीय रूप से समग्रतः गिरावट'

आई है। यद्यपि अनुच्छेद 4.2 (क) में तकनीकी दृष्टि से यह अपेक्षित है कि कतिपय सूचीबद्ध कारकों का आकलन किया जाना चाहिए, और यह भी कि अन्य सभी कारकों का भी आकलन किया जाना चाहिए, तथापि उक्त प्रावधान में यह निर्दिष्ट नहीं किया गया है कि ऐसे आकलन से क्या प्रदर्शित किया जाएगा। जाहिर है कि ऐसा मूल्यांकन विभिन्न मामलों में विभिन्न उद्योगों के लिए भिन्न-भिन्न होगा, जो मामले के तथ्यों और संबंधित उद्योग की स्थिति पर निर्भर होगा। यह जरूरी नहीं कि प्रत्येक सूचीबद्ध कारक का मूल्यांकन प्रत्येक कारक में 'गिरावट' प्रदर्शित करे। उदाहरण के लिए एक मामले में बिक्री, रोजगार तथा उत्पादकता में अत्यधिक गिरावट आई है। जो उस उद्योग की स्थिति में 'उल्लेखनीय समग्र गिरावट' दर्शाएगी; अतः गम्भीर क्षति के निष्कर्ष को न्यायोचित ठहराएगी। परंतु अन्य मामले में किसी कारक में गिरावट नहीं आई है, लेकिन पूरी तस्वीर उस उद्योग में 'उल्लेखनीय समग्र गिरावट' दर्शाती है। अतः इस बात की तकनीकी जांच के अलावा, कि क्या सक्षम प्राधिकारियों ने किसी मामले में सभी सूचीबद्ध कारकों और किसी अन्य संबंधित कारक का मूल्यांकन किया है; हमारा विचार है कि पैनल के लिए यह जरूरी है कि 'गम्भीर क्षति' के निर्धारण की समीक्षा में खोपाय करार के अनुच्छेद 4.1(क) में उल्लिखित 'गम्भीर क्षति' की परिभाषा पर विचार किया जाए।"

सूचीबद्ध आर्थिक मानदण्डों एवं अन्य मानदण्डों, जो 'गम्भीर क्षति' संबंधी निर्णय को प्रभावित करते हैं, के विश्लेषण में स्थापित सिद्धांतों एवं भारत में लागू कानून पर विचार किया गया है।

36. **उत्पादन:** उक्त अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन की जांच की गई है। घरेलू उद्योग की तीनों वस्तुओं का कुल उत्पादन निम्नानुसार रहा है :-

वार्षिक उत्पादन मी. टन में

अवधि	पूरी अवधि में उत्पादन	मासिक उत्पादन	% परिवर्तन
2005-06	42714	3,560	-
2006-07	42408	3,534	-0.72
2007-08	43047	3,587	1.51
2008-09	36747	3,062	(14.64)

वर्ष 2008-09 के दौरान उत्पादन मी. टन में

अवधि	पूरी अवधि में उत्पादन	मासिक उत्पादन	% परिवर्तन
अप्रैल-सित.-08	20546	3,424	(4.54)
अक्टूबर-08- मार्च 09	16201	2,700	(21.15)
2008-09	36747	3,062	(14.64)

वर्ष 2005-06 से वर्ष 2007-08 की अवधि के दौरान उक्त उत्पाद का प्रति माह का उत्पादन औसत समान स्तर पर रहा था। तथापि वर्ष 2008-09 के दौरान उत्पादन में अत्यधिक गिरावट आई है। अक्टूबर, 2008 मार्च, 2009 के दौरान यह गिरावट अत्यधिक रही है जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट है कि अप्रैल-सितम्बर, 2008 के दौरान मासिक उत्पादन 3,424 से घटकर 2,700 मी. टन रह गया तथा वर्ष 2007-08 के दौरान यह 3587 मी. टन था। उत्पादन में यह गिरावट बढ़ती हुई घरेलू मांग के कारण है।

37. क्षमता उपयोग:- घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया है।

अवधि	क्षमता उपयोग (%)
2005-06	88.99
2006-07	88.35
2007-08	89.68
2008-09	76.56

वर्ष 2008-09 के दौरान क्षमता उपयोग

अवधि	क्षमता उपयोग (%)
अप्रैल-सितम्बर, 2008	85.61
अक्टूबर-मार्च, 2009	67.50
2008-09	76.56

यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में वर्ष 2007-08 तक वृद्धि हो रही थी। तथापि अक्टूबर, 2008-मार्च, 2009 में यह अत्यधिक घटकर 67.50% रह गया जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2008-09 के दौरान क्षमता उपयोग पूर्ववर्ती वर्ष के 89.68% से घटकर 76.56% रह गया।

38. बिक्री: अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा की जांच की गई थी। वास्तविक स्थिति निम्नानुसार है:-

वार्षिक बिक्री (मी. टन)

वर्ष	बिक्री मी. टन	प्रति माह बिक्री मी. टन	मांग मी. टन
2005-06	42,437	3,536	83,498
2006-07	42,808	3,567	83,905
2007-08	42,926	3,577	101,907
2008-09	35,609	2,967	108,006

वर्ष 2008-09 के दौरान बिक्री

वर्ष	बिक्री मी. टन	प्रति माह बिक्री मी. टन	मांग मी. टन
अप्रैल-सितम्बर, 08	19,001	3,167	53,020
अक्टूबर-मार्च, 09	16,607	2,768	54,985
2008-09	35,609	2,967	108,006

यह देखा गया है कि बिक्री मात्रा वर्ष 2007-08 तक लगभग समान स्तर पर थी । तथापि उसमें अक्टूबर, 2008-मार्च, 2009 की अवधि के दौरान अत्यधिक गिरावट आई है । वर्ष 2008-09 की अवधि के दौरान बिक्री में गिरावट वर्ष 2007-08 की बिक्री की तुलना में 17% है। अक्टूबर, 2008-मार्च, 2009 के दौरान औसत मासिक बिक्री में वर्ष 2007-08 की मासिक बिक्री की तुलना में 22.6% की गिरावट आई हैं ।

घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा तथा बाजार में मांग की तुलना करते हुए यह नोट किया गया है कि जहां उत्पाद की मांग एवं आयातों में वृद्धि हो रही थी वही घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में गिरावट प्रदर्शित हो रही थी । घरेलू उद्योग बाजार में अपने उत्पादों की बिक्री करने में असमर्थ रहा था और बढ़ते हुए बाजार में संभावित लाभ प्राप्त करने के स्थान पर वह बाजार में आयातित वस्तुओं की बिक्री के कारण लाभ अर्जित नहीं कर सका ।

39. उत्पादकता — इसका कोई सबूत उपलब्ध नहीं है कि उत्पादन मशीनों की उत्पादकता से गिरावट आई है ।

40. घरेलू बिक्री कीमत में गिरावट: घरेलू बिक्री कीमतों का विश्लेषण करने के लिए औसत मासिक कारखाना द्वार कीमतें एकत्रित की गई हैं ।

कारखाना द्वारा कीमत/इकाई (रूपए/किग्रा.) 2- ईएच

	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्तू.	नव.	दिस.	जन.	फर.	मार्च
2007-08	71.6 9	84.7 0	83.6 1	81.1 3	77.11 1	79.2 2	80.9 2	87.1 4	82.4 7	79.9 0	80.7 4	82.4 2
2008-09	73.5 8	83.1 1	87.8 8	91.3 5	88.73 1	84.5 7	80.1 0	77.0 9	45.9 8	46.2 5	47.8 3	53.5 7

एनबीए

	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्तू.	नव.	दिस.	जन.	फर.	मार्च
2007-08	68.5 2	68.2 4	65.9 8	64.1 5	64.39 1	64.2 2	65.4 6	66.4 1	66.3 8	64.4 0	64.1 9	67.1 0
2008-09	69.5 6	77.2 0	83.1 7	86.8 8	83.83 1	76.8 2	71.4 8	61.5 6	43.3 5	43.9 2	46.9 9	51.7 0

आईबीए

	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्तू.	नव.	दिस.	जन.	फर.	मार्च
2007-08	65.3 7	69.6 2	61.1 1	62.9 3	64.10 1	65.1 6	65.4 1	52.5 3	52.5 9	50.6 6	51.7 4	66.7 6
2008-09	-	-	69.3 0	66.2 1	62.62 1	61.8 9	62.2 0	49.8 7	56.1 5	55.2 3	49.2 4	44.4 6

यह देखा गया है कि उत्पाद की बिक्री कीमत में सितम्बर, 2008 तक वृद्धि हुई परंतु तत्पश्चात अत्यधिक गिरावट आई। यद्यपि प्रमुख कच्ची सामग्री प्रॉपिलीन की कीमतों में भी गिरावट आई तथापि ऑक्सो-अल्कोहलों की कीमतों में आई गिरावट, प्रॉपिलीन की कीमतों में आई गिरावट से कहीं अधिक थी। परिणामस्वरूप अंशदान मार्जिनों में अत्यधिक गिरावट प्रदर्शित हुई है। चूंकि घरेलू उद्योग, उत्पाद की बिक्री हेतु आयात कीमतों का अनुसरण करता है, अतः यह स्पष्ट है कि कम कीमत के आयातों ने घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें इस सीमा तक घटाने के लिए विवश कर दिया कि अब घरेलू उद्योग वित्तीय घाटे का सामना कर रहा है।

	कच्ची सामग्री की लागत			अंशदान मार्जिन		
	एनबीए	आईबीए	ईएचए	एनबीए	आईबीए	ईएचए
2005-06	33.12	33.17	37.96	12.18	5.62	8.86
2006-07	36.81	37.92	42.58	25.00	20.49	20.32
2007-08	44.05	44.19	49.84	18.69	11.29	18.22
अप्रैल-सितम्बर, 08	76.59	38.43	57.79	0.99	25.16	26.92
अक्टूबर-मार्च, 09	43.42	39.39	54.45	3.16	11.95	5.68
2008-09	55.32	38.78	56.48	2.39	20.30	18.59

41. बाजार हिस्सा

भारत में मांग/खपत में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से की जांच की गई थी। वर्ष 2008-09 के दौरान वार्षिक बाजार हिस्से का विश्लेषण तथा बाजार हिस्से का विश्लेषण निम्नानुसार है:-

अवधि	घरेलू मांग में आवेदकों का हिस्सा (%)
2005-06	51
2006-07	51
2007-08	42
2008-09	33

अवधि	घरेलू मांग में आवेदकों का हिस्सा (%)
अप्रैल-सितम्बर, 08	36
अक्टूबर, 08-मार्च, 09	30
2008-09	33

यह नोट किया गया है कि वर्ष 2006-07 के बाद घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आनी शुरू हो गई थी। यह प्रवृत्ति सितम्बर, 2008 तक जारी रही। तथापि उसके पश्चात यह गिरावट बहुत अधिक हो गई जब घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा अप्रैल-सितम्बर, 2008 में 36% तथा वर्ष 2007-08 में 42% से अक्टूबर, 2008-मार्च, 2009 में यह 30% रह गया। बाजार हिस्से में यह गिरावट आयातों में वृद्धि के समय में हुई थी।

42. कीमत प्रभाव:- यह निर्धारित करने के लिए कि क्या विचाराधीन उत्पादों के आयात से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है, आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से की गई है। यह नोट किया गया है कि आयात कीमत तथा घरेलू

कीमतों के बीच का अंतर अत्यधिक पाया गया है जिससे यह साबित होता है कि उनके कारण घरेलू उद्योग, आयातों से कम प्रतिस्पर्धी हो गया है।

कारखाना द्वार कीमत/इकाई (रूपए/किग्रा.)

2- ईएच

	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्तू.	नव.	दिस.	जन.	फर.	मार्च
2007-08	71.6 9	84.7 0	83.6 1	81.1 3	77.11 1	79.2 2	80.9 2	87.1 4	82.4 7	79.9 0	80.7 4	82.4 2
2008-09	73.5 8	83.1 1	87.8 8	91.3 5	88.73 1	84.5 7	80.1 0	77.0 9	45.9 8	46.2 5	47.8 3	53.5 7

एनबीए

	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्तू.	नव.	दिस.	जन.	फर.	मार्च
2007-08	68.5 2	68.2 4	65.9 8	64.1 5	64.39 1	64.2 2	65.4 6	66.4 1	66.3 8	64.4 0	64.1 9	67.1 0
2008-09	69.5 6	77.2 0	83.1 7	86.8 8	83.83 1	76.8 2	71.4 8	61.5 6	43.3 5	43.9 2	46.9 9	51.7 0

आईबीए

	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्तू.	नव.	दिस.	जन.	फर.	मार्च
2007-08	65.3 7	69.6 2	61.1 1	62.9 3	64.10 1	65.1 6	65.4 1	52.5 3	52.5 9	50.6 6	51.7 4	66.7 6
2008-09	-	-	69.3 0	66.2 1	62.62 1	61.8 9	62.2 0	49.8 7	56.1 5	55.2 3	49.2 4	44.4 6

आयात सीआईएफ कीमत (रूपए/किग्रा.)

	एनबीए	आईबीए	2 ईएच
2005-06	40.24	44.99	44.85
2006-07	55.32	55.58	75.14
2007-08	59.75	60.86	53.44
सितम्बर तक	75.10	61.73	86.75
अक्तूबर से मार्च तक	53.07	38.58	50.88
2008-09	63.81	47.22	58.72

43. घरेलू बिक्री में लाभप्रदता

उत्पाद की घरेलू बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग के लाभों की जांच की गई थी।
वार्षिक लाभ तथा वर्ष 2008-09 की अवधि के दौरान हुए लाभ निम्नानुसार हैं :-

अवधि	कुल घरेलू बिक्री पर कर पूर्व लाभ	घरेलू बिक्री पर प्रति मी. टन लाभ/ (हानि)	घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत	घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत
2005-06	986.99	0.93	45.51	44.58
2006-07	6002.47	12.81	62.13	49.32
2007-08	5852.51	12.95	65.57	52.62
2008-09	2802.35	7.02	68.76	61.74

अवधि	कुल घरेलू बिक्री पर कर पूर्व लाभ	घरेलू बिक्री पर प्रति मी. टन लाभ/ (हानि)	घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत	घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत
अप्रैल-सितम्बर 08	2792.78	13.75	81.64	67.89
अक्तूबर-मार्च 09	9.57	(0.69)	54.02	54.71
2008-09	2802.35	7.02	68.76	61.74

यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता का अत्यधिक ह्रास हुआ है। घरेलू उद्योग के लाभों में इतनी अत्यधिक गिरावट हुई है कि जहां अप्रैल-सितम्बर, 2008 की अवधि में जहां घरेलू उद्योग 13.75 रूपए प्रति मी. टन, लाभ अर्जित कर रहा था वहीं अक्तूबर, 2008-मार्च, 2009 की अवधि के दौरान उसे 0.69 रूपए प्रति मी. टन के लगभग हानि हुई थी। यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में भी अत्यधिक गिरावट आई थी। तथापि कीमतों में आई गिरावट इतनी अधिक थी कि घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय घाटे का सामना करना पड़ा था।

44. निवेश पर आय

निवेश पर आय की प्रवृत्ति भी लाभप्रदता की पद्धति के समान ही रही थी जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है। अक्तूबर, 2008-मार्च, 2009 में निवेश पर आय में 0.17% की गिरावट आई है।

अवधि	आरओआई(%)	सूचीबद्ध
2005-06	8.21	100
2006-07	37.61	458
2007-08	36.65	446
2008-09	24.55	299

अवधि	आरओआई(%)	सूचीबद्ध
अप्रैल-सितम्बर-08	35.12	428
अक्तूबर, 08- मार्च 09	0.17	2
2008-09	24.55	299

45. रोजगार की हानि:- घरेलू उद्योग में रोजगार की कोई हानि नहीं हुई थी क्योंकि देश में श्रम कानून के अनुसार कर्मचारियों की नौकरी समाप्त करने की प्रक्रिया में बहुत समय लगता है। तथापि फैक्ट्रियों के बंद होने तथा अल्प उत्पादन से अप्रत्यक्ष रूप से बेरोजगारी बढ़ी है।

बढ़ते हुए आयातों एवं गंभीर क्षति के खतरे के बीच कारणात्मक संबंध:

46. वर्ष 2005-06 से मार्च, 2009 तक उपर्युक्त अवधि के लिए मानदण्डों के व्यापक मूल्यांकन से यह प्रदर्शित होता है कि गंभीर क्षति एवं गंभीर क्षति का आसन्न खतरा, बढ़ते हुए आयातों के कारण है। कारणात्मक संबंध का निर्धारण निम्नलिखित के आधार पर किया गया है :-

(क) उक्त उत्पादों के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अवधि के दौरान जहां आयातों में वृद्धि हुई है वही क्षति का संकेत देने वाले आर्थिक मानदण्डों अर्थात् बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, कीमतों पर दबाव, बाजार हिस्से में गिरावट प्रदर्शित हुई है।

(ख) इस संबंध में, अर्जेंटीना फुटवियर मामले में डब्ल्यूटीओ द्वारा अपीलीय निकाय के निष्कर्षों का निम्नानुसार संदर्भ लिया गया है

'हम नोट करते हैं कि अनुच्छेद 4.2 (क) के अनुसार सक्षम प्राधिकारियों द्वारा आयातों में वृद्धि की दर एवं मात्रा', 'बढ़ते आयातों द्वारा ले लिया गया घरेलू उद्योग का हिस्सा' तथा बिक्री, उत्पादन, उत्पादकता, क्षमता उपयोग एवं अन्य कारकों के स्तर में हुए परिवर्तन' का मूल्यांकन किया जाना अपेक्षित है। हमारे पास इस बात पर असहमत होने का कोई कारण नहीं है कि अनुच्छेद 4.2 (क) में 'दर एवं राशि' तथा 'परिवर्तन' शब्दों से पैनल का तात्पर्य है कि प्रवृत्तियाँ - क्षति कारकों एवं आयात, दोनों ही मामले में उनके समग्र स्तरों के ही समान महत्व रखती है।' हम पैनल के साथ इस बात पर भी सहमत हैं कि कारणात्मकता के विश्लेषण (महत्व सहित) में कारणात्मकता विश्लेषण एवं निर्धारण में आयातों (मात्रा एवं बाजार हिस्सा) के संचलन एवं क्षति कारकों के संचलन के बीच का संबंध ही प्रमुख होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, आयातों में वृद्धि तथा संगत क्षति कारकों में कमी के बीच अनुरूपता के संबंध में हम यह नोट करते हैं कि पैनल ने केवल यही कहा है कि 'कारणात्मकता' के उपस्थित होने पर यह 'सामान्यतः' होना चाहिए तथापि पैनल ने इस वक्तव्य को निम्नलिखित वाक्य में सिद्ध किया है:-

हालांकि ऐसी अनुरूपता अपने आप में कारणात्मकता (क्योंकि, अन्य बातों के साथ-साथ अनुच्छेद-3 में एक स्पष्टीकरण अपेक्षित है अर्थात् जांच परिणाम एवं तर्क आधारित निष्कर्ष) को सिद्ध नहीं कर सकती है उसकी अनुपस्थिति में कारणात्मक संबंध की मौजूदगी को लेकर गंभीर सन्देह उत्पन्न हो जाएंगे और इस बात का गंभीर विश्लेषण करना अपेक्षित होगा कि कारणात्मकता तो अब भी मौजूद क्यों है। परिणामस्वरूप जहां आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है वहीं घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट बढ़ते हुए आयातों के कारण है। सितम्बर, 2008 तक बाजार हिस्से में हुई गिरावट देश में घरेलू आपूर्ति की तुलना में अधिक मांग के कारण है; परवर्ती अवधि में हुई गिरावट स्पष्ट रूप से कम कीमत वाले आयातों की ऐसे समय में हुई वृद्धि के कारण है जिस समय में घरेलू उद्योग अप्रयुक्त क्षमताओं का सामना कर रहा था।'

(ग) भारतीय बाजार में मांग: निम्नलिखित तालिका में पूर्ववर्ती तीन वर्षों के दौरान घरेलू बाजार का आकार दर्शाया गया है;

वर्ष	आयात मात्रा (मी.टन)	भारतीय उद्योग द्वारा बिक्री (मी.टन)	कुल बाजार (मी.टन)
क	ख	ग	घ = ख+ ग
2005-06	41,061	42437	83498
2006-07	41,097	42808	83905
2007-08	58,981	42926	101907
2008-09	72,397	35609	108006

वर्ष 2008-09 के दौरान बाजार का आकार

वर्ष	आयात मात्रा (मी.टन)	भारतीय उद्योग द्वारा बिक्री (मी.टन)	कुल बाजार (मी.टन)
क	ख	ग	घ = ख+ ग
अप्रैल-सित.-08	34,019	19001	53020
अक्तू. 08 - मार्च 09	38,378	16607	54985
2008-09	72,397	35609	108006

तालिका से यह स्पष्ट है कि वर्ष 2008-09 के दौरान भारत के बाजार हिस्से में 60999 मी.टन की वृद्धि हुई परंतु बिक्री 7317 मी.टन तक घट गई। बढ़ते हुए आयातों ने न केवल घरेलू उद्योग के बाजार के 7317 मी. टन पर कब्जा कर लिया बल्कि उन्हें बढ़ते हुए बाजार में अपना हिस्सा प्राप्त करने से भी रोका।

(घ) बढ़ते हुए आयातों की तुलना में बिक्री की हानि: वर्ष 2008-09 के दौरान घरेलू उद्योग को बिक्री में 7317 मी. टन का घाटा हुआ तथा उसी अवधि के दौरान आयातों में 13416 मी. टन की वृद्धि हुई जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि दोनों के बीच प्रत्यक्ष संबंध है।

(ङ.) डेल्टा की तुलना में बिक्री एवं लाभप्रदता की हानि: पैरा 26 में किए गए 'डेल्टा' विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि बिक्री में तब गिरावट आई जब डेल्टा में भी गिरावट आई। उसी अवधि के दौरान आयात कीमतों में भी गिरावट आ रही थी। बिक्री में हानि, उत्पादन में ह्रास के कारण वर्ष 2008-09 की अवधि के दौरान लाभप्रदता में अत्यधिक गिरावट उसी समय हुई जब आयातों में वृद्धि हो रही थी। यदि आयात पूर्ववर्ती वर्ष के स्तर तथा पूर्ववर्ती वर्ष के 'डेल्टा' पर होते तो स्थिति कुछ अलग होती।

(च) यह तर्क दिया गया था कि घरेलू उद्योग मांग को पूरा नहीं कर सकता और आयात अपरिहार्य है। उपर दर्शाए गए आंकड़ों के अनुसार आयातों से मांग के 50% की पूर्ति हो रही थी और शेष को घरेलू उद्योग द्वारा पूरा किया जा रहा था। वर्ष 2008-09 के दौरान जब बाजार के आकार में वृद्धि हुई तो आयातों में ऐसी कीमतों पर वृद्धि हुई कि

उससे घरेलू उद्योग का हिस्सा, आयातों को चला गया। घरेलू उद्योग ने प्रतिक्रिया स्वरूप लाभप्रदता की कीमत पर अंतरराष्ट्रीय कीमतों के समतुल्य होने के लिए कीमतों में कटौती की परन्तु 'डेल्टा' स्तर पर कीमत कटौती को बनाए रखना संभव नहीं है जिससे प्रचालन अव्यवहार्य हो जाता है। इसके अलावा ऐसी कम कीमतों पर आयात, विस्तार की योजना को भी, जो कार्यान्वयनाधीन है अव्यवहार्य बना देते हैं।

(छ) **इकाईयों का संवरण** — संवरण के दौरान की गई जाँच के दौरान यह पाया गया कि 8-4-2007 से 17-4-2007 और 29-4-2008 से 9-5-2008 तक वार्षिक अनुरक्षण हेतु इकाई बन्द रही। परन्तु 9-11-2008 से 7-12-2008 तक इकाई के बन्द रहने का कारण मूल्यों का तीक्ष्ण रूप से गिरना था जिसके चलते परिचालन अलाभकारी हो गया।

(ज) **अन्य कारक:** विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू बाजार से संबंधित आंकड़े लिए गए हैं और इसलिए, निर्यात यदि कोई हो, से विश्लेषण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। श्रमिक अथवा प्रबंधन संबंधी किसी समस्या की कोई सूचना नहीं है। अतः ऐसा कोई अन्य कारक मौजूद नहीं है जिसका घरेलू उद्योग को हुई गंभीर क्षति अथवा गंभीर क्षति के खतरे से कोई उल्लेखनीय संबंध हो।

अतः यह निष्कर्ष निकाला गया है कि उक्त उत्पाद के बढ़ते हुए आयातों से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हो रही है तथा गंभीर क्षति का खतरा है। गंभीर क्षति तथा गंभीर क्षति के खतरे का कारण बढ़ती हुआ आयात है।

47. समायोजन योजना: आवेदक क्षमता को लगभग 72000 मी. टन तक बढ़ा कर क्षमता में विस्तार कर रहे हैं। यह विस्तार कार्य जून, 2010 तक समाप्त हो जाने की आशा है। तकनीकी एवं वाणिज्यिक व्यवहार्यता सहित विस्तार का ब्यौरा मंगवाया गया था। यह पाया गया था कि कम्पनी पहले ही इस विस्तार योजना हेतु काफी व्यय कर चुकी है। यह भी पाया गया है कि कम्पनी ने योजना की तकनीकी एवं वाणिज्यिक व्यवहार्यता संबंधी विश्लेषण किया था, जिसे वित्तीय संस्थाओं द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है, और उन्होंने एक बड़ी राशि का निवेश करने हेतु सहमति प्रदान कर दी है। यह नोट किया गया है कि कम्पनी द्वारा तैयार की गई समायोजन योजना तर्क संगत एवं व्यवहार्य है। आवेदक ने कीमत कटौती संबंधी अध्ययन भी किया है। इसके अलावा, आवेदक इन समायोजन योजनाओं हेतु अर्द्धवार्षिक कृत कार्यवाई रिपोर्ट भी प्रस्तुत करेंगे। समायोजन योजना पर क्रमिक आधार पर शुल्क उदारीकरण हेतु विचार किया गया है।

सार्वजनिक हित

48. कुछ पार्टियों ने यह तर्क दिया है कि रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने से लोक हित पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा क्योंकि अनेक अंतिम प्रयोक्ता उद्योग बंद हो सकते हैं। यह तर्क दिया गया है कि ऑक्सो अल्कोहल पर रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने से वह महँगी हो जाएगी और यह उपभोक्ता के हित के प्रतिकूल होगा। तथापि, इस आशय का ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है जिससे रक्षोपाय शुल्क के प्रतिकूल प्रभाव का पता चल सके। इसके अलावा, यह देखा गया है कि “लोक हित” अभिव्यक्ति में केवल उपभोक्ता का हित ही शामिल नहीं है। “लोक हित” अभिव्यक्ति एक ऐसा व्यापक पद

है जिसके दायरे में व्यापक समुदाय के हित को ध्यान में रखते हुए समाज कल्याण आता है। अप्रत्यक्ष कर होने के कारण रक्षोपाय शुल्क से विभिन्न आर्थिक प्रचालकों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि बाजारी अर्थव्यवस्था में अलग-अलग आर्थिक प्रचालकों के विरोधाभासी हित मौजूद हैं।

49. जनवरी, 09-मार्च, 09 की अवधि के दौरान भारत में प्रचलित कीमतों, अंतर्राष्ट्रीय कीमतों, कच्ची सामग्री की कीमतों और घरेलू उद्योग की बिक्री लागत के विश्लेषण पर विचार किया गया है। इसके अलावा, भारतीय उद्योग द्वारा कुल उत्पादन क्षमता और भारत में माँग का भी विश्लेषण किया गया है। घरेलू उद्योग में वर्तमान लगभग आधी माँग शामिल है और इस समूची माँग की पूर्ति विस्तार कार्य पूरा होने की बाद की जा सकती है। यह सार्वजनिक हित में है कि भारतीय उत्पादन और आयातों के बीच सतत प्रतिस्पर्धा बनी रहे ताकि भारतीय अंतिम प्रयोक्ता प्रतिस्पर्धी कीमत पर उत्पाद प्राप्त कर सकें।

50. वर्तमान मामले में कच्ची सामग्री की लागत, लागत का पर्याप्त भाग होती है और कच्ची सामग्री की कीमतें अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के अनुसार बदलती रहती है। इस मामले में “डेल्टा” उस स्तर से कम पर आ गया है जिसे बरकरार रखा जा सकता है। इसके अलावा, संस्तुत रक्षोपाय शुल्क उस सीमा तक रहा है जिस सीमा तक क्षति रहित कीमत को निष्प्रभावी किया जा सके और इस प्रकार आयात से प्राप्त प्रतिस्पर्धा को जीवित रखा जा सके। इसके अलावा, संस्तुत शुल्क आयात के अनुकूल स्तर पर रखा गया है ताकि ऑक्सो अल्कोहल की कीमतों को भारत में प्रतिस्पर्धी रखा जा सके।

51. तथापि, यदि घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहती है तो उससे घरेलू उद्योग बंद हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप एक प्रमुख रसायन “ऑक्सो अल्कोहल” का विनिर्माण भारत में नहीं होगा जिससे “ऑक्सो अल्कोहल” के प्रयोक्ता आयातों पर पूर्णतः निर्भर हो जाएंगे।

52. उपर्युक्त के मद्देनजर यह माना जाता है कि रक्षोपाय शुल्क लगाया जाना सार्वजनिक हित और खासकर अंतिम प्रयोक्ता के हित में होगा और इनकी बेहतर रक्षा की जा सकेगी।

53. विकासशील देश — विकासशील देशों से आयात के प्रतिशत की जाँच की गई। ब्राजील, इण्डोनेशिया, ईरान, मलेशिया, साउदी अरेबिया और साउथी अफ्रीका जो भारत के आयात का क्रमशः 4प्रतिशत, 7प्रतिशत, 7प्रतिशत, 8प्रतिशत, 7प्रतिशत और 13 प्रतिशत भाग है, इनके अतिरिक्त अन्य देशों से भारत में 3प्रतिशत से भी कम आयात किया जाता है। अतः विचाराधीन उत्पाद का आयात जो ब्राजील, इण्डोनेशिया, ईरान, मलेशिया, साउदी अरेबिया और साउथ अफ्रीका के अतिरिक्त अन्य विकासशील देशों से किया जा रहा है, उनपर कस्टम टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 8बी के अन्तर्गत रक्षोपाय शुल्क नहीं लगाया जा सकता।

निष्कर्ष एवं सिफारिश:

उपर्युक्त जांच परिणाम को देखते हुए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि भारत में ऑक्सो अल्कोहल के बढ़ते आयातों के कारण ऑक्सो अल्कोहल के घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति हुई है और गंभीर क्षति होने का खतरा है तथा भारत में ऑक्सो अल्कोहल के आयातों पर 3 वर्षों की अवधि के लिए रक्षोपाय शुल्क लागू करना सार्वजनिक हित में होगा। रक्षोपाय शुल्क के निर्धारण हेतु जिससे घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति से बचाया जा सके और सकारात्मक समायोजन को बढ़ावा दिया जा सके, बिक्री मूल्य, लगाई गई पूँजी पर उचित प्रतिलाभ, आयात मूल्य और घरेलू मार्केट में प्रतिस्पर्धा बनाए रखने हेतु उचित आयात इत्यादि मुद्दों को ध्यान में रखा गया है।

54. इस बात के मद्देनजर कि घरेलू उद्योग को पुनः व्यवस्थित हो पाने में 3 वर्ष लगेगे, ऑक्सो अल्कोहल के बढ़ते आयातों द्वारा गंभीर क्षति तथा क्षति के खतरे से घरेलू उद्योग को सुरक्षा प्रदान करने के लिए न्यूनतम आवश्यक उपाय के रूप में भारत में ऑक्सो अल्कोहल के आयातों पर 3 वर्षों की अवधि के लिए नीचे विनिर्दिष्ट दरों पर रक्षोपाय शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

वर्ष	रक्षोपाय शुल्क
प्रथम वर्ष	10 प्रतिशत एडवोलरम
द्वितीय वर्ष	7.5 प्रतिशत एडवोलरम
तृतीय वर्ष	5 प्रतिशत एडवोलरम

55. चूंकि ब्राजील, इण्डोनेशिया, ईरान, मरेशिया, साउदी अरेबिया और साउथ अफ्रीका के अतिरिक्त अन्य देशों से पृथक-पृथक आयात 3 प्रतिशत से अधिक नहीं है अतः इन देशों पर कस्टम टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 8बी के तहत रक्षोपाय शुल्क लागू नहीं किया जाएगा।

[फा. सं. डी-22011/38/2008]

एस. एस. राणा, महानिदेशक (रक्षोपाय)

MINISTRY OF FINANCE**(Department of Revenue)****(OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF SAFEGUARDS, CUSTOMS AND CENTRAL EXCISE)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 27th May, 2009

G.S.R. 361(E).—Having regard to Customs Tariff Act, 1975, as amended, and the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty), Rules, 1997 thereof;

A. Procedure

1. An application was filed under Rule 5 of the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 [hereinafter referred to as "Safeguard Rules"] by Andhra Petrochemicals Limited, seeking imposition of Safeguard Duty on imports of Oxo Alcohols (Acyclic . Alcohols) into India alleging that increased imports of Oxo Alcohols (Acyclic . Alcohols) was causing and/or threatening to cause serious injury to the domestic producers of Oxo Alcohols (Acyclic . Alcohols) in India. Having satisfied that the requirements of Rule 5 were met, safeguard investigation against imports of Oxo Alcohols (Acyclic . Alcohols) was initiated vide notice of initiation dated 16th January 2009 published in the Gazette of India, Extraordinary on the same day.
2. A copy of the notice was sent to the governments of major exporting countries through their embassies in New Delhi. A copy of initiation notice was also sent to all known interested parties listed below:

Domestic Producers

The Andhra Petrochemicals Limited,
202-A, My home Sarovar Plaza
Secretariat Road, Saifabad,
Hyderabad, 500 063

Importers

M/s KLJ Plasticizers/ Silvassa Plast KLJ House, 63, Rama Marg Najafgarh Road NEW DELHI - 110 015	M/s PCL Oil & Solvents Ltd. M-105, Cannaught Place NEW DELHI - 110 001
M/s Payal Polymers 24/E, Netaji Subhash Marg Daryaganj, NEW DELHI - 110 002	M/s API Industrial Corporation Tollstoy Lane, 1st Floor Connaught Place, NEW DELHI-110 001

M/s Rachna Plasticizers Plot No. 143, Shanti Niketan 3rd Floor, S V Road Opp. Khar Police Station Khar (W), MUMBAI - 400 052	M/s Lalitha Chem Inds. Pvt. Ltd. G-42, 'D' Wing, Dewan Apts No.II Co-Op. Housing Society Ltd. Vasai (E), Dist. Thane - 401 210
M/s Kansai Nerolac Paints Ltd. Nerolac House Ganpatrao Kadam Marg, Lower Parel, MUMBAI - 400 013	M/s Aurobindo Pharma Ltd. Plot No.2, Maitri Vihar, Ameerpet HYDERABAD
M/s Lubrizol India Pvt. Ltd. 9/3, Thane-Belapur Road Turbhe, NAVI MUMBAI - 400 705	M/s Alkyl Amines Chemicals Limited 401-407, Nirman Vyapar Kendra Plot No.10, Sector 17, Vashi, Navi Mumbai - 400 703
C J Shah & Co. (Importers & Distributors) 809, 'Hemkoot' Opp. Capital Commercial Centre, Ashram Road AHMEDABAD - 380 009	Ramniklal S. Gosalia & Co. National House 608, B J Marg, Jacob Circle MUMBAI - 400 011

Users

M/s KLJ Plasticizers/ Silvassa PlastKLJ House, 63, Rama Marg Najafgarh Road NEW DELHI - 110 015	M/s PCL Oil & Solvents Ltd. / Ritzy Polymers M-105, Connaught Place NEW DELHI - 110 001
M/s Payal Polymers 24/E, Netaji Subhash Marg Daryaganj, NEW DELHI - 110 002	M/s N.K. Polymers Tollstoy Lane, 1st Floor Connaught Place NEW DELHI-110 001
M/s Rachna Plasticizers Plot No. 143, Shanti Niketan 3rd Floor, S V Road Opp. Khar Police Station Khar (W), MUMBAI - 400 052	M/s Lalitha Chem Inds. Pvt. Ltd. G-42, 'D' Wing, Dewan Apts No.II Co-Op. Housing Society Ltd. Vasai (E), Dist. Thane - 401 210
M/s Nagarjuna Agrichem Ltd. Plot No.61, Nagarjuna Hills, Panjagutta HYDERABAD - 500 082	M/s Sreepathi Pharmaceuticals Plot No.22 B, H.No.8-2-293/82/A/22/B Road No.2, Jubilee Hills HYDERABAD - 500 033
M/s Sri Krishna Drugs C-4, Industrial Area, Uppal HYDERABAD	M/s Sreenivasa Pharma (P) Limited Plot No. 66/B-2, Phase I IDA, Jeedimetla, HYDERABAD - 500 055
Dr. Reddy's Laboratories Ltd. 8-2-76/1/B, 2nd Floor, Ashoka Hitech Ch.Road No.2, Banjara Hills HYDERABAD - 500 034	M/s Dhupar Chemicals Private Ltd. Village - Sandila, Mandhana Bithoor Road, Kanpur (UP)

M/s Berger Becker Coating Private Ltd. RPL House, 19, D D A, Commercial Complex, Kailash Colony Extn. NEW DELHI - 110 048	M/s Matrix Laboratories Ltd. No.1-1-151/1, IV Floor, Sairam Towers Alexander Road, SECUNDERABAD - 500 003
M/s Merck Limited Shiv Sagar Estate 'A' Dr. A B Road, Worli MUMBAI - 400 018	M/s Neelam Aqua & Speciality Chem Pvt H-337 (D), Street # 17, VKI Area JAIPUR - 302013 (RAJ)
M/s Divi's Laboratories Ltd. Divi Towers, 7-1-77/E/1/303 Dharam Karan Road, Ameerpet HYDERABAD - 500 016	M/s. Hyderabad Chemicals Limited A-24/25, APIE, Balanagar HYDERABAD - 500 037
M/s Aurobindo Pharma Ltd. Plot No.2, Maitri Vihar, Ameerpet HYDERABAD - 500 038	M/s Mahidhara Chemicals G-4, Sai Pithambaram Residency East Marredpally, SECUNDERABAD - 500 026
M/s Vivimed Labs. Limited II Floor, Veeranag Towers Habsiguda, HYDERABAD - 500 007	Government of Opium & Alkaloid Works Ministry of Finance, Deptt. Of Revenue Office of The General Manager Govt. of Opium & Alkaloid Works NEEMUCH - 458 441 (MP)
Heavy Water Plant Department of Atomic Energy PO Vikrampur, Dist. Angul ORISSA - 759 106	M/s Kansai Nerolac Paints Ltd. Nerolac House Ganpatrao Kadam Marg, Lower Parel MUMBAI - 400 013
M/s Alkyl Amines Chemicals Limited 401-407, Nirman Vyapar Kendra Plot No.10, Sector 17, Vashi, Navi Mumbai - 400 703	Elantas Beck India Ltd. Beck House, Dample Path Off. Low College Road Pune- 411004
Dai- ichi Karkaria Ltd. Liberty Building, Sir Vithaldas Thakersey Marg, Mumbai- 400020	Galaxy Surfactants Ltd. C-49/2, TTC Industrial Area Pawane, Navi Mumbai-400703
Fine Organic Inds.(Mumbai)P.Ltd. Fine Organics Industries Fine House, Anandji street, Off. M.G. Road, Ghatkoper (E) Mumbai- 400077, India	M/s Atul Limited Atul, 396020, Gujarat, India

Exporters

L G Chemicals Ltd. Specialty Sales TFT, Teachers Pension, Building, 17, F, Yoidodong, Yongdungpu-gu	M/s Arak Petrochemical Company No.767, Enghaleb Ave, Tehran, Iran
--	---

Seol - 150 742. Korea	
M/s Al-Jubail Fertilisers Company Jubail Industrial City PO Box 10046, Al Jubail - 31961 Saudi Arabia	M/s Iran Petrochemicals Commercial Company Add: No.1339 Vanak Sq. Vali Asr Ave. TEHRAN-IRAN , P.O.Box: 19395/4619 , Zipcode : 19697
M/s Saudi Basic Industries Corporation (SABIC) P O Box 69090, Riyadh SAUDI ARABIA	M/s Dow Europe GMBH PO Box 16043 Dubai, UAE
M/s Huls Aktiengesellschaft Weissfrauenstrasse 9, D-60311 Frankfurt am Main, Germany	M/s BASF Petronas Chemicals C-802, Centra Tower Wisma Consplant, Jalan S S 16/4 Subang, Jaya 47500 Selangor, Malaysia
M/s. Sasol Middle East PO Box 61089 (Division of Sasol Chemical Industries Ltd.) Jebel Ali Free zone, Dubai United Arab Emirates (UAE)	M/s Helm Ag. Nordkanalstrasse 28 D-20097 Hamburg, Germany
M/s Eastman Chemical Company P O Box # 431 Kingsport TN 37662 U S A	M/s ICC Chemical Corporation 460, Park Avenue New York, NY 10022 USA
Exxon Mobil Chemical International Services Ltd. 13501, Katy Freeway Houston, TX 77029-1398 USA	

3. Questionnaires were also sent, on the same day, to all known domestic producers and importers and exporters and they were asked to submit their response within 30 days.
4. Request to consider as interested parties were received from a number of parties and all the requests were accepted. Requests for an extension of time to submit their replies were also made by a number of interested parties, and after taking into account the time limits for completing the investigation within the prescribed period, requests for extension of time were allowed in all cases and the parties concerned were accordingly informed.
5. A public hearing was held on 25th March 2009, notice for which was sent on 23rd February, 2009. All interested parties who participated in the public hearing were

requested to file a written submission of the views presented orally in terms of sub rule (6) of rule 6 of the Custom Tariff (Identification and Assessment of Safeguard duty) Rules, 1997. Copy of written submission filed by one interested party was made available to all the other interested parties. Interested parties were also given an opportunity to file rejoinder, if any, to the written submissions of other interested parties. All the views expressed by the interested parties either in the written submissions or in the rejoinders were examined and have been taken into account in making appropriate determination.

6. The information presented by domestic producers with regard to their production, sales, costs and prices, profits, and other injury parameters were verified by on-site visits to the plants of the domestic producers to the extent considered necessary. Further, the cost data has been also verified and certified by independent cost accountant. The non confidential version of verification report is kept in the public file.

Views of Domestic Producers In India

7. The domestic producers have stated as follows:
 - (a) The product under consideration in the present case is Acyclic Alcohols produced and sold globally. All types of Acyclic Alcohols within the scope of the present investigations have been imported into India during the relevant period. The domestic industry produces NBA, IBA and 2-EHA.
 - (b) NBA, IBA, 2-EHA produced and sold by the domestic industry is like or directly competitive article to various types of Acyclic Alcohol imported in India. In support of their contention, the domestic industry raised the following arguments:
 - i. Scope of "like or directly competitive article" under safeguard rules is much wider than the scope of "like article" under anti dumping rules. Scope of like article under antidumping rules covers only alike or closely resembling articles; whereas the scope of directly competitive article includes all those articles which may be alike or directly competitive at present or in future.
 - ii. Even potentially competitive article is required to be considered as competitive article. In support of their contentions, the domestic industry has referred to WTO decisions in the matter of **Korea — Alcoholic Beverages, (WT/DS75/AB/R, WT/DS84/AB/R)** and **US-Cotton Yarn, (WT/DS192/AB/R)** concerning scope of directly competitive article and decisions of the Designated Authority on anti dumping with regard to various dumping investigations relating to various Acyclic Alcohols.
 - iii. NBA, IBA, EHA produced by the domestic industry should be held as like or directly competitive to NBA, IBA, EHA on the grounds the two are directly substitutable.
 - iv. EHA being produced by the domestic industry should be held as directly competitive to Iso Nonanol being imported into India. This is established

- by the final findings of the Designated Authority wherein 2EHA and Iso Nonanol has been held as like article.
- v. NBA/IBA produced by the domestic industry must be held as directly competitive article to Sabutol being imported into India. This is established by the final findings of the Designated Authority wherein Sabutol and NBA/IBA has been held as like article.
 - vi. As regards other products, given that the scope of directly competitive article includes actual and potential competitive article, the authority should include all types of Acyclic Alcohols within the purview of proposed measures.
- (c) Imports of Acyclic Alcohols have suddenly and significantly increased in absolute terms as also in relation to production and consumption in India.
 - (d) Following factors constitute unforeseen circumstances:
 - i. Decline in current global demand;
 - ii. Significant decline in the price of various Acyclic Alcohols because of uneven changes in the price of Propylene and Acyclic Alcohols;
 - iii. Significant decline in the difference between Propylene and various Acyclic Alcohols, as established by the difference between Propylene and 2EHA price
 - (e) Imports of subject goods have increased under specific conditions. Such conditions are evident by considering (i) situation prevailing in the exporting countries and; (ii) situation prevailing in Indian market.
 - (f) Increased imports of Acyclic Alcohols have caused serious injury to the domestic industry. Further, imports are threatening serious injury. The claim of injury is based on improvement in production, sales, capacity utilization upto 2007-08, but significant decline thereafter. The decline in these parameters was more pronounced and very significant in Oct-March 09. The domestic industry had to suspend production for considerable period.
 - (g) Profits of the domestic industry improved upto Sept., 08, but declined thereafter significantly in Oct.08-March 09 to such an extent that the domestic industry suffered financial losses in this period,
 - (h) Return on capital employed was improving upto Oct. 2008 and declined significantly thereafter. Even though the decline was marginal in April-Sept. 08, the same was very significant in Oct.08-March 09.
 - (i) Productivity has moved in tandem with production.
 - (j) Employment and wages may not show injury in view of prevailing labour law in the country.

- (k) Serious injury to the domestic industry is being caused by increased imports.
- (l) Imports are further threatening serious injury to the domestic industry. This is established by the declining delta between propylene and Acyclic Alcohols, significant decline in global demand & resultant unutilised capacities with the foreign producers, significant price difference between the imported and domestic product and significant fall in the prices of various Acyclic Alcohols.
- (m) Causal link is established by increase in imports, leading to increase in market share of imports, and consequent decline in production, sales, market share & capacity utilization. Further import prices declined too significantly as a result of which profitability of the domestic industry declined significantly. Thus causal link between increased import and serious injury is clearly established.
- (n) Since the facts of the case clearly establish that increased imports of Acyclic Alcohols have caused serious injury and are threatening further serious injury, safeguard duties may kindly be levied.
- (o) No questionnaire response has been filed by most of the interested parties and therefore these parties should be considered as non-cooperative.
- (p) The interested parties have failed to timely avail opportunity for advancing their arguments and protecting their interests.
- (q) The petitioner has adopted import data from different sources in view of the fact that exhaustive information from one source is not available. However, there is no double accounting of any import and therefore use of different sources is not inappropriate.
- (r) Even though oral submissions were made by a number of parties, only European Commission and Sasol Solvents have filed post hearing written submissions. Oral arguments advanced by a number of parties at the time of hearing which have not been subsequently reproduced in writing should not be taken into account.
- (s) Domestic industry has denied correctness of the various arguments advanced by the EC and Sasol Solvents and has filed detailed rejoinder submissions which has also been considered.

Submissions made by other interested parties

The summary of the submissions made by various interested parties are as follows:

EUROPEAN COMMISSION

- (a) Safeguard instrument is the most restrictive of the trade defense instruments since it is applied equally to imports of all sources and regardless of whether these imports are made at fair or unfair conditions. Therefore, this instrument should only be used in exceptional circumstances and the very strict WTO criteria required for imposing such measures in terms of injury and causality must be adhered to.
- (b) After analysis of the information available, the Commission believes that in this case the conditions required by the WTO are not met and therefore no measures should be imposed.
- (c) The injury situation described in the complaint does not show an industry suffering from injury due to imports. On the contrary, production volume and capacity remained largely stable over the period analyzed and the industry has been working at full capacity in the last years.
- (d) The loss of market share was only due to a significant increase in domestic consumption which the applicant could not take advantage of, since he was already running at more than 100% capacity utilization. Also the applicant was making profits throughout the period and up until Oct.08.
- (e) The only negative effect seems to have been the closure of the plant in November 2008. But even that would not be sufficient to show injury according to WTO standards. Indeed, a WTO panel has already condemned such an approach (Mexico beef and rice) that only takes into account a very short period because it does not allow for an objective examination of all the relevant factors.
- (f) Factory resumed operations in Jan. 2009 just after two months of closure refutes existence of serious injury and imports have caused any problems.
- (g) Increase in imports necessary to satisfy increasing demand. The import data shows gradual increase and not sudden increase as required by Article 2.1. of WTO.
- (h) Shut down in Nov. is due to other factors not related to imports. Applicant did not provide any factors as required under article 4.2 of the Safeguard agreement.
- (i) Increased cost of production is a result of wrong sourcing of raw materials and huge investments.
- (j) In case of imposition of duty, Plastic industry would suffer as Indian industry is not able to produce all types of Oxo Alcohols.

Evonik Oxeno GmbH

- (k) Indian domestic industry does not produce any like article or directly competitive article. Considering the product parameters such as physical characteristics, end use, consumers tastes and channels of distributions, price relationships, it is evident that domestic industry does not produce any like article or directly competitive article to the imported Iso Nonanol.
- (l) Evonik has referred to the decision of WTO in the matter of Japan-Alcoholic Beverages and Korea Alcoholic Beverages.
- (m) Previous attempts in including INA as a like product under Anti dumping investigations in India have not succeeded. The previous decisions on antidumping make it clear that other forms of Oxo Alcohol are different from those, which have produced using Nananol as input. Evonik has referred to the decision of the Designated Authority on anti dumping of two investigations concerning Oxo Alcohols.
- (n) The applicant has no standing before the Hon'ble Director General of Safeguards for the present investigations, as they do not produce Iso Nonanol.
- (o) There are serious deficiencies in the petition. Petition filed suffers from a number of serious deficiencies which include the following:
 - i. no support information for the three products involved
 - ii. lack of any unforeseen development
 - iii. lack of viable adjustments plan to meet international competition.

Lubrizol India Pvt Ltd.

- (p) Indian domestic industry does not produce Iso Octanol and Iso Decanol - Since the domestic industry does not manufacture these products, the same cannot be included in the scope of product under consideration.
- (q) Arguments advanced by Evonik has also been repeated by Lubrizol with regard to scope of product under consideration.
- (r) The applicant has no standing because the domestic industry does not produce Iso Octanol, Iso Decanol.
- (s) Serious deficiencies in the petition - Lubrizol also claims serious deficiencies in the application on the grounds similar to the grounds taken by Evonik.

Indian Plasticizers Manufacturers Association

- (t) Elaborate submissions have been made by Indian Plasticizers Manufacturers Association (IPMA) which are briefly summarized below:

- i. The present application by the domestic industry praying for imposition of safeguard duty on the import of Oxo Alcohols is self-defeating. The drop in the international prices of Oxo Alcohols in 2008-09 is due to the lower prices of propylene/crude.
- ii. The leading foreign Oxo Alcohols manufacturers are producing Phthalate Plasticizers also and are keen to export Plasticizers, as these bring higher value addition and realization. The levy of Safeguard duty on Acyclic Alcohols will not assist Oxo industry and will open floodgates for imports of Phthalate Plasticizers. The exporters of Oxo Alcohols are producers of plasticizers. If safeguard duty is imposed on Oxo Alcohols, the input cost of Oxo Alcohols will go up to that extent. Plasticizers will be available at cheaper prices. In the event of safeguard duty there will be huge imports of plasticizers in India and the plasticizer mfrs. will have to close down units. If user industry closes down due to cheaper imports of Plasticizers, Oxo Alcohols mfrs will not be able to sell their product.
- iii. Importers of Oxo Alcohols who are the buyers of Oxo Alcohols from the domestic industry are actually Small Scale industries engaged in the manufacture of Plasticizers. The manufactures of Plasticizers are yet to modernize and yet to increase their capacities to compete with global manufactures.
- iv. Oxo Alcohols manufactures even after imposition of safeguard duty will not be able to sell. Therefore, the prayer is self-defeating and against public interest.
- v. Confidentiality of Information - petitioner has claimed lot of information confidential. Complete balance sheet of company has not been provided. The information submitted in application is vague and does not allow reasonable and meaningful understanding of the magnitude of the injury suffered by the local industry. No product specific import data has been given. The expression used in the application is product and therefore data must refer to a unique product. There is no product called oxo alcohol. It is a generic name for group of product. The transaction in the market is by specific names of each product falling under the umbrella of Oxo Alcohol. A perusal of Annexure 4 shows that no product specific import data has been given.
- vi. No unforeseen development as contemplated in Article XIX of GATT 1994 has been listed by the petitioner. Neither the safeguard application dated 17th Nov.2008 nor the revised application dated 15.1.08 nor the initiation notice dt. 16th Jan.09 contain any reference to unforeseen development that had occurred as a result of obligations undertaken by India before WTO. In Argentina-Footwear, the WTO Appellate Body held that it must be demonstrated that the development which led to a product being imported in such increased quantities and under such conditions as to cause or threaten to cause serious injury to domestic producers are unexpected.
- vii. Additional products have been added in the present petition. There cannot be any injury to domestic industry from the imports of products which are not manufactured by the domestic industry. Therefore, the investigation should be restricted to the imports of Normal Butanol, Iso Butanol and 2-Ethyl Hexanol

only as precisely these are the products manufactured by domestic producer and none other and in respect of which injury can be alleged. To be alike and directly competitive, the products must be interchangeable in all respects, not only technically but also commercially. The domestic industry is producing NBA, IBA and 2-EHA only. There is no substitutability between these various types of alcohols. These alcohols are used to form specific type of esters. Subutol cannot be equated to IBA or NBA. IBA and NBA are produced following oxo process. Sabutol is obtained by coal carbonization process and it is a by-product. The petitioner appears to treat all plasticisers as a homogenous product presuming that any type of alcohol may be used in the production of every plasticizer. The end use of each plasticizer is different from that of another plasticizer. Plasticizers made from Sabutol does not have the traditional plasticizing efficiency to plasticizers such as DOP, DBP and DIBP which are manufactured from 99% pure 2-EHA, 99% pure NBA and 99% pure IBA. Thus its application is totally different. Substitutability, if any, of finished goods does not mean substitutability of raw material itself. The analysis of like product is a two step analysis as held in *Birla Periclase vs. Designated Authority* case. To club products of varying chemical composition, physical characteristics and end uses together to form a basket of like article would lead to a subversion of the principle of likeness. In anti dumping case of *Andhra Petrochemicals vs. Designated Authority* where imposition of anti dumping duties on Oxo alcohols was set aside, the tribunal commented on the issue of like product. In another anti dumping case of *Oxo-Alcohols Industries Assn. Vs. Designated Authority* reported in 2001(130), different oxo alcohols were not found to be like article even under anti dumping investigation where the definition of like article is much wider. The Tribunal equated "close resemblance" to whether the products were directly substitutable or interchangeable with each other and held that in addition to being interchangeable or substitutable for two products to be alike, their characteristics must closely resemble each other. If Iso decanol had been used in the manufacture of different types of plasticizers they cannot be alike and mere substitutability was not enough to treating two articles as being like. There is no evidence on record to show that Sabutol can be substituted for the good quality products such as IBA or NBA Sabutol is not a like product having regard to the difference in chemical properties. All these products must be taken separately for analysis. These three products among themselves are different products with different heading.

- viii. Their annual capacity is around 30,000-35,000 tonnes against the demand of 1,25,000 tonnes per annum.
- ix. Petitioner has frequently used the route of anti dumping duty. It has been throughout strategy of petitioner to exploit his customers by making late deliveries to charge exorbitant prices without any basis and to stop its customers from buying the goods from other competitive sources of overseas market by filing applications for creating tariff barriers to import even at situations when there was no injury to the petitioner. The Anti dumping duty levied on import of Oxo from various countries in the world have now been abolished/lapsed.

- x. In the public file also there is no credible information. There is no verification report of data.
- xi. The applicant already enjoys a tariff protection on the imports of raw material namely propylene @ 5% against 7.5% on imports of Oxo Alcohol.
- xii. Petition does not support serious injury or threat of serious injury. There is no injury on account of imports and initiation of investigation itself was premature.
- xiii. Once the plant of sole domestic producer is closed, all the users shall be compelled to import. Therefore any import data subsequent to closure of sole domestic producer is necessarily to be discarded while analyzing injury.
- xiv. Production has gone up with improvements in capacity utilization.
- xv. Petitioner has limited capacity and in absolute terms there is no fall. The size of domestic market is much bigger compared to capacity of petitioner and is growing, the import is inevitable.
- xvi. Other indigenous producers had closed because of their financial constraints.
- xvii. The applicant has not provided any data with regard to significant decline in the Oxo Alcohol prices which resulted in the closure of the plant in November 2008. Except the general statements regarding price undercutting no supporting data has been provided.
- xviii. No statement have been furnished about suffering of financial loss from Nov.08 resulting in plant closure. The quarterly report of petitioner ending 30th June 08 had a profit of about 6.9 crores against 11.72 crores for the corresponding period of previous year. The net profit of petitioner for the year ending 31.3.08 has been about Rs.36.22 crs.
- xix. Andhra Petrochemicals Ltd have no jetty and is not in a position to import the raw materials. It is left to the mercy of Hindustran Petroleum Corporation, the only supplier to the unit. The plant of petitioner is located at Vishakhapatnam i.e. on east coast whereas its majority of buyers are located on west coast.
- xx. The petitioner is treating Director General as an insurance company which can insure their business risks.
- xxi. No restructuring plan has been given in the application. The applicant must give a statement on the efforts being taken or planned to be taken or both to make a positive adjustment to import competition. No such plan has been given under the application. The capacity expansion will be of no use if the product is not competitive with the imported product on all fronts. Safeguard measures are temporary arrangements to facilitate the domestic industry to gear them to face international competition. The application nowhere discloses how domestic industry will achieve increase in productivity, decrease in cost and above all reduction in their selling prices to meet international competition. The capacity of Andhra Petrochemicals Ltd is much lower than the international scales of production.
- xxii. Closure of factory is stage managed. The applicant has shut down their plant from 8th Nov. to 7th Dec.08 not on account of lack of orders rather to achieve their twin objective of annual maintenance and to justify their safeguard application

- xxiii. The revised application has been submitted on 15th Jan.09. It does not mention about the recommencement of production on 8.12.08 and is silent on its viability after recommencement.
- xxiv. There are at present about 25 units of Phthalate Plasticizers manufactures in India, out of which ten are inoperative because of over capacity and uneconomical realization. The operative units have extremely low capacity utilization less than 40% due to heavy imports of DOP and non availability of Oxo Alcohols. Besides all large scale units and several small scale units have closed down

Alkyl Amines Chemicals Ltd

- xxv. The company is a leading manufacturer of Aliphatic Amines and Amine Derivatives. The range of amines include Butyl Amines for which they need normal Butanol and 2 EHA as raw materials.
- xxvi. Andhra Petro is the only manufactures of Normal Butanol and 2EHA and hence they enjoy monopoly position in India for the said products.
- xxvii. The claim of injury by Andhra Petro due to imports is not justified.
- xxviii. Andhra Petro demands advance payment from the Indian customers. The foreign suppliers offer credit upto 360 days with nominal rate of interest.

The Sasol Solvents

- xxix. The products manufactured by domestic industry are neither like products nor directly competitive to the products manufactured by the foreign producer.
- xxx. They have highlighted lot of discrepancies in the application as well as in the notice of initiation. They have submitted that the application is failing the test of confidentiality. It is also submitted that there is no clear period of investigation under the application for which injury analysis can be done.
- xxxi. It has been submitted that there are no unforeseen circumstances, no sudden imports, no dramatic fall in sales or market share, no fall in capacity utilisation, no serious injury or threat of serious injury, no critical circumstances. It is submitted that fall in international prices was due to reduction in raw material prices. It is also submitted that there is no casual link between the injuries claimed and increased imports if any. It has also submitted that petitioner has not given any viable adjustment plan.
- xxxii. The imposition of duties will be against public interest.

EXAMINATION AND FINDINGS

- 8. I have carefully gone through the case records and the replies filed by the domestic producers, users/importers, and exporters and exporting government. Submissions made by the various parties and the issues arising there from are dealt with at appropriate places in the findings below.
- 9. **The product under investigation:** The product under consideration in the present investigations is Oxo Alcohols (Acyclic Alcohols). Oxo Alcohols are

classified as acyclic alcohols, mixtures thereof and their halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives. There are many types of subject alcohols, some of which are as follows –

(i) Normal butanol (also known as NBA) or n-butyl alcohols, butan-1-ol,(29051300)	(v) Hexanol,(29051390)	
(ii) Iso butanol (also known as IBA) or Butan-2-ol(29051490)	(vi) Heptanol,(29125000)	
(iii) 2-Ethyl Hexanol (also known as 2-EHA)(29051620)	(vii) Octanol and Iso Octanol,(29051690)	
(iv) Sabutol,(29051210)	(viii) Nonanol and Iso nonanol,(29051990)	
	(ix) Decanol and Iso Decanol,(29051700)	

The product is classified as follows.

Name of the Article	Classified under Customs Tariff Act, 1975
Normal butanol (also known as NBA) or n-butyl alcohols, butan-1-ol	29051300
Iso butanol (also known as IBA) or Butan-2-ol	29051490
Pentylol	29051400
2-Ethyl Hexanol (also known as 2-EHA)	29051620
Sabutol	29051210
Hexanol	29051390
Heptanol	29125000
Octanol and Iso octanol	29051690
Nonanol and Iso Nonanol	29051990
Decanol and Iso Decanol	29051700
And Mixtures Thereof.	

10. The domestic industries have submitted that all these products are 'like or directly competitive' to what is manufactured in India on the ground of their substitutability and even importers are importing such articles interchangeably. The parties on the issue of Product under Consideration and Like Article
11. It has argued that the article under investigation will cover only those articles, which are being imported into India during POI and the same being manufactured by the 'domestic industry'. The petitioner does not offer Iso Nonanol and Sabutol. At the same time, petitioner is unable to fulfill entire Indian demand, if all kinds of acyclic alcohols within the scope of the present investigations are considered. Even after expansion of the project, the petitioner

would not be able to meet the gross Indian demand, if all kinds of acyclic alcohols are included. At the same time, each type of acyclic alcohols has its own specific end application. In support of their arguments the interested parties have referred various judgments which have been taken into account.

12. The issue has been analysed. The "domestic industry" has been defined in clause (b) of sub-section 6 of section 8B of Customs Tariff Act, 1975 as;

(b) "domestic industry" means the producers-

- i. as a whole of a like article or a directly competitive article; or
- ii. whose collective output of a like article or a directly competitive article to India constitutes a major share of the total produced of the total production of the said article in India.

13. The Report of the Appellate Body in the case of United States- Transitional Safeguard Measure on Combed Cotton Yarn from Pakistan [WT/DS192/AB/R] and Korea- Taxes on Alcoholic Beverages [WT/DS75/AB/R, WT/DS84/AB/R 18 Jan 1999] have dealt the issue of treating an article "like or directly competitive" extensively.

14. In order to analyse the relevance of the referred reports and findings, the relevant parts are reproduced below

United States- Transitional Safeguard Measure on Combed Cotton Yarn from Pakistan [WT/DS192/AB/R]

84. The United States appeals this finding of the Panel. The United States submits that Article 6.2 permits a definition of the domestic industry on the basis of products that are not only like but also directly competitive with the imported product. According to the United States, yarn sold on the merchant market and yarn produced by vertically integrated fabric producers for their own internal consumption are like, but they are not directly competitive with each other. The United States argues that, by rejecting its definition of the domestic industry, the Panel failed to give full meaning and effect to the term "and/or" in Article 6.2 and reduced the word "and" to inutility. The United States also argues that the Panel should have interpreted the definition of the domestic industry within the four corners of the AIC without having recourse to the wider context of other agreements of the WTO containing a definition of the domestic industry.

85. We begin our analysis of this issue with the definition of the domestic industry as stated in the relevant part of Article 6.2 of the ATC, which provides:

Safeguard action may be taken under this Article when, on the basis of a determination by a Member, it is demonstrated that a particular product is being imported into its territory in such increased quantities as to cause serious damage, or actual threat thereof, to the domestic industry producing like and/or directly competitive products. (footnote omitted, emphasis added)

86. A plain reading of the phrase "domestic industry producing like and/or directly competitive products" shows clearly that the terms "like" and "directly competitive" are characteristics attached to the domestic products that are to be compared with the imported product. We are, therefore, of the view that the definition of the domestic industry must be product-oriented and not producer-oriented, and that the definition must be based on the products¹ produced by the domestic industry which are to be compared with the imported product in terms of their being like or directly competitive.²

87. We also consider that the term "producing" in Article 6.2 means producing for commercial purposes and that it cannot be interpreted, in itself, to be limited to or qualified as producing for sale on the merchant or any other segment of the market. The definition of the domestic industry, in terms of Article 6.2, is determined by what the industry produces, that is, like and/or directly competitive products. In our view, the term "producing", in itself, cannot be given a different or a qualified meaning on the basis of what a domestic producer chooses to do with its product.

88. We now turn to the next two components of the definition of the domestic industry under Article 6.2 of the ATC, namely, like products and directly competitive products.

¹In *United States – Lamb Safeguard*, we also found that the product defines the scope of the definition of the domestic industry under the *Agreement on Safeguards*. In that case, the "like" product at issue was lamb meat. (Appellate Body Report, *supra*, footnote, paras. 84, 86-88 and 95)

²At this stage, we analyze the terms "like" and "directly competitive" in isolation. For the interpretation of the connectors "and/or" in Article 6.2, see, *infra*, paragraph 104.

89. We note that there is no disagreement between the participants³ that yarn imported from Pakistan and yarn produced by the producers of the United States, regardless of whether they are vertically integrated fabric producers or independent yarn producers, are like products. The United States has made it clear in its arguments⁴ that its exclusion of yarn produced by vertically integrated fabric producers from the definition of the domestic industry was not because they are not producing a like product, but because they are not producing a directly competitive product. It is, therefore, not necessary for us to address the meaning of the term "like products" for the purposes of this appeal.

90. Before we examine the term "directly competitive" in the specific context of Article 6.2 and the facts of this particular case, we consider it useful to recall our interpretation of this term on previous occasions.

91. We have interpreted the term "directly competitive" in *Korea – Alcoholic Beverages*⁵ and *Japan – Taxes on Alcoholic Beverages*.⁶ We are cognizant of the fact that these two reports interpreted this term in the context of the Interpretative Note Ad Article III:2 of the GATT 1994. We will refer to this aspect later. The key elements of the interpretation of the term "directly competitive" in our Report in *Korea – Alcoholic Beverages* are:

- (a) The word "competitive" means "characterised by competition". The context of the competitive relationship is necessarily the marketplace, since that is the forum where consumers choose different products that offer alternative ways of satisfying a particular need or taste. As competition in the marketplace is a dynamic and evolving process, the competitive relationship between products is not to be analyzed exclusively by current consumer preferences⁷; the competitive relationship extends as well to potential competition.⁸

³Panel Report, para. 7.41.

⁴United States' appellant's submission, paras. 33 ff.

⁵Appellate Body Report, *supra*, footnote paras. 108-124.

⁶Appellate Body Report, WT/DS8/AB/R, WT/DS10/AB/R, WT/DS11/AB/R, adopted 1 November 1996, DSR 1996:I, 97, at 117-118.

⁷*Supra*, footnote, paras. 114-115.

⁸*Ibid.*, paras. 115 and 117.

- (b) *According to the ordinary meaning of the term "directly competitive", products are competitive or substitutable when they are interchangeable or if they offer alternative ways of satisfying a particular need or taste.*⁹
- (c) *In the context of Article III:2, second sentence, the qualifying word "directly" in the Ad Article suggests a degree of proximity in the competitive relationship between the domestic and imported products. The word "directly" does not, however, prevent a consideration of both latent and extant demand.*¹⁰
- (d) *"Like" products are a subset of directly competitive or substitutable products: all like products are, by definition, directly competitive or substitutable products, whereas not all "directly competitive or substitutable" products are "like".*¹¹

92. *The United States argues that the Panel's over-reliance on our Report in Korea – Alcoholic Beverages is mistaken for two reasons. First, that dispute involved interpretation of a different phrase ("directly competitive or substitutable"), of a different provision and agreement (Article III:2 of the GATT 1994), and in a different factual setting. In particular, the word "substitutable" is not used in juxtaposition with "directly competitive" in Article 6.2 of the ATC. Second, the Appellate Body emphasized, in that case, the importance of the marketplace in judging the competitive relationship between products because that is the forum where consumers choose between different products. According to the United States, a proper reading of the Appellate Body's reasoning reveals that if a domestic product does not enter the marketplace at all, it cannot be regarded as being "directly competitive" with the imported product, even though the two products may admittedly be "like products".*

93. *We are not persuaded by these arguments of the United States with respect to the relevance and interpretation of our Report in Korea – Alcoholic Beverages.*

⁹*Supra*, footnote, para. 115.

¹⁰*Ibid.*, para. 116.

¹¹*Ibid.*, para. 118.

94. *With respect to the first argument of the United States, a careful reading of our Report in that case would show that we used the terms "directly competitive" and "directly substitutable" without implying any distinction between them in assessing the competitive relationship between products.¹² We do not consider that the mere absence of the word "substitutable" in Article 6.2 of the ATC renders our interpretation of the term "directly competitive" under Article III:2 of the GATT 1994 irrelevant in terms of its contextual significance for the interpretation of that term under Article 6.2 of the ATC.*
95. *We now turn to an examination of the term "directly competitive" in the specific context of Article 6.2 of the ATC and the dispute before us. We must bear in mind that Article 6.2 permits a safeguard action to be taken in order to protect a domestic industry from serious damage (or actual threat thereof) caused by a surge in imports, provided the domestic industry is identified as the industry producing "like and/or directly competitive products" in comparison with the imported product. The criteria of "like" and "directly competitive" are characteristics attached to the domestic product in order to ensure that the domestic industry is the appropriate industry in relation to the imported product. The degree of proximity between the imported and domestic products in their competitive relationship is thus critical to underpin the reasonableness of a safeguard action against an imported product.*
96. *According to the ordinary meaning of the term "competitive", two products are in a competitive relationship if they are commercially interchangeable, or if they offer alternative ways of satisfying the same consumer demand in the marketplace. "Competitive" is a characteristic attached to a product and denotes the capacity of a product to compete both in a current or a future situation. The word "competitive" must be distinguished from the words "competing" or "being in actual competition". It has a wider connotation than "actually competing" and includes also the notion of a potential to compete. It is not necessary that two products be competing, or that they be in actual competition with each other, in the marketplace at a given moment in order for those products to be regarded as competitive. Indeed, products which are*

¹²See, *ibid.*, paras. 114-116.

competitive may not be actually competing with each other in the marketplace at a given moment for a variety of reasons, such as regulatory restrictions or producers' decisions. Thus, a static view is incorrect, for it leads to the same products being regarded as competitive at one moment in time, and not so the next, depending upon whether or not they are in the marketplace.

97. It is significant that the word "competitive" is qualified by the word "directly", which emphasizes the degree of proximity that must obtain in the competitive relationship between the products under comparison. As noted earlier, a safeguard action under the ATC is permitted in order to protect the domestic industry against competition from an imported product. To ensure that such protection is reasonable, it is expressly provided that the domestic industry must be producing "like" and/or "directly competitive products". Like products are, necessarily, in the highest degree of competitive relationship in the marketplace.¹³ In permitting a safeguard action, the first consideration is, therefore, whether the domestic industry is producing a like product as compared with the imported product in question. If this is so, there can be no doubt as to the reasonableness of the safeguard action against the imported product.

98. When, however, the product produced by the domestic industry is not a "like product" as compared with the imported product, the question arises how close should be the competitive relationship between the imported product and the "unlike" domestic product. It is common knowledge that unlike or dissimilar products compete or can compete in the marketplace to varying degrees, ranging from direct or close competition to remote or indirect competition. The more unlike or dissimilar two products are, the more remote or indirect their competitive relationship will be in the marketplace. The term "competitive" has, therefore, purposely been qualified and limited by the word "directly" to signify the degree of proximity that must obtain in the competitive relationship when the products in question are unlike. Under this definition of "directly", a safeguard action will not extend to protecting a domestic industry that produces unlike products which have only a remote or tenuous competitive relationship with the imported product.

15. Korea- Taxes on Alcoholic Beverages [WT/DS75/AB/R, WT/DS84/AB/R 18 Jan 1999]

¹³ Appellate Body Report, *Korea – Alcoholic Beverages*, *supra*, footnote, para. 118; Appellate Body Report, *Canada – Certain Measures Concerning Periodicals*, WT/DS31/AB/R, adopted 30 July 1997, DSR 1997:I, 449, at 473. In these cases, we stated that "like" products are perfectly substitutable and that "directly competitive" products are characterized by a high, but imperfect, degree of substitutability.

114. The term "directly competitive or substitutable" describes a particular type of relationship between two products, one imported and the other domestic. It is evident from the wording of the term that the essence of that relationship is that the products are in competition. This much is clear both from the word "competitive" which means "characterized by competition", and from the word "substitutable" which means "able to be substituted". The context of the competitive relationship is necessarily the marketplace since this is the forum where consumers choose between different products. Competition in the market place is a dynamic, evolving process. Accordingly, the wording of the term "directly competitive or substitutable" implies that the competitive relationship between products is not to be analyzed exclusively by reference to current consumer preferences. In our view, the word "substitutable" indicates that the requisite relationship may exist between products that are not, at a given moment, considered by consumers to be substitutes but which are, nonetheless, capable of being substituted for one another.
115. Thus, according to the ordinary meaning of the term, products are competitive or substitutable when they are interchangeable or if they offer, as the panel noted, "alternative ways of satisfying a particular need or taste." Particularly in a market where there are regulatory barriers to trade or to competition, there may well be latent demand.
116. The words "competitive or substitutable" are qualified in the Ad Article by the term "directly". In the context of Article III:2, second sentence, the word "directly" suggests a degree of proximity in the competitive relationship between domestic and the imported products. The word "directly" does not, however, prevent a panel from considering both latent and extant demand.
117. Our reading of the ordinary meaning of the term "directly competitive or substitutable" is supported by its context as well as its object and purpose. As part of the context, we note that the Ad Article provides that the second sentence of Article III:2 is applicable "only in cases where competition was involved" (emphasis added). According to Korea, the use of the past indicative "was" prevents a panel taking account of "potential" competition. However, in our view, the use of the word "was" does not have any necessary significance in defining the temporal scope of the analysis to be carried out. The Ad Article describes the circumstances in which a hypothetical tax "would be considered to be inconsistent with the provisions of the second sentence". (Emphasis added) The first part of the clause is cast in the conditional mood ("would") and the use of the past indicative simply follows from the use of the word "would". It does not place any limitations on the temporal dimension of the word "competition".
118. The first sentence of Article III:2 also forms part of the context of the term. "Like" products are a subset of directly competitive or substitutable products: all like products are, by definition, directly competitive or substitutable products, whereas not all "directly competitive or substitutable" products are "like". The notion of like products must be construed narrowly but the category of directly competitive or substitutable products is broader. While perfectly

substitutable products fall within Article III:2, first sentence, imperfectly substitutable products can be assessed under Article III:2, second sentence.

119. The context of Article III:2, second sentence, also includes Article III:1 of the GATT 1994. As we stated in our Report in Japan – Alcoholic Beverages, Article III:1 informs Article III:2 sets forth the principle “that internal taxes... should not be applied to imported or domestic products so as to afford protection to domestic production.” It is in the light of this principle, which embodies the object and purpose of the whole of Article III, that the term “directly competitive and substitutable” must be read. As we said in Japan – Alcoholic Beverages:

The broad and fundamental purpose of Article III is to avoid protectionism in the application of internal tax and regulatory measures. ... Towards this end, Article III obliges Members of the WTO to provide equality of competitive conditions for imported products in relation to domestic products. Moreover, it is irrelevant that the “trade effects” of the tax differential between imported and domestic products, as reflected in the volumes of imports, are insignificant or even non-existent; Article III protects expectations not of any particular trade volume but rather of the equal competitive relationship between imported and domestic products.

120. In view of the objectives of avoiding protectionism, requiring equality of competitive conditions and protecting expectations of equal competitive relationships, we decline to take a static view of the term “directly competitive or substitutable”. The object and purpose of Article III confirms that the scope of the term “directly competitive or substitutable” cannot be limited to situations where consumers already regard products as alternatives. If reliance could be placed only on current instances of substitution, the object and purpose of Article III:2 could be defeated by the protective taxation that the provision aims to prohibit. Past panels have, in fact, acknowledged that consumer behaviour might be influenced, in particular, by protectionist internal taxation. Citing the panel in Japan – Customs Duties, Taxes and Labelling Practices on Imported Wines and Alcoholic Beverages (“1987 Japan – Alcohol”), the panel in Japan – Alcoholic Beverages observed that “a tax system that discriminates against imports has the consequence of creating and even freezing preferences for domestic goods”. The panel in Japan – Alcoholic Beverages also stated that “consumer surveys in a country with .. a [protective] tax system would likely understate the degree of potential competitiveness between substitutable products”. (emphasis added) Accordingly, in some cases, it may be highly relevant to examine latent demand.

16. From the above referred reports, it is apparent that the definition of the domestic industry must be product-oriented and not producer-oriented, and that the definition must be based on the products produced by the domestic

industry which are to be compared with the imported product in terms of their being like or directly competitive. Further, the 'like products' are sub set of 'directly competitive products'. The word 'competitive' broadly means substitutable and it also includes the product which has potential to compete and not only the product which is competing at present. The word 'directly' indicates the degree of proximity that must obtain in the competitive relationship when the products in question are unlike. Under this definition of "directly", a safeguard action will not extend to protecting a domestic industry that produces unlike products.

17. Based on the principles laid down by the Appellate bodies each imported articles were compared with the articles manufactured by the domestic industry. It was found that even though the end products are substitutable, it is undisputed that each type of acyclic alcohols goes for a specific end application. The substitutability of these products is remote and thus the articles which are imported but not manufactured by domestic industry cannot be termed as 'directly competitive'.
18. Some of the interested parties have contended that as the product identification is improper, the investigation may be terminated and treated improper ab-initio. In this regard it is noted that the principles of severability is a well accepted principle and when the defect is curable in nature, termination of investigation on the ground of inclusion of some of the articles which are not found to be 'like or directly competitive' article may not be justifiable. Accordingly, having regard to the legal requirements and facts of the case, it is considered appropriate to restrict the scope of the present investigations only to the following types of acyclic alcohols, which are manufactured by the domestic industry.
 - i. Normal butanol (also known as NBA) or n-butyl alcohols, butan -1-ol,(29051300)
 - ii. Iso butanol (also known as IBA) or Butan -2-ol(29051490)
 - iii. 2-Ethyl Hexanol (also known as 2-EHA)(29051620)
19. The goods produced by the domestic industry are comparable in respect of all essential characteristics to the goods imported from various countries. There is no known difference the subject goods produced by the Indian industry and goods being imported. Subject goods produced by the Indian industry and imported goods are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. Subject product produced by the domestic industry is being treated as like or directly competitive to the product under consideration.
20. The section 13 of the General Clauses Act, 1897, which is reproduced below;

S.13 Gender and number- In all Central Acts and Regulations, unless there is any thing repugnant in the subject or context –

(1) words importing the masculine gender shall be taken to include females; and

(2) words in the singular shall include the plural, and vice versa.

provides interpretation that the use of singular word 'article' in the Customs Tariff Act 1975 does not preclude 'articles'. Further, in the various safeguard investigations including in the case of provisional safeguard measure against import of certain steel product by European Union through commission regulation (EC) no.560/2002 of 27/3/02 a number of articles have been grouped together.

21. As the three articles NBA, IBA and 2-EHA are commercially known as acyclic alcohol and manufactured in the same plant; economic parameters have been analyzed as a group of the three.

Domestic Industry

22. As per the records of the case, there is only one domestic producer of Oxo Alcohols in India, namely Andhra Petrochemicals Limited. The same producer has filed the present application. This producer accounts for 100 production of the said product in India during the period 2005-06 to 2008-09. Thus, the output of the applicant producer constituted a major share of the total production of Oxo Alcohols in India. Further, no claim has been made by the interested parties against the applicants being the domestic industry. Therefore, it is held that the applicant domestic producer constitute and represent the domestic industry within the meaning of required and defined under Sec 8B (6) (b) of the Safeguard Duty Rules 1997.

Unforeseen Developments:

23. Current global recession, more pronounced in the developed countries, has led to decline in the demand for the products under consideration. Resultantly, producers are faced with significant unutilized capacities. For instance prices of IBA reached all time high of \$2150/MT during Aug 08 despite weak demand and high stocks before declining to \$730.MT in Dec '08 as demand decreased due to economic turmoil.
24. Propylene is the principal raw material used in production of the said product. Further, various types of oxo alcohols are used in production of various types of plasticizers. The prices of propylene, IBA, NBA, EHA, DOP (DOP is a type of plasticizer) and the difference between propylene and EHA were examined from Jan., 2008 to March, 2009 on the basis of the information published by ICIS, LOR (ICIS LOR is a leading trade journal, which publishes prices of all these products on weekly basis. Petitioner claimed and no party disputed that

the prices published in this journal are quite indicative of the prices of these products in the international market).

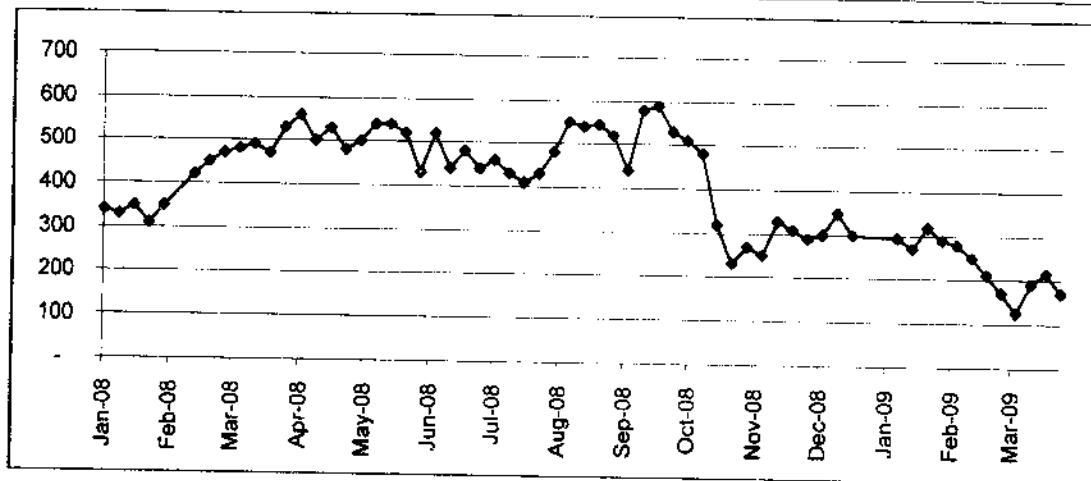
US \$/MT

Date	Prices					Delta
	Propylene	IBA	NBA	2 EHA	DOP	2 EHA vs. Propylene
4-Jan-08	1,280	1,290	1,450	1,620	1,580	340
11-Jan-08	1,300	1,290	1,450	1,630	1,590	330
18-Jan-08	1,300	1,290	1,450	1,650	1,590	350
25-Jan-08	1,350	1,290	1,450	1,660	1,600	310
1-Feb-08	1,320	1,260	1,450	1,670	1,600	350
15-Feb-08	1,260	1,250	1,450	1,680	1,600	420
22-Feb-08	1,240	1,250	1,450	1,690	1,640	450
29-Feb-08	1,230	1,250	1,450	1,700	1,640	470
7-Mar-08	1,260	1,250	1,460	1,740	1,650	480
14-Mar-08	1,260	1,230	1,460	1,750	1,650	490
21-Mar-08	1,280	1,230	1,460	1,750	1,670	470
28-Mar-08	1,260	1,230	1,460	1,790	1,700	530
4-Apr-08	1,260	1,230	1,460	1,820	1,720	560
11-Apr-08	1,320	1,230	1,460	1,820	1,750	500
18-Apr-08	1,320	1,230	1,460	1,850	1,770	530
25-Apr-08	1,400	1,290	1,460	1,880	1,800	480
2-May-08	1,410	1,300	1,500	1,910	1,800	500
9-May-08	1,410	1,300	1,500	1,950	1,810	540
16-May-08	1,410	1,300	1,540	1,950	1,850	540

23-May-08	1,480	1,320	1,540	2,000	1,900	520
30-May-08	1,570	1,400	1,750	2,000	2,040	430
6-Jun-08	1,600	1,500	1,900	2,120	2,050	520
13-Jun-08	1,700	1,550	1,950	2,140	2,050	440
20-Jun-08	1,700	1,550	1,950	2,180	2,050	480
27-Jun-08	1,740	1,550	1,950	2,180	2,050	440
4-Jul-08	1,720	1,550	1,950	2,180	2,050	460
11-Jul-08	1,720	1,550	1,950	2,150	2,050	430
18-Jul-08	1,720	1,550	1,900	2,130	2,070	410
25-Jul-08	1,700	1,550	1,900	2,130	2,070	430
1-Aug-08	1,650	1,550	1,900	2,130	2,070	480
8-Aug-08	1,600	1,600	1,830	2,150	2,070	550
15-Aug-08	1,600	1,590	1,800	2,140	2,030	540
22-Aug-08	1,555	1,560	1,760	2,100	1,990	545
29-Aug-08	1,510	1,500	1,670	2,030	1,940	520
5-Sep-08	1,510	1,430	1,650	1,950	1,920	440
12-Sep-08	1,300	1,430	1,640	1,880	1,850	580
19-Sep-08	1,200	1,380	1,640	1,790	1,710	590
26-Sep-08	1,150	1,360	1,550	1,680	1,640	530
3-Oct-08	1,140	1,360	1,550	1,650	1,640	510
10-Oct-08	1,000	1,340	1,410	1,480	1,500	480
17-Oct-08	830	1,340	1,300	1,150	1,230	320
24-Oct-08	700	1,000	950	930	950	230

31-Oct-08	480	650	710	750	700	270
7-Nov-08	480	650	620	730	740	250
14-Nov-08	450	650	650	780	770	330
21-Nov-08	470	650	650	780	770	310
28-Nov-08	510	650	650	800	880	290
5-Dec-08	520	650	680	820	920	300
12-Dec-08	500	650	680	850	920	350
19-Dec-08	500	620	680	800	880	300
9-Jan-09	500	640	680	795	880	295
16-Jan-09	550	640	680	820	910	270
23-Jan-09	540	640	700	860	920	320
30-Jan-09	570	640	700	860	920	290
6-Feb-09	620	660	740	900	950	280
13-Feb-09	650	690	760	900	970	250
20-Feb-09	690	690	750	900	950	210
27-Feb-09	730	690	750	900	940	170
6-Mar-09	725	690	750	850	970	125
13-Mar-09	700	700	750	890	970	190
20-Mar-09	700	720	760	915	1020	215
27-Mar-09	750	735	800	920	1060	170

25. It is noted that the price difference between propylene and EHA declined very sharply over the period.



The rapid deceleration of the global economy has severely affected key industries especially in the developed economies. The increase in imports is due to surplus capacities with major countries. The Indian market is not only quite large but also very stable, sustained and is offering significant market opportunities to the global suppliers. It is apparent from the fact that the demand of the product has been consistently on rise. The table showing consumption in India is as below;

	Imports volume in MT	Demand/ Consumption MT
2005-06	41,061	83,497
2006-07	41,097	83,905
2007-08	58,981	101,907
2008-09	77602	113,210

Period of Investigation:

26. Para 130 of Argentina footwear Case Appellate Body Of WTO reads as
"Although we agree with the Panel that the "increased quantities" of imports cannot be just any increase, we do not agree with the Panel that it is reasonable to examine the trend in imports over a five-year historical period. In our view, the use of the present tense of the verb phrase "is being imported" in both Article 2.1 of the Agreement on Safeguards and Article XIX:1(a) of the GATT 1994 indicates that it is necessary for the competent authorities to examine recent imports, and not simply trends in imports during the past five years – or, for that matter, during any other period of several years. [1] In our view, the phrase "is being imported" implies that the increase in imports must have been sudden and recent."

[1]The Panel, in footnote 530 to para. 8.166 of the Panel Report, recognizes that the present tense is being used, which it states "would seem to indicate that, whatever the starting-point of an investigation period, it has to end no later than the very recent past." (emphasis added) Here, we disagree with the Panel. We believe that the relevant investigation period should not only end in the very recent past, the investigation period should be the recent past.

27. As the Appellate body has gone into details of the requirements of Safeguard investigation, the principles evolved in the findings and followed in subsequent cases, have been adopted. Accordingly the period of investigation has been considered up to the month of March, 2009, which is the very recent past for which data is available.

Increased imports:

28. In the notice of initiation, reliance was placed on imports data as per IBIS. Oxo Alcohols (Acyclic Alcohols) is imported into India from Republic of Korea, Iran, Saudia Arbia, UAE, Germany, Malaysia, and USA, The imports of Oxo Alcohols (Acyclic Alcohols) have shown an increasing trend in absolute terms as well as compared to the domestic production. As the product scope got changed, the import data relating to the three products have been considered. The source of data for import analysis is DGCIS up to the month of Nov.2008 (as available) and DOV (Directorate of Valuation) for subsequent months.
29. **Absolute increase in imports:** The import figures for the purpose of analysis of annual figures and during the year 2008-09 are as follows;

Annual Import (MT)

	Imports volume In MT	Imports per month in MT
2005-06	41,061	3,422
2006-07	41,097	3,425
2007-08	58,981	4,915
2008-09	72,397	6,033

Imports during 2008-09 (MT)

	Imports volume In MT	Imports per month in MT
April-Sep08	34019	5670
Oct 08 - March 09	38378	6396
2008-09	72397	6033

30. It is seen that imports of the product have surged in the most recent period. The average volume of imports, which were in the range of 4915 MT/month till

2007-08, rose to 6033 MT/month during 2008-09. The percentage increase is 23%. The increase in imports during October 08-March 09 compared to the imports in 2007-08 is more profound and quantitatively 30.13%. These figures show that there is increase in import as well as the rate of increase in import is also on rise.

31. **Increased imports in relation to Total sale in India**

The table below shows the factual information on imports and market share of imports.

Year	Imports volume (MT)	Sales by Indian Industry (MT)	Total Market (MT)	Imports as percentage of Total market
a	b	c	d = b+c	e = b/d*100 (%)
2005-06	41,061	42437	83498	49
2006-07	41,097	42808	83905	49
2007-08	58,981	42926	101907	58
April-Sept-08	34,019	19001	53020	64
Oct 08 - March 09	38,378	16607	54985	70
2008-09	72,397	35609	108006	67

It is seen that the imports of oxo alcohols have surged significantly in relation to demand of the product in India. The market share of imports have gone up from 49% in 2005-06 to 70% in October 08-March 09 and 67% in FY 2008-09

It is thus seen that

- a) Imports have increased in absolute terms
- b) Imports have increased in relative terms.

It is thus concluded that the imports of Oxo Alcohol increased in India within the meaning of the Rules.

Serious Injury and Threat of Serious Injury

32. It was examined whether increased imports of the said goods are causing serious injury to the domestic industry. It was also examined whether the increased imports of the said goods are threatening serious injury to the domestic industry. The imports of the said goods have shown sudden and significant surge in absolute terms and in relation to production and

consumption in India. It is noted that imports volume increased significantly, and at rapidly declining import prices.

33. The Rules provide as under with regard to serious injury to the domestic industry

The Director General shall determine serious injury or threat of serious injury to the domestic industry taking into account, inter alia, the principles laid down in Annex to these rules.

34. Annexure to the Rules provides as follows.

"In the investigation to determine whether increased imports have caused or are threatening to cause serious injury to a demonstrate industry, the Director General shall evaluate all relevant factors of an objective and quantifiable nature having a bearing on the situation of that industry, in particular, the rate and amount of the increase in imports of the article concerned in absolute and relative terms, the share of the domestic market taken by increased imports, changes in the level of sales, production, productivity, capacity utilization, profits and losses, and employment"

35. Further, the Appellate Body in the Argentina footwear case held that Para 139 of Argentina footwear Case Appellate Body Of WTO

In our view, it is only when the overall position of the domestic industry is evaluated, in light of all the relevant factors having a bearing on a situation of that industry, that it can be determined whether there is "a significant overall impairment" in the position of that industry. Although Article 4.2(a) technically requires that certain listed factors must be evaluated, and that all other relevant factors must be evaluated, that provision does not specify what such an evaluation must demonstrate. Obviously, any such evaluation will be different for different industries in different cases, depending on the facts of the particular case and the situation of the industry concerned. An evaluation of each listed factor will not necessarily have to show that each such factor is "declining". In one case, for example, there may be significant declines in sales, employment and productivity that will show "significant overall impairment" in the position of the industry, and therefore will justify a finding of serious injury. In another case, a certain factor may not be declining, but the overall picture may nevertheless demonstrate "significant overall impairment" of the industry. Thus, in addition to a technical examination of whether the competent authorities in a particular case have evaluated all the listed factors and any other relevant factors, we believe that it is essential for a panel to take the definition of "serious injury" in Article 4.1(a) of the Agreement on Safeguards into account in its review of any determination of "serious injury".

The analysis of listed economic parameters as well as other parameters, which may have bearing on arriving at the decision on 'serious injury' has been examined taking the evolved principles and law in force in India.

36. **Production:** Production of the domestic industry over the period was examined. The total production of the three articles taken together by the domestic industry has been as follows

Production in MT annual.

Period	Production for the period	Monthly production	% change
2005-06	42714	3,560	-
2006-07	42408	3,534	-0.72
2007-08	43047	3,587	1.51
2008-09	36747	3,062	(14.64)

Production in MT during 2008-09

Period	Production for the period	Monthly production	% change
April-Sept-08	20546	3,424	(4.54)
Oct08-Mar 09	16201	2,700	(21.15)
2008-09	36747	3,062	(14.64)

Average per month production of the said product was almost at similar levels during the period 2005-06 to 2007-08. However, the production during the year 2008-09 had sharp decline. The decline during October 08– March 09 has been more profound, as evident from the fact that the monthly production fell to 2,700 MT from 3,424 during April-September 2008 and 3,587 MT during 2007-08. This decline in production has been on the back drop of increasing domestic demand.

37. **Capacity Utilization:** The capacity utilization of the domestic industry is as shown in table below.

Period	Capacity utilization (%)
2005-06	88.99
2006-07	88.35
2007-08	89.68
2008-09	76.56

Capacity Utilization during 2008-09

Period	Capacity utilization (%)
April-Sept-08	85.61
Oct08 -Mar 09	67.50
2008-09	76.56

It is seen that the capacity utilization of the domestic industry was increasing up to 2007-08. The same has however declined sharply to 67.50% in Oct 08-March, 2009 and as a result the capacity utilization during 2008-09 went down to 76.56% from 89.68% previous year.

38. **Sales:** Sales volumes of the domestic industry over the period were examined. Factual position is as follows –

Annual Sales (MT)

Year	Sales MT	Sales per month MT	Demand MT
2005-06	42,437	3,536	83,498
2006-07	42,808	3,567	83,905
2007-08	42,926	3,577	101,907
2008-09	35,609	2,967	108,006

Sales During 2008-09

Year	Sales MT	Sales per month MT	Demand MT
Apr-Sep 08	19,001	3,167	53,020
Oct-Mar 09	16,607	2,768	54,985
2008-09	35,609	2,967	108,006

It is seen that volumes of sales were almost at similar levels till 2007-08. The same however declined significantly in Oct., 08 – March, 09 period. The fall in sales during the period 2008-09 is 17% compared to 2007-08 sales. The average monthly sales during Oct 08-March 09 is down by 22.6% compared to the monthly sales during 2007-08.

Comparing the sales volume of domestic industry and the demand in the market, it is noted that demand and the imports of the product were increasing, whereas the sales volume of domestic industry declined. Domestic industry was unable to capture the market and instead of expected gain in the growing market, it lost its market to imports.

39. **Productivity:** There is no evidence that the productivity of production machines have gone down.
40. **Decline in domestic selling Price:** In order to analyze the domestic selling prices, average monthly ex-works price is collected.

Ex works Price/Unit (Rs/Kg)**2- EH**

	April	May	June	July	August	Sept	Oct	Nov	Dec	Jan	Feb	Mar
2007-08	71.69	84.70	83.61	81.13	77.11	79.22	80.92	87.14	82.47	79.90	80.74	82.42
2008-09	73.58	83.11	87.88	91.35	88.73	84.57	80.10	77.09	45.98	46.25	47.83	53.57

NBA

	April	May	June	July	August	Sept	Oct	Nov	Dec	Jan	Feb	Mar
2007-08	68.52	68.24	65.98	64.15	64.39	64.22	65.46	66.41	66.38	64.40	64.19	67.10
2008-09	69.56	77.20	83.17	86.88	83.83	76.82	71.48	61.56	43.35	43.92	46.99	51.70

IBA

	April	May	June	July	August	Sept	Oct	Nov	Dec	Jan	Feb	Mar
2007-08	65.37	69.62	61.11	62.93	64.10	65.16	65.41	52.53	52.59	50.66	51.74	66.76
2008-09	-	-	69.30	66.21	62.62	61.89	62.20	49.87	56.15	55.23	49.24	44.46

It is seen that the selling price of the product increased till Sept 08 but declined thereafter steeply. While the price of the major raw material, Propylene also declined, the decline in the prices of the oxo alcohols was far more than the decline in the prices of propylene. Resultantly, the contribution margins fell very sharply. Since the domestic industry has to follow the import prices for selling the product, it is evident that the low priced imports forced the domestic industry to reduce their prices to such an extent that the domestic industry is now in financial losses.

	Raw materials cost			Contribution margin		
	NBA	IBA	EHA	NBA	IBA	EHA

2005-06	33.12	33.17	37.96	12.18	5.62	8.86
2006-07	36.81	37.92	42.58	25.00	20.49	20.32
2007-08	44.05	44.19	49.84	18.69	11.29	18.22
Apr-Sep 08	76.59	38.43	57.79	0.99	25.16	26.92
Oct-Mar 09	43.42	39.39	54.45	3.16	11.95	5.68
2008-09	55.32	38.78	56.48	2.39	20.30	18.59

41. Market share

Market share of domestic industry in demand/consumption in India was examined. The annual market share analysis as well as market share analysis during 2008-09 is as follows: –

Period	Share of applicants in Domestic demand (%)
2005-06	51
2006-07	51
2007-08	42
2008-09	33

Period	Share of applicants in Domestic demand (%)
April-Sept-08	36
Oct 08-Mar 09	30
2008-09	33

It is noted that share of domestic industry started declining after 2006-07. This trend continued till Sept., 2008. However, the decline was too significant thereafter, when the market share of the domestic industry declined from 36% (Apr.-Sept., 08) and 42% in 2007-08 to 30% (Oct.08-March, 09). This decline in the market share was at a time when the import increased.

42. **Price effect** – In order to determine whether imports of the product under consideration are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the landed price of imports have been compared with the selling price of the domestic industry. It is noted difference between the import price and domestic prices became more profound in the favor of imports making domestic industries less competitive than the imports.

Ex works Price/Unit (Rs/Kg)

2- EH

	April	May	June	July	August	Sept	Oct	Nov	Dec	Jan	Feb	Mar
--	-------	-----	------	------	--------	------	-----	-----	-----	-----	-----	-----

2007-08	71.6 9	84.7 0	83.6 1	81.1 3	77.11	79.2 2	80.9 2	87.1 4	82.4 7	79.9 0	80.7 4	82.4 2
2008-09	73.5 8	83.1 1	87.8 8	91.3 5	88.73	84.5 7	80.1 0	77.0 9	45.9 8	46.2 5	47.8 3	53.5 7

NBA

	April	May	June	July	August	Sept	Oct	Nov	Dec	Jan	Feb	Mar
2007-08	68.5 2	68.2 4	65.9 8	64.1 5	64.39	64.2 2	65.4 6	66.4 1	66.3 8	64.4 0	64.1 9	67.1 0
2008-09	69.5 6	77.2 0	83.1 7	86.8 8	83.83	76.8 2	71.4 8	61.5 6	43.3 5	43.9 2	46.9 9	51.7 0

IBA

	April	May	June	July	August	Sept	Oct	Nov	Dec	Jan	Feb	Mar
2007-08	65.3 7	69.6 2	61.1 1	62.9 3	64.10	65.1 6	65.4 1	52.5 3	52.5 9	50.6 6	51.7 4	66.7 6
2008-09	-	-	69.3 0	66.2 1	62.62	61.8 9	62.2 0	49.8 7	56.1 5	55.2 3	49.2 4	44.4 6

Import CIF Price(Rs./KG)

	NBA	IBA	2EH
2005-06	40.24	44.99	44.85
2006-07	55.32	55.58	75.14
2007-08	59.75	60.86	53.44
Up to Sept	75.10	61.73	86.75
Oct to March	53.07	38.58	50.88
2008-09	63.81	47.22	58.72

43. Profitability in domestic sales

Profits of the domestic industry on domestic sales of the product were examined. The annual profits as well as profits during the period 2008-09 are as follows;

Period	Profit before tax on total domestic sales	Profit/ (Loss) per MT on domestic sales	Selling price of the domestic industry	Cost of production of the domestic industry
2005-06	986.99	0.93	45.51	44.58

2006-07	6002.47	12.81	62.13	49.32
2007-08	5852.51	12.95	65.57	52.62
2008-09	2802.35	7.02	68.76	61.74

<u>Period</u>	Profit before tax on total domestic sales	Profit/ (Loss) per MT on domestic sales	Selling price of the domestic industry	Cost of production of the domestic industry
April-Sept-08	2792.78	13.75	81.64	67.89
Oct-Mar 09	9.57	(0.69)	54.02	54.71
2008-09	2802.35	7.02	68.76	61.74

It is noted that profitability of the domestic industry has very steeply deteriorated. So significant has been decline in profits of the domestic industry that whereas the domestic industry was earning a profit of Rs.13.75 per MT during April-Sept-08 period, it suffered losses amounting to Rs.0.69 per MT during Oct 08-March, 2009. It is noted that the cost of production of the domestic industry also declined steeply. However, so steep was the decline in prices that the domestic industry ended up with significant financial losses.

44. Return on Investment

Return on investment followed the same trend as of profitability as can be seen from the table below. Return on investments has come down to 0.17% in Oct 08- Mar 09.

Period	ROI(%)	Indexed
2005-06	8.21	100
2006-07	37.61	458
2007-08	36.65	446
2008-09	24.55	299

Period	ROI(%)	Indexed
April-Sept-08	35.12	428
Oct 08-Mar 09	0.17	2
2008-09	24.55	299

45. **Loss of Employment:** There was no loss of employment in the domestic industry, as the procedure to lay off employees as per the labor laws of the Country is time consuming. However, the shut downs and lower production has caused indirect unemployment.

Causal Link between Increased Imports and Threat of Serious Injury:

46. A comprehensive evaluation of parameters as above for the period from 2005-06 up to March 2009 demonstrates that serious injury and imminent threat of serious injury is being caused by increased imports. The causal link is established by the following

- (a) The imports of the said products have increased significantly. During the period when imports increased, the economic parameters indicating injury viz. sales, production, capacity utilization, pressure on prices, market share have shown decline.
- (b) In this respect, the findings of Appellate Body in the Argentina foot ware case is referred of WTO

"We note that Article 4.2(a) requires the competent authorities to evaluate "the rate and amount of the increase in imports", "the share of the domestic market taken by increased imports", as well as the "changes" in the level of factors such as sales, production, productivity, capacity utilization, and others. We see no reason to disagree with the Panel's interpretation that the words "rate and amount" and "changes" in Article 4.2(a) mean that "the trends -- in both the injury factors and the imports -- matter as much as their absolute levels." We also agree with the Panel that, in an analysis of causation, "it is the relationship between the movements in imports (volume and market share) and the movements in injury factors that must be central to a causation analysis and determination." (emphasis added) Furthermore, with respect to a "coincidence" between an increase in imports and a decline in the relevant injury factors, we note that the Panel simply said that this should "normally" occur if causation is present.] The Panel qualified this statement, however, in the following sentence:

While such a coincidence by itself cannot prove causation (because, inter alia, Article 3 requires an explanation – i.e., "findings and reasoned conclusions"), its absence would create serious doubts as to the existence of a causal link, and would require a very compelling analysis of why causation still is present. Consequently, whereas the market share of the imports has increased, that of domestic industry has declined. Decline in the market share of the domestic industry is because of increased imports. While the decline in the market share upto Sept., 2008 is because of demand in the Country being much higher than domestic supplies; the decline in the market share in subsequent period is clearly because of surge in low priced imports at a time when the domestic industry was faced with unutilized capacities"

- (c) **Demand in Indian Market:** The table below gives the size of domestic market during last three years;

Year	Imports volume (MT)	Sales by Indian Industry (MT)	Total Market (MT)
a	b	c	d = b+c
2005-06	41,061	42437	83498

2006-07	41,097	42808	83905
2007-08	58,981	42926	101907
2008-09	72,397	35609	108006

Market Size during 2008-09

Year	Imports volume (MT)	Sales by Indian Industry (MT)	Total Market (MT)
a	b	c	d = b+c
April-Sept-08	34,019	19001	53020
Oct 08 - March 09	38,378	16607	54985
2008-09	72,397	35609	108006

From the table it is evident that the market size of India grew by 6099 MT during 2008-09, but the sales fell by 7317 MT. The increased imports not only taken the domestic industries market of 7317 MT but also prevented him to take its share in the growing market.

- (d) **Increased imports vis-à-vis loss of sales:** The domestic industry had a loss of 7317 MT of sales during the year 2008-09 and the import grew by 13416 MT during the same period proving direct correlation between the two.
- (e) **Delta vis-à-vis loss of sales and profitability:** The 'Delta' analysis done above shows that the sales fell when the delta also fell. The import prices were also falling during the same period. The substantial decline in profitability during the period during 2008-09 on account of loss of sales, falling production happened during the same period when import was increasing. Had the import been at the previous year level and at the previous year's 'Delta', the situation would have been different.
- (f) It has been argued that domestic industry cannot meet the demand and the imports are inevitable. From the figures shown above, the imports were catering to less than 50% of demand and remaining were catered by the domestic industry. During the year 2008-09 when the market size increased, the imports increased at such prices that it took away the domestic industries share. The domestic industries responded with price cuts to meet the international prices at the cost of profitability, but it is not possible to sustain the price cuts at the level of 'Delta' which makes the operation unviable. Further, such imports at such low prices also make the expansion plan, already underway, unviable.
- (g) **Closure of Units:** On verification of information on closure, it was found that the plant has been shut down between 8.4.2007 to 17.4.2007 and 29.4.2008 to

9.5.2008 for annual maintenance. The shut down during 9.11.2008 to 7.12.2008 has been on account of steep fall in prices making the operation unviable.

- (h) **Other factors:** For the purpose of analysis the figures related to domestic market has been taken and thus export, if any, have no bearing on the analysis. There have been no reported labor or management problems. Thus, no other factors are present which can have significant bearings on the serious injury or threat of serious injury caused to the domestic industry.

It is thus concluded that the increased imports of the said product are causing and threatening to cause serious injury to the domestic industry. The serious injury and threat of serious injury is attributable to increased imports.

47. **Adjustment plan:** The applicant is undertaking capacity expansion by increasing the capacity to about 72000 MT. The expansion is likely to be completed by June, 2010. Details of the expansion were called, including technical & commercial feasibility. It was found that the company has already incurred substantial expenditure towards this expansion plan. It is also found that the company has drawn technical & commercial feasibility of the expansion and the same has been approved by the financial institutions as well, who have agreed to invest significant amount. It is noted that the adjustment plan given by the company is reasonable and feasible. The applicant has also undertaken to take cost cutting exercise. Further, the applicant has also undertaken to submit half yearly action taken report with regards to their adjustment plans. The adjustment plans have been taken into account for gradual liberalization of duty.

Public Interest:

48. Some of the parties have argued that imposition of safeguard duty would severely prejudice the public interest as a number of end user industries may close down. It has been argued that the imposition of safeguard duty on Oxo Alcohols would make it costlier and this would be against consumer interest. However, no evidence to this effect has been presented which could show the adverse effect of safeguard duty. Further, it is observed that the expression 'public interest' does not cover consumer interest alone in its ambit. The expression 'public interest' is a wider term, which covers in its ambit the general social welfare taking into account the larger community interest. Safeguard duty, being an indirect tax may affect various economic operators differently as there exist conflicting interests of different economic operators in market economy.
49. An analysis of prevailing prices in India, international prices, raw material prices and cost of sale by domestic industries during the period January 2009-March 2009 has been considered. Further, the total production capacity by Indian industries and demand in India has also been analyzed. The domestic industry covers around half of the present demand and can meet the entire demand after expansion is complete. It is in the

public interest that there exist sustained competition between Indian production and imports so that India end users can have the product at competitive prices.

50. In the instant case, the raw material cost constitutes significant part of cost and the raw material prices are changing depending on international pricing. The 'Delta' in the instant case has fallen below the level which can be sustained. Further, the safeguard duty recommended has been only to the extent to neutralize the injurious impact and thus the competition from import remains alive. Further, the recommended duty has been kept to a level favorable to imports so that the prices of Oxo alcohols are kept competitive in India.
51. Moreover, if the injury to the domestic industry continued, it may lead to the closure of the domestic industry. As a result of which, 'Oxo Alcohol' an important chemical would not be manufactured in India and thereby making the users of the 'Oxo Alcohol' wholly dependent on the imports.
52. In view of the foregoing, it is held that the imposition of safeguard will be in public interest and especially the interests of end users are well protected.
53. **Developing Nations:** The percentages of imports from developing nations have been examined. Except Brazil, Indonesia, Iran, Malaysia, Saudi Arabia and South Africa who constitute 4%, 7%, 7%, 8%, 7% and 13% respectively of total imports in India, other developing nations individually have less than 3% of total imports in India. Therefore, the import of product under consideration originating from developing nations except Brazil, Indonesia, Iran, Malaysia, Saudi Arabia and South Africa may not attract Safeguard Duty in terms of proviso to Section 8B of the Customs Tariff Act, 1975.

Conclusion and Recommendation:

54. In view of the findings above, it is concluded that increased imports of Oxo Alcohol into India have caused and threatened to cause serious injury to the domestic producers of Oxo Alcohol and it will be in the public interest to impose safeguard duty for a period of 3 years on imports of Oxo Alcohol into India. In arriving at the amount of safeguard duty that would be adequate to prevent serious injury to the domestic industry and to facilitate positive adjustment, Cost to sell, reasonable return on capital employed, import prices and need to allow imports to maintain competition in domestic market has been considered.
55. Considering that the domestic industry need three years to readjust, it is recommended that safeguard duty be imposed on imports of Oxo Alcohol into India for a period of 3 (Three) years at the rates specified below, being the minimum necessary for the protection of the domestic industry from the serious injury caused and threatened to be caused by the increased imports of Oxo Alcohol.

Year	Safeguard duty recommended
------	----------------------------

1 st Year	10% ad-valorem
2 nd Year	7.5% ad-valorem
3 rd Year	5% ad-valorem

56. As the imports from developing nations except Brazil, Indonesia, Iran, Malaysia, Saudi Arabia and South Africa do not exceed 3% individually, the import of product under consideration originating from developing nations except Brazil, Indonesia, Iran, Malaysia, Saudi Arabia and South Africa may not attract Safeguard Duty in terms of proviso to Section 8B of the Customs Tariff Act, 1975.

[F. No. D-22011/38/2008]

S. S. RANA, Director General (Safeguards)